मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु

गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु

गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा

संकलन ओ संपादन

गजेन्द्र ठाकुर

आशीष अनचिन्हार

श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

Maithili Ghazal:Aagman o Prasthan Bindu: A Collection of Crticism papers on Maithili Ghazal: Edited by GajendraThakur and Ashish Anchinhar Anthology and first published in 2014 by M/s Shruti Publications, India

Price: Rs.200/-

सर्वाधिकार © Shruti Publication

पहिल संस्करण : 2014

Every effort has been made to trace or contact all copyright holders. The publishers will be pleased to make good any omissions or rectify any mistakes brought to their attention at the earliest opportunity.

All rights reserved. This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above; no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means- photographic, electronic, mechanical, photocopying, recording, taping, information storage- or otherwise, without the prior written permission of both the copyright owner and the aforementioned publisher of this book or as expressly permitted by law.

श्रुति प्रकाशन :रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 957245.4.5, 9931654742

Maithili Ghazal:Aagman o Prasthan Bindu: A Collection of Crticism papers on Maithili Ghazal: Edited by GajendraThakur and Ashish Anchinhar

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु

गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा

संकलन ओ संपादन

गजेन्द्र ठाकुर

आशीष अनचिन्हार

ई पोथी मैथिलीक पहिल एहन आलोचना-समालोचना-समीक्षाक पोथी अछि जैमे शुद्ध रूपसँ सभ किछु गजलपर केन्द्रित अछि। चूँकि ई गजल आलोचनापर पहिल पोथी अछि तँए ऐमे बहुत रास गलती भेल हेतै। पाठक ओ आन आलोचक सभसँ आग्रह जे ओकरा देखाबथि आ जैसँ आगू हम सभ एकरा सुधारि सकी।

ई पोथी विदेहक 15 नवम्बर 2013कँ विदेहक 142म अंक " गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा " विशेषांकक संशोधित रूप अछि।

ऐ पोथीकँ पढ़ैत काल मोन राखू---

1) कोनो गजलक आलोचना वा समालोचना वा समीक्षा कर' कालमे सभसँ पहिने गजलक भाषा देखू। भाषा मने कहीँ एहन तँ नै छै की कोनो गजलकार स्वतंत्रता केर नामपर गजलमे हिन्दी भाषाक प्रयोग केने छथि। ऐठाम ई धेआन देबाक गप्प थिक जे जँ अपन भाषामे कोनो शब्द नै हो तँ ओकरा लेल जा सकैए।

2) भाषा देखलाक बाद व्याकरणपर आउ। व्याकरण मने रदीफ, काफिया आ बहर।

3) व्याकरण देखलाक बाद समान्य गजल दोष आ गजल विशेषताकँ देखू।

4) गजल दोष आ गजल विशेषताकँ देखला बाद भावनाकँ देखू। ऐठाम हम ई मोन पाड़ए चाहब जे काव्य मात्र कागजपर लीखल शब्द नै हेबाक चाही बल्कि अपन जीवनक कर्मसँ अनुप्राणित हेबाक चाही। मने जँ केओ दलितकँ सतबै छथि मुदा ओ अपन गजलमे दलितकँ पूजा करै छथि तँ हमरा हिसाबँ ई दूषित भावना भेल।

5) जँ कथित रचनामे बहर काफिया रदीफ नै छै तँ ओ गजल नै भेल मुदा ओ रचना पद्य तँ छै तँए ओ रचना पद्यमे रूपमे केहन छै तकरो विवेचना करू। ऐठाम हम ई जरूर कहए चाहब जे जँ कोनो काव्यमे भावना नै छै खाली व्याकरण छै तँ ओकरा शब्द विलास मानल जाए, कोनो दिक्कत नै मुदा जँ कोनो काव्यमे व्याकरण छै मुदा दूषित भावना छै तँ ओकरा अपराध मानल जाए। संगे-संग हम ईहो कहए चाहब जे जाहि काव्यमे ने व्याकरण छै आ भावना सेहो दूषित छै ओकरा महा अपराध मानल जाए।

6) पहिल जे ऐ पोथीकमे बहुत रास एहनो आलेख सभ अछि जे की विदेहक आन-आन अंक ओ अनचिन्हार आखरपर प्रकाशित भ' चुकल अछि। मुदा हम एकरा ऐठाँ मात्र ऐ उद्येश्यसँ देलहु जे पाठक लग एकै संगे एहन सूचना भेटै जे की गजलक समान्य गप्प बुझबा लेल आन ठाम नै बौआए पड़ै। जँ मात्र नवे आलेख हम दितिऐ तँ बहुत संभव जे बहुत रास जानकारी ऐ विशेषांक नै आबि

सकैत। मुदा आब हमर ई विश्वास अछि जे गजलपरहँक प्रायः-प्रायः सभ जानकारी एक संगे पाठककेँ भेटतन्हि ऐ प्रयासमे हमरा लोकनि कते सफल छी से मात्र पाठक कहि सकै छथि।

7) ऐ पोथीकेँ पढ़ैत काल बहुत बेर पाठककेँ ई लगतन्हि जे बहुत रास तथ्य दोहराओल गेल छै। पाठककेँ ईहो लगतन्हि जे सभ आलोचक मात्र एकै पक्ष वा तथ्यकेँ बारेमे घोंघाउज कए रहल छथि। ऐ संदर्भमे हमर अनुभव अछि जे ई मात्र ऐ दुआरे भ' रहल छै कारण गजल विषयपर पहिल बेर एते मात्रामे आलोचना-समीक्षा-समालोचना एकै ठाम प्रस्तुत कएल गेल छै तँ ऐ तरहँक दोहराव संभव। ऐ पोथीकेँ पढ़ैत काल अहाँकेँ बहुत रास दुर्गंधयुक्त वस्तुक खुलल पोल देखबामे भेटत। कतौ गुंटबंदीक पोल खुजैत भेटत तँ कतौ इतिहासमे पहिल बनबाक सौखकेँ देखार करैत लेख भेटत। ऐ प्रश्नक उत्तर भेटत जे किएक गजलक परिदृश्यसँ बाबा बैद्यनाथ गाएब रहला। किएक बिना व्याकरणक गजल रहितों ऐ क्षेत्रमे लोक कम्मे आएल। जखन की जै विधाक नियम टूटल हो तैमे बेसी लोक अबै छै (जेना कविता) मुदा ई गजलक संग किएक नै भेल... एहूपर विचार भेटत।

8) किछु नव आलोचक सभकेँ रोयाल्टी लेबाक इच्छा छलनि आ हमरा लोकनि देबामे असमर्थ। अंततः हुनकर सभहँक आलोचनाकेँ हटा क' ऐ समस्याक निवारण केलहुँ।

आलोचक गण---

1) ओम प्रकाश झा

2) अमित मिश्र

3) जगदानंद झा मनु

4) जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल

5) गजेन्द्र ठाकुर

6) मुन्नाजी

7) धीरेन्द्र प्रेमर्षि

8) आशीष अनचिन्हार

ओम प्रकाश झा

1

बहुरूपिया रचनामे

गजलमे हम रूचि राखैत छी। संगहि मैथिली मे थोड बहुत गजल सेहो लिखै छी आ गजलक पोथी सब पढबाक इच्छा रहै ए। मैथिलीमे बहुत कम गजल संग्रह अछि आ ओहो सुलभ नै होइत रहै ए। एहन परिस्थितिमे हमरा श्री अरविन्द ठाकुरजीक सद्यः प्रकाशित मैथिली गजल संग्रह "बहुरूपिया प्रदेशमे" पढबाक अवसर भेंटल आ हम एहि पोथीकेँ आद्योपान्त पढलहुँ। सबसे पहिने हम श्री अरविन्द ठाकुरजीकेँ मैथिली गजलक पोथी लिखबाक लेल बधाई दैत छियैन्हि। मैथिली गजलक उत्थान लेल प्रत्येक डेग हमरा महत्वपूर्ण लागै ए। पोथीक गेट अप बड्ड सुन्नर अछि। टाईप आ कागतक कोटि सेहो उत्तम अछि। पोथीक भूमिका गजलकार अपने लिखने छथि आ ओहि मे गजल आ एहि संग्रहक सम्बन्ध मे बहुत रास गप सब कहने छथि। जेना पृष्ठ संख्या सातक दोसर पारा मे गजलकार कहैत छथि जे "मैथिलीक मिजाजक सीमा (इ मैथिलीक नहि, हमर अपन सीमा भऽ सकैत अछि) केँ देखैत गजलक व्याकरण (रदीफ, काफिया, मिसरा, मतला, मकता आदि)क स्थापित मापदंडक कसबट्टी पर हमर सभ गजल खरा उतरत तकर दाबी तऽ नहिए टा अछि बल्कि हम तँ इ सकारय चाहै छी जे---------- हमर सीमाक कारणेँ प्रस्तुत गजल मे कएक जगह सुधि पाठक लोकनि केँ त्रुटि भेटि सकैत छनि।" एहि पाराक अन्त मे ओ कहै छथि जे बहरक दोख किछु शेर मे भेटि सकैत अछि। हम गजलकारक सराहना करैत छी जे ओ भूमिका मे अपने कएक ठाम बहरक आ आन दोख हएब स्वीकार कएने छथि। पोथी केँ आद्योपान्त पढला पर हमरा इ नै बुझाएल जे एहि संग्रहक गजल सब कोन-कोन बहर मे लिखल गेल अछि। अरबीक कोनो टा बहर मे कोनो गजल नहिए अछि, मैथिली मे आइ-काल्हि प्रयुक्त होइ बला सरल वार्णिक बहर मे सेहो कोनो गजल नै अछि। गजलकार केँ प्रत्येक गजल मे इ लिखबाक चाही छल जे कोन बहर मे गजल लिखल गेल अछि। जँ इ "आजाद-गजल"क संग्रह थीक, तँ हुनका एहि बातक उल्लेख करबाक चाही छल। भूमिकाक उपरोक्त पाराक शुरू मे गजलकार कहै छथि जे मैथिलीक मिजाज केँ देखैत एहि मे उर्दू-हिन्दी गजलक मिजाजक नकल करबाक प्रयास कएल जाइत तँ एकरा बुधियारी नहिए टा कहल जायत आओर सफलता सेहो नहि भेंटत। हम हुनकर गप सँ सहमत छी जे नकल करब उचित नहि। मुदा एकटा गप हम कहऽ चाहैत छी जे प्रत्येक विधाक एकटा नियम होइत छै आओर जाहि क्षेत्र मे ओहि विधाक उदय भेल रहैत छै ओहि क्षेत्र मे स्थापित भेल नियमक पालन केने बिना कोनो रचना मूल विधा मे कोना भऽ सकैत अछि। जेना मैथिली मे समदाउन आ सोहरक परम्परा छैक आ जँ पंजाबी मे वा गुजराती मे वा की कोनो आन भाषा मे समदाउन आ सोहर गाबऽ चाही तँ नियम कोना बदलि जेतैक। जँ नियम बदलतै तँ ओ दोसर चीज भऽ जेतैक। तहिना गजल अरब क्षेत्र मे जन्म लेलक आ इ स्वाभाविक छै जे एकर नियम (व्याकरण) ओहि क्षेत्रक स्थापित मानदण्डक आधार पर बनल। स्थापित मानदण्डक पालन करब नकल नहि कहल जा सकैत अछि। आ जे नकलक

गप करी तँ 'गजल' कहब अरबी-हिन्दीक नकल थीक। एक दिस गजलकार 'गजल' कहबाक लोभ नै छोडि रहल छथि आ दोसर दिस गजलक व्याकरणक नियम पालन कँ नकल कहै छथि, इ उचित नै बुझाएल। गजल स्थापित मानदण्ड पर जँ नै कहल गेल तँ रचना कँ गजलक स्थान पर दोसर नाम देल जा सकैत अछि।

पृष्ठ संख्या दस पर दोसर पारा मे गजलकार कहै छथि जे ओ जीवन सँ सिदहा लैत छथि। इ स्वागत योग्य गप भेल। जीवनक सिदहा सँ तैयार व्यंजन सोअदगर हेबे करतै। मुदा भोजन बनबै काल चाउरक सिदहा पानि मे सोझे फुला कऽ परसि देला सँ भात नहि कहाइत अछि। चाउरक सिदहा कँ अदहन मे देल जाइ छै तखन भात तैयार होइ छै। तहिना जीवनक सिदहा जँ व्याकरण, नियम आ चिन्तन-मननक अदहन मे पकाओल जाइत अछि तँ सोअदगर रचना भेटैत अछि। विधा विशेषक मापदण्ड तोडबाक क्रांतिकारी घोषणा कएला टा सँ किछु विशेष फायदा वा उमेद तँ नहिए जगै ए। जँ कियो मापदण्ड तोडै छथि, तँ मापदण्ड पर चलै बला कँ नकलची आ बाजीगर कहब उचित नहि। गजल आ फकरा आ दोहा मे थोडेक अन्तर तँ छै जे रहबे करतै। अस्तु, इ गजलकारक अपन विचार छैन्हि आ आब प्रकाशित सेहो छैन्हि। गजल संग्रहक सब गजल पढलौं। विषय वस्तु सब नीके लागल। गजलक व्याकरणक आधार पर कहि सकैत छी जे बहरक दोख तँ प्रत्येक गजल मे छैक आ जँ इ आजाद-गजलक संग्रह थीक तँ गजलकार इ गप कतौ नै कहने छथि। गजलकार कँ स्पष्ट करबाक चाही छल जे कोन कोन बहर मे गजल सब लिखल गेल अछि। हमरा बुझने गजलक कोनो शीर्षक नै होइत अछि, मुदा प्रत्येक गजल कँ एकटा शीर्षक देल गेल अछि। बहरक अतिरिक्त रदीफ आ काफियाक नियमक सेहो कएक ठाम पालन नै भेल अछि आ इ गप गजलकार भूमिका मे सेहो स्वीकार कएने छथि। जेना पृष्ठ बाईस मे मतलाक दुनू पाँति, दोसर शेर आ पाँचम शेर मे काफिया मे 'आयब' प्रयोग भेल अछि, तँ दोसर आ चारिम शेर मे 'अब' क प्रयोग अछि। पृष्ठ चौबीस मे मतलाक पहिल पाँति मे काफिया मे 'अ' आयल अछि आ दोसर पाँति आ अन्य शेर मे 'आत' आयल अछि। पृष्ठ पच्चीस मे काफिया की छै, से नै बुझाएल। पृष्ठ तिरपन मे प्रत्येक पाँति मे काफिया एकदम फराक फराक अछि। पृष्ठ अनठाबन मे मतला, दोसर शेर आ चारिम शेर मे काफिया मे 'अल' प्रयुक्त अछि आ आन सब शेर मे काफिया मे 'अ' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ उनसठि मे सेहो रदीफ आ काफियाक स्पष्टता नै अछि। पृष्ठ छियासठि मे काफिया मे कतौ 'अल' आ कतौ 'आओल' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ सडसठि आ तिहत्तरि मे सेहो काफियाक नियमक उल्लंघन भेल अछि। तहिना संयुक्ताक्षर बला काफियाक नियम सेहो एक दू ठाम हमरा हिसाबँ ठीक नै अछि। एकर अतिरिक्त आओर कएक ठाम काफियाक नियमक पालन नै भेल अछि। हम उदाहरण स्वरूप किछु पृष्ठक उल्लेख कएलहुँ। हमर इ उद्देश्य नै अछि जे खाली दोख ताकल जाय, मुदा जँ गजल कहै छियै तँ गजलक नियमक पालन हेबाक चाही। सब गोटे कँ जानकारी लेल इ बता दी की बिना रदीफक गजल तँ भऽ सकैत अछि, मुदा बिना दुरूस्त काफिया भेने गजल नै भऽ सकैत अछि। भूमिका सँ एकटा बात आर स्पष्ट होइ ए जे गजलकार मई 2008 सँ मैथिली मे गजल लिखब शुरू केलथि, ओना ओ हिन्दी मे पहिनहुँ गजल लिखैत छलाह। एकर मतलब इ भेल जे

गजलकार "अनचिन्हार आखर" (मैथिली गजल कें समर्पित ब्लाग) सँ बहुत बाद मे मैथिली गजल लिखब शुरू कएने छथि आ मैथिली गजलक वरीयता मे बहुत बाद मे आयल छथि। "अनचिन्हार आखर" ब्लाग देखला सँ पता चलै छै जे गजलकार एहि ब्लाग पर सेहो अपन कएक टा गजल 2009 सँ एखन धरि देने छथि। ओ "अनचिन्हार आखर" ब्लाग सँ चिन्हार छथि, तैँ इ उमेद अछि जे एहि ब्लाग पर प्रकाशित मैथिली गजलक विस्तृत व्याकरण कें जरूर देखने हेताह। इ उमेद छल जे प्रस्तुत गजल संग्रह मैथिली गजलक नब पीढी लेल एकटा उदाहरण बनत। मुदा एहि संग्रह मे गजलक व्याकरणक जे उपेक्षा भेल अछि, जे गजलकार भूमिका मे स्वयं स्वीकार कएने छथि, निराशा उत्पन्न करैत अछि। मुदा इ संग्रह गजलकारक पहिलुक मैथिली गजल संग्रह अछि, तैँ गजलक व्याकरणक गलती भेनाई स्वभाविक अछि। आशा व्यक्त करै छी जे हुनकर आगामी गजल संग्रह मैथिली गजल मे अपन अलग स्थान राखत।

2

घोघ उठबैत गजल

मैथिली गजलक पहिलुक प्रकाशित पोथी "उठा रहल घोघ तिमिर" पढबाक सौभाग्य भेंटल। ऐ गजल संग्रहक गजलकार श्री विभूति आनन्द छथि। एहि पोथी मे कुल चौंतीस गोट गजल अछि। पूरा पोथी कँ एकहि बैसार मे पढि गेलहुँ आ बेर-बेर पढलहुँ। सबसे पहिने हम श्री विभूति आनन्दजी कँ मैथिली गजलक पहिलुक संग्रह प्रकाशित करबा लेल धन्यवाद दैत छियैन्हि। एहि पोथीक भूमिका मे गजलकार कहै छथि जे "मैथिलीक गजल सोझे-सोझ हिन्दी सँ प्रभावित अछि मुदा हिन्दी जकाँ जमल नञि अछि एखनो धरि।" आगू हुनकर कहनाई छैन्हि- "पारम्परिक व्याकरण सम्बन्धित अगणित त्रुटि सभ ठाम लक्षित होएत। ओना हम दुस्साहसपूर्वक साहस करैत रहलहुँ अछि जे कथ्य-सामंजस्य लए व्याकरण दिस सँ यदि मूँहो घूमा लेल जाए तँ कोनो हर्ज नञि। किए तँ हम मानैत छी जे ई पाठ्यक्रमक वस्तु नञि अछि। विद्यार्थी मूर्ख नञि बनत। तैं की ---------- व्याकरण सँ भयभीत भऽ नञि लिखल जाए।" गजलकारक पहिलुक कथनक सम्बन्ध मे हमर निवेदन अछि जे गजलक परम्परा अरबी-फारसी सँ शुरू भेल अछि आ ओतहि सँ आन भारतीय भाषा मे पसरल अछि। हिन्दी-उर्दू मे गजल कहबाक परम्परा मैथिली सँ पहिने शुरू भेल, तैं बहुसंख्य लोक दिग्भ्रमित भऽ जाइत छथि जे मैथिलीक गजल हिन्दी गजलक नकल छी वा ओइ सँ प्रभावित भेल अछि। गजलकार सेहो एहि मिथ्या धारणा सँ प्रभावित छथि। आब गजलक व्याकरण थोड-बहुत समन्जनक संग सब भाषा मे तँ एक्के रहत। ऐ स्थिति कँ हमरा हिसाबँ "प्रभावित भेनाई" कहबाक कोनो औचित्य नै अछि। गजलकारक दोसर कथन देखि हम निराश भेल छी। पता नै किया एखन धरि जे दुनू गजल संग्रह (सबसँ पहिलुक आ सबसँ अंतिम प्रकाशित) पढलहुँ, एहि दुनू मे गजलकार कथ्य-सामंजस्यक आगू व्याकरण कँ कोनो मोजर नै देबऽ चाहैत छथि। एकटा गप मोन रखबाक चाही जे साहित्यक निर्माण वैयाकरणिक अनुशासनक बादे सफल भेल अछि। इ फराक गप अछि जे समय-काल आ स्थानक हिसाबँ सर्वमान्य परिवर्तन व्याकरण मे होइत रहल छैक। बिना वैयाकरणिक अनुशासनक भाषा पढबा, लिखबा आ बाजबा जोग रहत? जिनका मे साहित्य निर्माणक माद्दा छैन्हि, हुनका मे व्याकरण कँ पालनक साहस अबस्स हेबाक चाही।

आब हम एहि संग्रहक गजलक सम्बन्ध मे किछु गप कहऽ चाहब। इ गजल संग्रह ओहि समय मे लिखल गेल अछि जखन मैथिली गजलक व्याकरण आ बहरक सम्बन्ध मे बहुत बेसी जनतब सार्वजनिक नै छल। हम एकरा एना कहऽ चाहब जे इ गजल संग्रह "अनचिन्हार आखर" जुग सँ पूर्वक गजल अछि जखन बहर, रदीफ आ काफियाक नियमक पालनक विषय मे बहुत रास गप सर्वजन सुलभ नै छल। एहि हिसाबँ जँ ऐ संग्रहक गजल सभ मे बहरक दोख छैक तँ इ स्वभाविक बुझाईत अछि। एहि संग्रहक कोनो टा गजल कोनो बहर मे नै अछि। तैं ऐ संग्रहक वैध गजल (जाहि मे काफियाक नियमक पालन भेल हुए) सभ कँ "आजाद-गजल"क श्रेणी मे राखल जा सकैए। आब गजलक काफिया आ रदीफक सम्बन्ध मे किछु गप। एहि संग्रहक बहुत रास गजल मे काफिया

आ रदीफक नियमक पालन भेल अछि। मुदा कएक गजल मे रदीफ आ काफियाक गलती अछि। जेना पृष्ठ चौदह पर मतला देखला पर बुझाईत अछि जे "इ मौसम" रदीफ अछि आ "लागैए" आओर "उलाबैए" काफियायुक्त शब्द अछि। मुदा दोसर शेर आ आगूक आन शेर मे एकर पालन नै भेल अछि आओर शेर सभ बिना रदीफक "अ" काफियायुक्त अछि। पृष्ठ पन्द्रह पर सेहो यैह दोख अछि, जाहि मे मतला मे रदीफ "कहाँ रहल"क प्रयोग अछि आ आन शेर सभ बिना रदीफक "अल" काफियायुक्त अछि। एहने दोख पृष्ठ सोलह मे देखल जा सकैत अछि, जतय मतला मे "करै छह" रदीफ मानल जयबाक चाही। ओना ऐ गजलक आन शेर सभ मे दू टा काफियाक सुन्नर प्रयोग अछि, जे नीक लागैए। हमरा हिसाबँ काफियाक दोख पृष्ठ बीस, बाईस, चौबीस, पचीस, अट्ठाईस, उनतीस(संयुक्ताक्षर काफियाक नियमक दोख), बत्तीस आ सैंतीस मे सेहो अछि। एकर सबहक विस्तृत वर्णन देब हम अपेक्षित नै बूझि रहल छी, कियाक तँ इ हमर उद्देश्य कथमपि नै अछि। गजल संग्रहक सब गजलक विषय-वस्तु नीक अछि आ गजलकार अपन भावना नीक जकाँ प्रकट केने छथि।

किछु गजलक काफिया आ रदीफक दोख जँ कात कऽ कऽ देखी, तँ इ गजल-संग्रह एकटा नीक गजल-संग्रह अछि। गजलकारक गजल कहबाक क्षमता सेहो नीक बुझाईत अछि। हमरा ई अचरज लागि रहल अछि जे ऐ संग्रहक बाद गजलकारक दोसर गजल-संग्रह किया नै आएल अछि। एकर कारण तँ गजलकारे कँ पता हेतैन्हि, मुदा अपन अनुभवक आधार पर हम कहऽ चाहै छी जे श्री विभूति आनन्द नीक गजल लिख सकैत छथि। जँ बहरक विचार नै करी, तँ 2012 मे आएल श्री अरविन्द ठाकुरजीक गजल-संग्रह सँ करीब एकतीस बर्ख पहिने 1981 मे लिखल गेल एहि संग्रहक गजल सब उम्दा कहल जा सकैत अछि। एकर कारण इ जे एहि संग्रहक गजल सब मे काफियाक नियम-पालनक प्रतिशत वर्तमान समयक संग्रह सब सँ बेसी अछि। कथ्यक मजबूती सेहो नीक कोटिक अछि। खाली कुहरल तुकमिलानी केने गजल नै कहल जा सकैत अछि, इ गप एहि संग्रह कँ पढलाक बाद एखुनका गजलकार सभ कँ सेहो बुझेतन्हि, इ आशा अछि। इहो एकटा अचरजक विषय अछि जे जखन मैथिली मे नीक गजल एतेक साल पहिनो कहल गेल छल, तखन एकर बाद गजलक विकास-यात्रा पचीस-तीस बर्ख धरि कतऽ आ किया ठमकि गेल। बीचक अवधि मे मैथिली गजलक विकासक धार मे बान्ह किया बनि गेल छल, इ विचारणीय गप अछि। ओना आब इ बान्ह टूटि रहल अछि आ आशाक नब जोति मे मैथिली गजलक घोघ उठि रहल अछि।

3

समीक्षा

विदेह ई-पत्रिकाक 1 अप्रैल 2012 केर नब अंक मे प्रकाशित श्री प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल पढलौं। एहि दूनू गजल केँ हम गजलक व्याकरणक आधार पर देखबाक प्रयास कएलौं। हम दूनू गजल पर आ प्रत्येक पाँति पर अपन विचार राखि रहल छी।

गजल 1

हम बात अहीं केर मीत कहब, नहि गजल कहब

बरु कहब मीठ नहि, तीत कहब, नहि गजल कहब

चाङुर अपन पसारि रहल अछि माथापर सम्बन्धक बाज

कोन विधि बाँचत प्रीत कहब, नहि गजल कहब

कतबो माँटि सुँघाएब तैओ नहि मानब हम अप्पन हारि

चारु नाल पछाड़ि अपन हम जीत करब नहि गजल कहब

गगनक मुँहकेँ चूमए कतबो ठाढ़ अहाँ केर शीसमहल

बस कखनहुँ बालुक भीत करब नहि गजल कहब

हाथ पसारब रहत पसरले, मुँहे टेढ़ करब तँ की

कनि दूसि मुँह विपरीत चलब, नहि गजल कहब

पहिल गजलक मतला पढला पर बुझाइए जे रदीफ "कहब, नहि गजल कहब" अछि आ काफिया मे "ईत" प्रयोग भेल अछि। दोसर शेर मे यैह रदीफ आ काफिया लेल गेल अछि। मुदा तेसर आ चारिम शेर मे आबि कऽ रदीफक "कहब"क बदला मे "करब" उपयोग कएल गेल अछि। पाँचम शेर मे एकरा बदलि कऽ "चलब" कऽ देल गेल अछि। ऐ सँ इ बुझा लगैए जे रदीफ "नहि गजल कहब"

अछि आ दू टा काफिया "ईत" युक्त शब्द आ "अब" युक्त शब्द अछि। जँ गजलकार यैह रदीफ आ काफिया मानि कऽ चलल छथि तँ हुनका प्रत्येक शेर मे एकरे प्रयोग करबाक चाही। तखन रदीफ आ काफियाक दोख नै रहितै। रदीफक नियमक मोताबिक प्रत्येक गजलक एकेटा रदीफ होइत अछि आ एकर पालन ओहि गजलक प्रत्येक शेर मे होयबाक चाही। तहिना काफियाक नियमक मोताबिक प्रत्येक शेर मे काफिया एके हेबाक चाही। आब कनी बहर पर चर्च करी। ई गजल सरल वार्णिक बहर वा वार्णिक बहर पर नै लिखल गेल अछि। अरबी बहर मे अछि की नै ई जनबा लेल हम सब एक एक टा पाँतिक विश्लेषण करी। जँ ह्रस्व कँ 1 आ दीर्घ कँ 2 मानी तँ पहिल शेर मे देखल जाओः-

हम बात अहीं केर मीत कहब, नहि गजल कहब

11 21 12 21 21 111 11 111 111

आब दोसर पाँति

बरु कहब मीठ नहि, तीत कहब, नहि गजल कहब

12 111 21 11 21 111 11 111 111

ऊपर दूनू पाँति मे देखि सकै छी जे ह्रस्वक नीचा ह्रस्व आ दीर्घक नीचा दीर्घ नै आएल अछि आ तैं इ शेर कोनो बहर मे नै अछि। जखन मतले कोन बहर मे नै अछि, तखन आन शेर सब पर विचार करबाक कोनो प्रयोजन नै अछि। निष्कर्ष यैह जे गजल कोनो बहर मे नै अछि। आन शेरक विश्लेषण पाठक अपने ऐ आधार पर कऽ सकैत छथि।

आब दोसर गजल देखल जाओः-

गजलक बहन्ने हम आंगन- घर- दुआरि लिखब

बाध-बन- कलमबाग-बेख बसबारि लिखब

साँढ़ छैक छुट्टा आ पाड़ा मरखाह कतैक

बाँचल फसिलकेर सुरजाक रखबारि लिखब

थानामे नाङट भेलि रमियाक हाकरोस-

सुननिहार केओ नहि तकरे पुछारि लिखब

बारल खेलौनासँ, पोथीसँ दूर कएल

जिनगीक बोझ उघैत नेनाक भोकारि लिखब

नाचि रहल लोक आइ असली नचनिआ सभ

नचा रहल परदासँ केओ परतारि लिखब

फाटल अकास छै सीअत के-कते कोना

लिखब जे ‘‘पंकज’’ बेर-बेर विचारि लिखब

एहि गजल मे काफिया "आरि" युक्त अछि आ रदीफ "लिखब" अछि। ऐ हिसाबेँ रदीफ आ काफिया ठीक अछि। सरल वार्णिक बाहर वा वार्णिक बहर वा अरबी बहर मे इहो गजल नै अछि। ह्रस्व केँ 1 आ दीर्घ केँ 2 मानि कऽ मतला केँ देखल जाओः-

गजलक बहन्ने हम आंगन- घर- दुआरि लिखब

1111 122 11 211 11 121 111

बाध-बन- कलमबाग-बेख बसबारि लिखब

21 11 11121 21 1121 111

इहो गजलक मतला मे ह्रस्वक नीचा ह्रस्व आ दीर्घक नीचा दीर्घ नै आएल अछि आ इ कोनो बहर मे नै अछि। इहो गजल मे जखन मतले बहर मे नै अछि तखन आन शेर सब पर विचार करबाक कोनो प्रयोजन नै अछि। एहि आधार पर इ निष्कर्ष निकलैए जे इहो गजल कोनो बहर मे नै अछि। एहि तरहेँ देखल जा सकैए जे दूनू गजलक बहर दुरूस्त नै छै। ऐठाँ ई बता दी की संयुक्ताक्षर सँ पूर्वक वर्ण दीर्घ मानल जाइए आ अनुस्वार बला वर्ण सेहो दीर्घ मानल जाइए।

गजलक विषयवस्तु नीक अछि। दोसर गजल "आजाद गजलक"क श्रेणी मे अछि आ पहिलुक गजल काफिया दोखक कारण गजल नै अछि। सादर।

मैथिली बाल गजलक अवधारणा

जेना कि नाम सँ स्पष्ट अछि, बाल गजल माने भेल नेना-भुटकाक लेल गजल। बाल गजलक अवधारणा मैथिली मे एकदम नब अछि आ पहिल बेर 24 मार्च 2012 केँ श्री आशीष अनचिन्हार ऐ अवधारणा केँ सामने आनलथि। बहुत अल्प समय मे बाल गजल बहुत प्रसिद्धि पओलक आ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभक एकटा विशाल पाँति ठाढ भऽ गेल। ऐ मे सर्वश्री गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार जकाँ स्थापित गजलकार तँ छथि, एकर अलावे नब गजलकार सब सेहो बाल गजल कहबा मे विशेष अभिरूचि देखौलन्हि। बाल गजल कहनिहार नब गजलकार सभ मे सर्वश्री मिहिर झा, मुन्ना जी, इरा मल्लिक, अमित मिश्रा, चन्दन झा, पंकज चौधरी 'नवलश्री', राजीव रंजन झा, जगदानंद झा 'मनु', रूबी झा, प्रशांत मैथिल आदि अनेको गजलकार छथि। "अनचिन्हार आखर", जे मैथिली गजलक एकमात्र ब्लाग अछि, देखला पर पता लागैत अछि जे बाल गजलक अवधारणा अयलाक बाद सँ एखन धरि(ई आलेख लिखबा तक) 73(तिहत्तरि) टा बाल गजल ऐ ब्लाग पर पोस्ट भऽ चुकल अछि, जे अपने आप मे एकटा कीर्तिमान अछि। खास कऽ एतेक कम समय मे एतेक पोस्ट आएब बाल गजलक लोकप्रियताक खिस्सा कहि रहल अछि। बाल गजलक विधा एकटा स्वतन्त्र विधा बनबाक बाट मे अग्रसर अछि, जे एतेक कम समय मे एतेक संख्या मे बाल गजल कहनिहार गजलकार आ बाल गजलक संख्या सँ स्पष्ट अछि। संगहि किछु लोक केँ मिरचाई सेहो लागब शुरू अछि आ ओ लोकनि बाल गजलक सम्पूर्ण अवधारणा केँ नकारबाक कुत्सित असफल प्रयास मे जत्र कुत्र अंट शंट पोस्ट देबऽ लागलाह। ई गप आर स्पष्ट करैत अछि जे बाल गजलक विधा मजबूती सँ स्थापित भऽ रहल अछि। कियाक तँ सफल व्यक्ति आ विधा सभक आकर्षणक केन्द्र बनैत अछि आ बाल गजल सेहो सभक आकर्षणक केन्द्र बनि चुकल अछि, चाहे ओ गजलकार होईथि, पाठक होईथि, आलोचक होईथि वा जरनिहार लोक सभ होईथि। जखन मैथिली गजलक चर्च भऽ रहल अछि, तखन श्री आशीष अनचिन्हारक चर्चा स्वभाविक अछि। मैथिली गजलक विकास मे हुनकर योगदान हुनकर धुर विरोधी लोकनि सेहो मानैत छथिन्ह। मैथिली बाल गजलक अवधारणा लेल श्री आशीष अनचिन्हार मैथिली साहित्य मे अपन अनुपम स्थान बना चुकल छथि। बाल गजलक अवधारणा सेहो हुनके छैन्हि, जे बहुत सफल भेल अछि।

आब किछु गप करी मैथिली बाल गजलक रचना सभक संबंध मे। हमरा विचार सँ बाल गजल नेना भुटकाक लेल रूचिगर तँ हेबाके चाही, संगहि ऐ मे कोनो स्पष्ट सामाजिक सनेस होइ तँ ई सोन मे सोहाग जकाँ हएत। ओना तँ सभ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभ ऐ मे सक्षम छथि आ नीक सँ नीक बाल गजल लिख रहल छथि, मुदा ऐ सन्दर्भ मे हम श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक बाल गजलक उल्लेख करब उचित बूझि रहल छी। हुनकर एकटा बाल गजलक मतला अछिः-

कनियाँ पुतरा छोडू आनू बार्बी

जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

ऐ गजल केँ पूरा पढि कऽ कने देखियौ। ई गजल कनिया पुतराक उल्लेख करैत नेना-भुटकाक मनोरंजन तँ करिते अछि, संगहि अजुका बाजारवादक बलिवेदी पर कुर्बान भेल मनुक्खक मार्मिक विवेचना सेहो करैत अछि। एहन आरो कतेको बाल गजल सभ "अनचिन्हार आखर" पर भेंटैत अछि, जकरा ऐ ब्लाग पर पढल जा सकैत अछि। ई गजलकार सभक सामाजिक संवेदना केँ प्रकट करैत अछि आ हम ऐ लेल सभ गजलकार केँ साधुवाद दैत छियैन्हि। हम एहने बाल गजलक आस गजलकार सभ सँ लगओने छी। कियाक तँ गजलकारक सामाजिक दायित्व सेहो छै, जे पूरा हेबाक चाही। आधुनिक मैथिली गजलकार सब मे ई क्षमता अछि आ ओ दिन दूर नै अछि जखन एक सँ एक सुन्नर आ बालोपयोगीक संगे सामाजिक समस्या पर बाल गजलक भरमार हएत। व्याकरणक हिसाबेँ मैथिली बाल गजल नीक बाट धएने अछि। अनचिन्हार आखरक टीमक परिश्रमक कारणेँ मैथिली मे बहरयुक्त गजलक काल शुरू भऽ चुकल अछि आ सरल वार्णिक बहर(जकर अवधारणा श्री गजेन्द्र ठाकुरजी देलखिन्ह) केर अलावे आब अरबी बहर मे गजल कहनिहार गजलकारक कमी नै छै। बाल गजल अपन शुरूआते सँ बहरयुक्त अछि, जे बाल गजलक लेल शुभ संकेत अछि। शुरूआतिए समय मे जे आ जतबा बाल गजल लिखल गेल अछि, ओ सभ बहर मे अछि, चाहे सरल वार्णिक बहर होइ वा अरबी बहर। बहरक अलावे रदीफ आ काफियाक नियमक पालन सेहो पूरा पूरा भऽ रहल अछि। व्याकरण पालनक ई प्रतिबद्धता निश्चित रूपे बाल गजलक सफलताक गाथा लिखबा मे सहायक हएत।

मैथिली गजलक बढैत डेग संग आब मैथिली बाल गजलक डेग सेहो उठि गेल अछि। मैथिली बाल गजल जाहि द्रुत गति सँ अपन डेग उठओलक अछि, ऐ सँ तँ यैह लागैत अछि जे अगिला साल आबैत आबैत मैथिली बाल गजलक पोथी प्रकाशित भऽ सकैत अछि। संगहि इसकूलक पाठ्यक्रम मे बाल गजल सम्मिलित हेबाक संभावना सेहो साकार रूप लऽ सकत। पाठ्यक्रम मे सम्मिलित हेबाक बाद मैथिली बाल गजल सभ पढनिहार-पढौनिहारक संज्ञान मे नीक जकाँ आओत आ सामाजिक विकासक संरचना मे अपन महत्वपूर्ण योगदान, जे अपेक्षित अछि, सेहो दऽ सकत।

5

भोथ हथियार

श्री सुरेन्द्र नाथक कहल मैथिली गजलक संग्रह अछि "गजल हमर हथियार थिक"। ऐ पोथी मे हुनकर अडसठि टा गजल प्रकाशित भेल अछि। ई संग्रह 2008 मे आएल अछि जकर आमुख श्री अजीत आजाद जी लिखने छथि। ऐ पोथी केँ आदि सँ अन्त धरि पढबाक बाद हमर यैह अभिमत अछि जे गजलक व्याकरणक दृष्टिसँ ऐ संग्रह मे अनेको कमी अछि, जाहि सँ बचल जा सकैत छल। पृष्ठ संख्या 13, 67 आ 70 परहक गजल मे चारिये टा शेर छै, जखन की कोनो गजल मे कम सँ कम पाँच टा शेर हेबाक चाही। संग्रहक कोनो गजल बहर मे नै अछि। हमर ई स्पष्ट मनतब अछि जे गजलकार केँ प्रत्येक गजल मे बहरक उल्लेख करबाक चाही आ जँ आजाद गजल कहने छथि तँ इहो स्पष्ट रूपेँ लिखबाक चाही। ऐ पोथी मे काफियाक गलती भरमार अछि। कतौ कतौ तँ ई बूझना जाइ छै जे गजलकार बिना काफिया आ रदीफक मतलब बूझने गजल कहबा लेल बैस गेल छथि। एकर उदाहरण पृष्ठ 15 परहक गजल पढबा पर भेंट जाइ छै। ई तँ हम एकटा उदाहरण कहि रहल छी। आरो गजल ऐ दोख सँ प्रभावित छै, जतय काफियाक नियमक धज्जी उडा देल गेल अछि। जेना पृष्ठ 18, 19, 20, 21, 27, 29, 31, 34, 35, 36, 39, 40, 41, 43, 44, 45, 46, 47, 52, 53, 56, 57, 58, 66, 67, 68,70, 71, 72, 74, 75,77, 79 आदिमे काफिया तकलासँ नै भेंटैत अछि आ ऐ खोजमे मोन अकच्छ भऽ जाइत छै। ओना आनो पृष्ठ काफिया दोखसँ ग्रसित अछि, मुदा ई उदाहरण हम ओइ पृष्ठ सभक देने छी, जतय काफियाक झलकियो तक नै भेंटै छै। मैथिली गजल आइ जाहि सोपान पर चढि चुकल अछि, ओइ हिसाबेँ ऐ तरहक रचना गजलक नामसँ स्वीकृत होइ बला नै अछि। कियाक तँ बिना दुरूस्त काफियाक गजल नै भऽ सकैत अछि। ई संग्रह "अनचिन्हार आखर" युगक शुरूआत भेलाक बाद लिखल गेल अछि, तेँ हमरा ई आस छल जे गजलकार कमसँ कम काफिया आ रदीफक नियमक पालन ठीकसँ केने हेताह, कियाक तँ "अनचिन्हार आखर" जुग मे आब गजलक व्याकरणक सभ नियम चिन्हार भऽ चुकल अछि। मुदा गजलकार काफिया आ रदीफक नियम पालन करबामे पूरा असफल रहलथि। ओना ऐ संग्रहक काफिया दोखकेँ पोथीक आमुख लेखक श्री अजीत आजाद पोथीक आमुखमे दाबल आवाजमे स्वीकार करैत कहै छथि जे कतेको ठाम काफिया "गडबडायल सन" बुझना जाइत अछि। ओना ई अलग गप थिक जे काफिया "गडबडायल सन" नै अपितु पूरा पूरी गडबडायल अछि। फेर श्री आजाद ऐ गलतीकेँ झाँपबा लेल इहो कहैत छथि जे "रचनाकारकेँ अपन सीमासँ बाहर आबि शब्द-व्यापार करबाक चाही"। मुदा गजलक अपन व्याकरण छै, जकर पालन केने बिना रचना गजल नै भऽ कऽ पद्य मात्र रहि जाइत छै। गजल आ कविताक बीचक अंतर जे अंतर छै, से ऐ तरहक तर्कसँ समाप्त नै भऽ जाइ छै। काफिया, रदीफ आ गजलक व्याकरणक अनुपालन नै हेबाक कारणेँ श्री सुरेन्द्र नाथक ई संग्रह गजल संग्रह नै भऽ कऽ एकटा पद्यक संग्रह भऽ कऽ रहि गेल अछि। संवेदनाक स्तर पर किछु रचना नीक अछि आ जँ गजलकार गजलक व्याकरण पर धेआन देने रहतथिन्ह, तँ नीक गजल लिखि सकैत छलाह। गजलकारक ई पहिलुक मैथिली गजल संग्रह बहुत

आस तँ नै जगबैत अछि, मुदा हुनकर संवेदनात्मक प्रतिभा देखैत हम ई आस जरूर करै छी जे ओ गजलक व्याकरणक पालन करैत आगू नीक गजल कहताह आ "गजल हमर हथियार थिक" कँ चरितार्थ करताह। गजल तँ हथियार होइते अछि, मुदा बिनु काफिया, रदीफ आ बहरक नियमक पालन केने रचना गजल नै होइत अछि आ भोथ हथियार भऽ जाइत अछि। पद्यक हथियार पर काफिया आ बहरक सान चढल हुनकर नब गजल-हथियारक प्रतीक्षा रहत।

6

गजलक लेल

श्री विजय नाथ झाजीक गीत-गजल संग्रहक पोथीक नाम अछि "अहींक लेल"। ऐ पोथीमे गीत आ गजलक फराक-फराक दूटा प्रभाग छै। हम ऐ पोथीक गजल प्रभागक संबंधमे ऐठाँ किछु चर्चा करऽ चाहब। ऐ पोथीमे गजलकार श्री विजय नाथ झाजीक अठहतरिटा गजल प्रकाशित भेल अछि। पोथीक गजल पढलासँ ई पता चलैत अछि जे किछु गजल कँ छोडिकऽ बेसी ठाँ काफिया आ रदीफक निअमक पालन कएल गेल अछि। पृष्ठ संख्या 47, 50, 54, 55, 56, 67, 71, 74, 75, 82, 94, 101, 110, 114 पर छपल गजलमे काफिया गडबडाएल अछि। ऐठाँ ई धेआनमे राखबाक चाही जे बिना दुरुस्त काफियाक रचना गजल नै भऽ सकैए। तखनो अधिकांश गजलक काफिया दुरुस्त अछि, जे गजलक विकास यात्राक हिसाबँ एकटा नीक लक्षण अछि। काफिया, रदीफ आ गजलक व्याकरणक निअम पालन करबाक हिसाबँ गजलकार ओहि गजलकार सभसँ फराक श्रेणीमे छथि जे गजलक व्याकरणकँ नै मानबाक सप्पत खएने छथि।

ऐ गजल संग्रहक गजल सब कोन बहरमे लीखल गेल अछि, ऐ पर गजलकार मौन छथि। गजलक नीचाँमे बहरक नाम जरूर लीखल जएबाक चाही। बहरक ज्ञान नब पीढीक गजलकार सभमे बढेबामे ई महत्वपूर्ण डेग हएत। ओना तँ गजलकार कोनो गजलक नीचाँमे बहरक नाम नै लीखने छथि, मुदा गजल सभकँ पढलासँ ई पता चलैत छै जे ऐ संग्रहक ढेरी गजल एहन अछि जाहिमे अरबी बहरक निअमक पालन करबाक नीक प्रयास कएल गेल अछि। ई स्वागत योग्य गप अछि। ऐसँ इहो पता चलैत अछि जे गजलकार अरबी बहरसँ नीक जकाँ परिचित छथि आ जँ ई बात अछि तँ हुनका बहरक नाम गजलक नीचाँमे फरिछाकँ लीखबाक चाही। ऐ संदर्भमे हम पोथीक सबसँ पहिलुक गजलक (पृष्ठ संख्या 45) मतलाकँ उद्धृत करऽ चाहै छी-

हमर पूजा, हमर परिचय, हमर शृंगार छी अपने

सकल सौभाग्य, मन, काया, रुधिर-संचार छी अपने

आब एकर मात्रा संरचना पर धेआन दिऔ, तँ पता चलै छै जे ऐमे मूल ध्वनि मफाईलुन माने "ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ" सब पाँतिमे चारि बेर प्रयोग कएल गेल अछि। माने ई शेर बहरे-हजजमे कहल गेल छै। ऐ गजलक आनो शेरमे मोटामोटी किछु गलतीकँ छोडि बहरे-हजजक प्रयोग अछि आ किछुठाँ वर्ण दुरुस्त कऽ देला पर ई गजल अरबी बहर बहरे-हजजमे अछि। ई एकटा उदाहरण अछि, एहन आरो गजल ऐ संग्रहमे छै जे वर्ण आ मात्रामे किछु परिवर्तन भेला पर अरबी बहरमे कहल मानल जाएत। हमरा ई आस अछि जे गजलकार अपन अगिला गजल संग्रहमे ऐ बातक धेआन राखताह आ अरबी बहर युक्त गजल कहिकऽ मैथिली गजलकँ समृद्ध करताह। शेरक पाँतिक अंतमे पूर्ण विराम

वा कोनो विराम चिन्ह नै लगेबाक निअम अछि, मुदा पोथीक गजलक शेर सभक पाँतिक अंतमे पूर्ण विराम लगाओल गेल अछि, जे निअमानुकूल नै अछि आ एकर धेआन राखल जएबाक चाही छल।

संवेदनाक स्तरपर ई गजल संग्रह बड्ड नीक अछि आ गजलकारक विद्वताकेँ प्रकट करैत अछि। मुदा कएकठाँ भारी भरकम तत्सम आ संस्कृतक शब्दक प्रयोग गजलकेँ बूझबामे भारी बनबैत छै, जाहिसँ बचल जा सकैत छल। गजलमे क्लासिकल भाषाक प्रयोग नहिए हेबाक चाही, अपितु आम प्रयोगक भाषाक प्रयोग गजलक लेल बेसी नीक होइत छै। शेरमे एहन शब्दक प्रयोग जे आम बेबहारमे नै छै, गजलकारक शब्द सामर्थ्यकेँ तँ जरूर देखाबैत छै, मुदा शेरकेँ आम जनसँ दूर सेहो करैत छै। तैं शेर कहबाक काल हमरा हिसाबेँ बेसी क्लिष्ट भाषाक प्रयोगसँ बचबाक चाही।

अंतमे ई कहल जा सकैए जे "अहींक लेल" पोथीक गजल प्रभाग मैथिली गजलक विकसित होइत रूपकेँ अस्पष्टे रूपेँ, मुदा देखबैत जरूर अछि। ई पोथी गजलक व्याकरणक हिसाबेँ किछु गलतीकेँ छोडिकऽ नीक प्रयास अछि। ऐ संग्रहक कएकटा शेरमे अरबी बहरक पालनक प्रयास महत्वपूर्ण आ नोटिस करबाक जोग अछि। कएकठाँ क्लिष्ट आ संस्कृतनिष्ठ शब्दक प्रयोगकेँ जँ कात कए कऽ देखल जाइ तँ संवेदनात्मक स्तरपर सेहो ई संग्रह नीक अछि। मैथिली गजलक विकास यात्रामे ई पोथी गजलक भविष्यक लेल नीक डेग अछि।

अमित मिश्र

1

कतिआएल आखर

बात चारि बर्ष पहिलुक अछि हमरा संगे एकटा संगी हमरे रूम मे रहैत छल । पढ़ैमे कने कमजोर छलै मुदा कंपटीसनमे हमरासँ 2-3 घंटा बेसीए राति कऽ जागै छल आ एकर फलस्वरूप 10 टा मे 4 टा सबाल जरूर हल कऽ लै छलै ।ओना तऽ हमरासँ बेशी बात नै करैत छल मुदा भोर होइते बाँकी बचल सबालक लेल हमरा लऽग जरूर आबि जाइत छल आ एखन ओ मित्र बी .टेक कऽ रहल अछि ।इ घटना चारि सालक बाद मोन पड़ल मुन्ना जीक एकटा शेर पढ़िकऽ

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस

आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

पिछला डेढ़ महिनासँ मुन्नाजीक गजल संग्रह "माँझ आँगनमे कतिआएल छी " थोड़े-थोड़े पढ़ै छलौँह मुदा काल्हि भरि राति एकर गहन अध्ययन केलौँ ।कुल 50 टा गजल आ 10 टा रूबाइ के संग्रह अछि "माँझ आँगन मे कतिआएल छी" ।पोथीक नाम पढ़ि मोनमे किदन-कहाँदन बात सब उठऽ लागल ।कतिआएल उहो माँझ आँगनमे बिचित्र सन लागल मुदा पढ़लाक बाद हमरा लागैत अछि जे शाइर एहि समाजके आँगन आ एहि समाज रुपि आँगनक माँझ मे अपन बैसार बनेने छथि ।इ भऽ सकैए जे समाजक किछु भागसँ इ कतिआएल हेताह मुदा पूरा समाजसँ किन्नौह कतिआएल नै लागै छथि । हमर इ कथनक सत्यता एहि संग्रह के पढ़लाक बाद बुझा जाएत । इ तऽ प्रेमो केलनि तऽ समाजके ध्यान मे राकि तेँए तँ कहै छथि

सब उमरि वर्ग के प्रेम चाही

मरितो दम धरि कुशल छेम चाही

आशा आ निराशाके फरिछाबैत कहलनि

निराशा संग आशापर टिकल छै दुनियाँ

जँ देखलँहुँ भगजोगनी तँ दिबाली बुझू

बिहारक ताकत आ कमजोरी के समेटने इ शेर

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब

श्रमिक घटलासँ कंपनी मालिक लगै बिहारी जकाँ

एहन-एहन कतेको दमदार शेर सबसँ सजल इ गजल संग्रह अपना-आप मे अलग पहचान बनबैत अछि ।

पहिले गजल के देखलापर एकटा बात हमरा खटकल जे छल मात्र चारि टा शेर । गजलमे कमसँ-कम पाँच टा शेर रहबाक चाही मुदा एहि संग्रहक गजल संख्याँ 1,2,7,10,11,19,22,23,24,25,27,28,32,34,35,37,39,42,43,44,47,48 मे मात्र चारिए टा शेर अछि जे की गलत अछि ।ओना शाइर आमुखक अंतीममे इ गलती स्वीकार करै छथि आ एकर जिम्मेदार अपना के मानैत भविष्यमे एकर सुधारक वादा करैत छथि मुदा हुनक शब्दक पकड़ आ भावक अध्ययन केला के बाद हमरा लागैत अछि जे शाइरक लेल उपरोक्त गजलमे एक-एक टा शेर बढ़ेनाइ कोनो भारी बात नै छलै तँए हम एकरा आलस मानै छी ।

आब चलु काफियापर । एहि संग्रहक किछु गजलमे एकै काफियाक प्रयोग भेल अछि जेना 26म गजल मे तीन ठाम काफिया "चाहैए" अछि ।29मे पाँच ठाम "एखनो" 31मे पाँच ठाम "उघारू" 46म मे पाँच ठाम"केकरो-केकरो" अछि ।किछु और गजलमे इ बात अछि ।ओना काफियाक दोहरेलासँ गजल गलत नै होइ छै ।

तेसर गजलमे मतला नै अछि किएक तँ इ गजलक पहिल शेर अछि

फाटैत छल जतए मेघ आ जमीन

पहुँचल पहिने ओतहि अभागल

बचल चारिटा शेरमे "अभागल" के काफिया मानि क्रमश: "राँगल ,भाँजल , माँजल आ साधल लिखल अछि ।4म गजलक मतलामे "करैए" आ राखैए" "ऐए" तुकान्त संग अछि मुदा पाँचम शेर मे काफिया "होइए" अछि । छठम गजलक अंतीम शेरमे"कहाइ" के बदला गलत काफिया "कहाइत" लिखा गेल । 32म गजलक मतला अछि

हमरा तँ सुख भेटैए गजलक गाँतीमे

ओहिना जेना जाड़ मे गर्मी भेटैए गाँतीमे

एहिठाम "गाँतीमे" रदीफ भेल आ काफियाक अता-पता- नै अछि ।ओना आन शेरमे काफिया "आतीमे" तुकान्त संग अछि ।

41म गजलक मतलामे काफिया "झमका आ चमका " तुकान्त "मका" संग अछि मुदा दोसर शेरमे काफिया "उठा" अछि ।

44म गजल मे काफियाक तुकान्त "एल" अछि मुदा दोसर शेरमे काफिया "रखैल" "ऐल" तुकान्त अछि ।

17म गजलमे अंग्रेजी शब्दक काफिया "गेम" आ "ब्लेम" लिखल अछि ।

एहि संग्रहक सबटा गजल सरल वार्णिक बहरमे अछि ।ओना तँ इ बहर गजलक सबसँ हल्लुक बहर अछि मुदा शाइर इहो बहरमे बहुते बेर धोखा खाइत छथि । हमरा जानैत 26टा गजल गजलक कोनो शेरमे एक-दू टा वर्ण बढ़ा देलनि तँ कोनो मे घटा देलनि ।जेना

दोसर गजलक अंतीम शेरमे 15 के बदले 16 वर्ण अछि ।7म गजलक तेसर शेरमे 18 के बदले 19 वर्ण अछि । 9म मे दोसर शेरमे 11 के बदले 10 वर्ण अछि । 11म गजलक अंतीम शेरक अंतीम पाँतिमे 18 के बदले 17 वर्ण अछि ।एहन गजती गजल संख्याँ 12,14,15,18,19,20,22,24,26,28,29,30,31,32,34,35,38,42,43,46,47आ 48 मे सोहो भेल अछि । ओना जँ भावक बात करी तँ एहि गजल संग्रहके ऊँचाइ पर पहुँचा देने अछि एकर भाव । सबटा गजल हृदय के छू लैत अछि आ सोचबाक लेल मजबूर करैत अछि तँए इ आन संग्रह सबसँ बिल्कुल अलग अछि आ एकर आखर आन संग्रहक आखरसँ कतिआएल अछि । भावक कारणे इ संग्रहक "कतिआएल आखर" पढ़बाक योग्य अछि ।हमर सलाह अछि जे एकबेर एकरा अजमा कऽ जरूर देखू ।

बेस तँ अहूँ सब पढू आ हम जाइ छी दोसर गजलक खोजमे . . .

2

गजल आ गीत मे अंतर की छै?

गजल आ गीत मे अंतर की छै? मात्र एक अक्षर के । गीत आ गजल दूनू गाओल जाइ छै । जँ ध्वनीक तुक {राइम्स } सभ पाँति मे मिलैत रहत त' गीत वा गजल दूनू सुनै मेँ बेशी नीक लागै छै । मुदा गीत मे राइम्स नहियो हेतै त' चलतै मुदा गजल मेँ प्राय: पाँति संख्याँ 1 ,2,आ तकरा वाद 4 ,6 , 8 , 10 . . . मे हेवाक चाही । गीत मे कतेको पाँति के बाद फेर सँ मुखरा दोहराओल जाइ छै मुदा गजल मे प्राय: तुकान्त वाला पाँति बाद कहल जाइ छै । गजल कम सँ कम 10 टा पाँतिक होइ छै जकरा 2-2 पाँति के रूप मे बाँटि क शेर कहल जाइ छै । । जहिना गीतक शास्त्र व्याकरण होइ छै{सा रे ग . . .} तहिना गजलक व्याकरण होइ छै । जहिना शास्त्रीय गायण मे राग होइ छै तहिना गजल मे बहर होइ छै । जहिना गीत कोनो ने कोनो ताल . राग . मे होइ छै तहिना गजल कोनो ने कोनो बहर मे होइ छै । । आब कहू गीत आ गजल मे अंतर की?

नवका गायक त' गीतक टाँग -हाथ तोड़ि क' गाबै छथि । दू तीन टा शब्द के एकै साथ जोड़ि क' गाबैत छथि बूझू जे फेविकाँल सँ साटि देने होइ । जहिना गीत मे कोनो तरहक चिन्हक {कोमा ,फूल स्टाँप , आदि} के मोजरे नै दै छथि । ओहिना

गजल मे कोना पाँति मे कोनो चिन्ह{. , ? आदि} नै देल जाइ छै ।मात्र अपन नामक आगू पिछू {" "} चिन्ह लगा सकै छी ।

आब एना किए कैएल जाइ छै से नै पूछू ? अपने सोचू ने गीते जकाँ गजलो के त' गाओल जाइ छै ।

आ आब कहू गीत आ गजल मे अंतर की? हमर एकटा मित्र गजलक बारेमे पुछलनि तँ कहलिअन्हि-
---

1} शेर- शेर दू पाँतिक होइत अछि आ अपना आप मे सदिखन पूर्ण भाव दै अछि आ आन पाँति सँ स्वतंत्र रहैत अछि ।

2} गजल- कम सँ कम पाँच टा शेरके जँ किछु तुकान्तक सँग एक ठाम राखल जाए त' ओ गजल बनै छै । एकटा गजल मे एकै रंग तुकान्त हेवाक चाही ।

3} रदीफ- गजल पहिल शेर के अंतीम सँ देखू जँ कोनो एहन शब्द जे शेरक दूनु पाँति मे काँमन होइ त' ओकरा गजलक रदीफ कहबै ।

आइ चलू संगे प्रेम गीत गेबै प्रिय

एकटा प्रेमक महल बनेबै प्रिय

एहि शेर मे "प्रिय "दुनू पाँति मे अछि तेँए एकर रदीफ भेल" प्रिय" ।

आब गजलक सब शेरक दोसर पाँति मे इ रदीफ रहबाक चाही इ अनिवार्य अछि ।

4} काफिया - काफिया मने मोटा मोटी तुकान्त{राइम्स} बूझू । जँ बाजै मे एकै रंग ध्वनी बूझना जाइ यै त' ओ भेल काफिया । काफियाक तुक ओहि शब्दक अंतीम सँ पता लागै छै । जे तुकान्त गजलक पहिल पाँति मे अछि सेह आन सब पाँति मे हेवाक चाही । मतलब जे गजलक पहिल शेरक दुनू पाँति मे आ आन शेरक दोसर पाँति मेँ ।

काफिया- जेना - जेबै . खेबै . नहेबै { ऐ मे "एबै" तुकान्त भेल

गमला . राधा . चेरा . केरा {एहि मे तुकान्त "आ" भेल}

हेतै , खेबै . झेलै {ऐ मे तुकान्त"ऐ" भेल}

रोटी , हाथी . रेती{ऐ मे "ई" भेल}

झोरी . बोरी {ऐ मे"ओरी" भेल}

एनाहिते और सब मे काफिया {तुकान्त }बनत ।

गजल पहिल शेर मे रदीफ आ काफिया क्रमश: पाँतिक अंतीम सँ अनिवार्य रूप सँ हेबाक चाही । आ आन शेरक दोस पाँति मे सेहो रदीफ आ काफिया क्रमश: अंतीम सँ हेएत ।

5} मतला- गजल पहिल शेर जेकर दूनू पाँति मे रदीफ आ काफिया क्रमश: अंतीम सँ होइ एकरा मतला कहल जेतै ।

चाँद देखलौ त' सितारा की देखब

अन्हारक रूप दोबारा की देखब

प्रेमक सागर मे बड नीक लागै

डुब' चाहै छी त' किनारा की देखब

एहि मे पहिल शेरक दुनू पाँति मे काँमन "की देखब" अछि तेँए इ एहि गजलक रदीफ भेल आ रदीफक पहिले देखू , दूनू पाँति मे "सितारा "आ "दोबारा " छै एकर तुकान्त भेल "आरा" तेँए इ भेल काफिया । आब दोसर शेरक दोसर पाँति मे देखू । रदीफ "की देखब" आ तुकान्त "आरा " के संग शब्द "किनारा " अछि । । आब एहि गजलक सब शेरक दोसर पाँति मे अंत सँ रदीफ "की देखब "

आ काफिया "आरा"

तुकान्तक संग हेबाक चाही ।

तुकान्तक पाता शब्दक अंत सँ चलै छै ।

6} मकता-- गजल अंतीम शेर जै मे शाइर अपन नामक प्रयोग करै छथि ओहि गजलक मकता कहल जाइ छै ।

मेघक डरे चान नै बहरायल

नै औता "अमित" नजारा की देखब

इ भेल मकता ।

शाइर अपन सब शेर मे अपन एकै टा नामक प्रयोग करैथ । जेना हम पहिल गजल सँ"अमित" लिखै छी त' आब कतौ "मिश्र " नै लिख सकै छी । वेश त' एते देखू आ लिखू । और कनेटा बात छुटल अछि जे अहाँ सब जानैत छी । वर्ण वला बात । त ' आब लिखू किछ नीक गजल किछु दिन पूर्व हमरे सन एकटा बिन पढ़ल लिखल गीतकार सँ भेट भेल ।हमरे जकाँ हुनको रचना लोकक माँथ पर द निकैल जाइ छलै । खैर ओ हमरा बतेलनि जे गीत लिखैत बेर जँ वर्ण गानि क लिखब त' गाबै मे सुविधा हेतै । आ ओ वर्ण गानब सिखेलनि । तै पर हम कहलयनि जे एना वर्ण गानि क' हम सब "गजल "लिखै छी

आ तेकर नाम दै छी "सरल वार्णिक बहर" आ एकर वर्ण एना गानल जाइत अछि । वर्णमाला के जतेक वर्ण अछि{अ .आ सँ ल' क' य , र . . . धरि} के एकटा वर्ण मानै छी । जतेक हलन्त रहै अछि तकरा मोजर नै दै छी अर्थात शुन्य{0} मानै छी । संयुक्ताक्षरमे संयुक्त अक्षर के एक {1} मानै छी । जेना की " भक्त" एहि मे 2 टा वर्ण भेल । एकटा "भ"आ एकटा "क्त" । एकर बाद एकटा शेर कहलौँ ।

भाग्य मे जे लिखल अछि तेँ विरह मे मरै छी

आशा केने छी कहियो त' मान नोरक धरबै

एहि शेरक दुनू पाँति मे 17 वर्ण अछि । एहि बहर मे जँ गजल लिखब त' सब पाँति मे पहिल पाँति एते वर्ण हेबाक चाही ।

ओ गीतकार कहलनि जे अहाँके वर्ण गान' आबै यै तँए अहाँ नीक गीतकार बनब आ हमहूँ आब गजल लिखब । । गीत आ गजल मे एते समानता अछि त' आब कहू गीत आ गजल मे अंतर की ?

जगदानन्द झा मनु

1

गजलक लहास

हमरा पढ़क सौभाग्य भेटल कलानंद भट्ट कृत गजल संग्रह ‘‘कान्हपर लहास हमर’’ जे की 1983मे प्रकाशित भेल अछि। एहि गजल संग्रहमे कलानंद भट्ट जीक गजल प्रति सम्बोधन ‘गजलक मादे’क अलाबा कुल 48टा गजल वा गजल सन किछु अछि। भट्टजी अप्पन संबोधन ‘गजलक मादे’मे तँ विभक्ति सटा कए लिखने छथि मुदा बाद बांकी गजल सभमे विभक्ति शब्दसँ हटा कए लिखल अछि। ई संकेत अछि हुनक वा हुनक समकालीन मैथिली लेखकक द्वारा गद्य आ पद्यमे मैथिली प्रति कएल गेल अन्तर।

एहि संग्रहक मादे, गजलक व्याकरण पक्षपर अबैत छी। एक गोट गजल लेल सभसँ आवश्यक अछि काफिया आ रदीफक पालन मुदा एहि संग्रहक किछु गिनतीक गजल बाय लक छोरि कए बाद बांकी गजलमे काफिया आ रदीफक दोख अछि। जेना एहि संग्रहक पहिले गजलक मतला देखू

‘‘घर घरेक आगि सँ अछि जरल जा रहल

भाइ सँ भाइ द्वेषे भरल जा रहल ’’

आब एहि मतलाक हिसाबे काफिया भेल ‘रल’, मुदा एहि गजलकेँ आँगाक शेर सबहक काफिया अछि ‘बनल’, ‘बनल’, ‘चलल’, ‘कयल’।

गजल तीन केर मतला देखू

‘‘कहू की कथा कहुना जीबि रहल छी

फाटल गुदरी अपन हम सीबि रहल छी’’

आब एहि मतलाक काफिया भेल ‘ीबि’, मुदा गजलक आन-आन शेरक काफिया अछि, ‘लीबि’,’पीबि’, ‘खीचि’, ‘पीति’। एहिठाम ‘लीबि’ आ ‘पीबि’ तँ ठीक मुदा ‘खीचि’ आ ‘पीति’ ?

गजल 6 केर मतला

‘‘बाट बाधित पहाड़े छै पाटल जखन

सीयत दरजी के आकासे फाटल जखन’’

एहिठाम काफिया भेल 'टल' जेना की काटल, चाटल, साटल, मुदा एहि गजलक आन आन काफिया अछि 'साटल', 'फाटल', 'जागल', 'लागल'। एहिठाम 'साटल' तँ ठीक अछि, 'फाटल' ठीक मुदा एकर पुनः प्रयोग आ 'जागल' आ 'लागल' ?

गजल संख्या 12 केर मतला

''अहाँ जीबिते मनुक्ख कँ जरा रहल छी

घेरि गामे कँ स्वाहा करा रहल छी''

मतलाक काफिया भेल 'रा' मुदा एहि गजलक आगाँक शेरक काफिया प्रयोगमे अछि, 'दनदना','खड़ा', 'चला', 'बना', 'रचा', ऐ गजल तेसर शेरक काफिया 'खड़ा' ठीक अछि बांकी सभ गल्ती।

एहि तरहे 18,19,20,21,22,33,48म गजलक काफिया ठीक नहि अछि।

अंतिम गजलक मतला आओर देखू

''शहर केर सागर मे आइ गाम डूमि रहल

कामांध कामिनी कँ पकड़ि जेना चूमि रहल''

आब उपरकँ मतलामे काफिया भेल 'ूमी' (दीर्घ ऊ कार आ मी) मुदा एहि गजलक आन शेरक काफिया राखल गेल अछि, 'घूमि', 'चूसि', 'रेड़ि', 'बूकि', आब घूमि ठीक बाद बांकी 'चूसि', 'रेड़ि', 'बूकि', कोन मादे ठीक भऽ सकैत अछि।

उपरका उदाहरन सभसँ एक डेग आगू बैढ़ बहुत रास गजल तँ एहनो अछि जाहिठाम काफिया केर कोनो स्थाने नहि राखल गेल अछि। आउ देखी किछु एहनो गजल-

गजल संख्या सातक मतला अछि

''मरि मरि क' जे जीबय से आदमी चाही

राखय बिहाड़ि हाथ मे से आदमी चाही''

आब एहि मतलामे देखी तँ दुनू पाँतिमे कोमन अछि 'से आदमी चाही' अर्थात ई भेल रदीफ। आब रदीफसँ पहिने एहि शेरक दुनू पाँतिमे कोनो काफिया अछि ? नहि ने। एहि तरहे एहि गजलक सभ शेर बिना काफियाक अछि। एहिठाम गजलकार जानि अनजानि नहि जानि किएक ने धियान देलन्हि, मतलाक निच्चाक पाँतिकँ कनिक बदैल कए काफिया ठीक कएल जा सकैत छल, देखू

मरि मरि क' जे जीबय से आदमी चाही

बिहाड़ि हाथमे राखय से आदमी चाही

एहिठाम एकटा गप्प धियान देबए बला अछि जे गजल शास्त्र अनुसार बिना रदीफक गजल तँ कहल जा सकैए परन्च बिन काफियाक गजल, जेना बिन कनियाँ ब्याहक कल्पना। एहि तरहे, एहि संग्रहमे बहुत रास गजल बिन काफियाकेँ कहल गेल अछि जेना गजल संख्या 11,23,30,38,39,41,44,आ 46। एक बेर फेरसँ गजल संख्या 46 केर मतला देखी

‘‘ठेंगा जकाँ ठाढ़ भेल नागे देखैत छी

हम बाट-घाट सभठाम नागे देखैत छी’’

आब एहि मतलाक दुनू पाँतिमे कोमन अछि ‘नागे देखैत छी’ जे की रदीफ भेल आ रदीफसँ पहिने काफिया नदारत।

कतौ कतौ बाय लक काफिया ठीको अछि तँ काफियामे एक्के शव्दक प्रयोग बेर-बेर अछि। जेना गजल संख्या 29 क मतला देखी तँ-

‘‘जनम व्यर्थ बेटीकेँ देलौं विधाता

कर्म अपकर्म हम कोन केलौं विधाता’’

ऐ शेरमे रदीफ भेल ‘विधाता’ आ काफिया भेल ‘लौं’। आब एहि गजलक आन-आन शेरक काफिया अछि, ‘बनेलौं’, ‘चढ़ेलौं’, ‘सिरजेलौं’, ‘बनेलौं’, ‘चढ़ेलौं’। मतलाक शेरक हिसाबे काफिया दुरुस्त अछि मुदा ‘बनेलौं’ आ ‘चढ़ेलौं’ शव्दक आवृति काफियामे एकसँ बेसी बेर अछि। एहि तरहे गजल संख्या 15 आ 45 मे सेहो काफियामे एक शव्दक आवृति एक बेरसँ बेसी बेर भेल अछि।

बहुत रास गजलमे तँ काफिया आ रदीफ दुनू असमंजसकेँ अबस्थामे अछि अथबा कहू तँ दुनूकेँ दुनू गल्ती अछि। जेना गजल संख्या 35केँ मतला देखी

‘‘बानरक हेँज जकाँ बौख रहल लोग

रंगल सियार जकाँ लौक रहल लोक’’

एहि मतलामे देखी तँ रदीफ भेल ‘रहल लोक’ आ काफिया ‘ौऽ‘, मुदा एहि गजलक आन-आन शेर सबहक काफिया आ रदीफ दुनू संगे अछि, ‘दौड़ रहल लोक’, ‘सिरमौर बनल लोक’, ‘पछोड़ पड़ल लोक’, ‘सिलौट रहत लोक’। एहि शेर सभमे, ‘दौड़ रहल लोक’मे मतलानुसार काफिया आ रदीफ दुनू दुरुस्त अछि मुदा तेसर आ पाँचम शेरमे रदीफ गल्ती अछि आ चारिम शेरमे तँ काफिया आ रदीफ दुनू गरबड़ागेल अछि। कहि तँ एहि गजलकेँ पाँचो शेरधरि गजलकार ई नहि निर्धारित कए सकल छथि जे कोन काफिया अछि आ कोन रदीफ, एहि असमंजसमे खिच्चैर बनि सम्पूर्ण गजल लहास बनि गेल अछि। बिल्कुल एहने तरहक बीमारीसँ ग्रस्त गजल 43 सेहो अछि।

एहिठाम हम कही तँ गजलकारकेँ सामर्थपर नहि हुनक गजल व्याकरण प्रति अज्ञानताकेँ दोखी मानि सकैत छी। किएक तँ सामर्थक गप्प करी तँ एहि संग्रहक 17 म गजलमे दोहरा काफियाक सफल पालन कएल गेल अछि एकरा हुनक सामर्थ अथवा बाय लक कहि सकैत छी। जिनका काफिया आ रदीफ केर ज्ञान हेतनि ओ अतेक बेसी गल्तीक गुंजाइस नहि छोरता। एहि सन्दर्भमे 24 सम गजलक मतला देखू

‘‘सरिपहुँ अहाँ भैया कमाल करै छी

अछि भ्रष्ट आचरण मुदा गाल करै छी’’

अर्थक मादे कहू तँ एहि शेरक दोसर पाँतिमे ‘‘करै’’केँ जगह ‘बजै’ हेबा चाही मुदा गजलकार ‘‘करै छी’’केँ रदीफ मानि ‘‘ाल’’केँ काफिया बनोलनि। एहि तरहे मतलाक काफिया आ रदीफ ठीक अछि मुदा गजलक आन-आन शेरक काफिया आ रदीफ संगे अछि, ‘‘ताल करै छी’’, ‘‘नेहाल करै छी’’, ‘‘जाल करै छी’’, एतए धरि सभ ठीक मुदा अंतिम शेरमे अछि ‘‘टाल रखै छी’’ रदीफ ‘करै छी’केँ जगह रखै छी अर्थात रदीफ गल्ती एकरे कहै छैक सौँसे खीरा खाए कऽ पेनी तीत।

आब आबी काफिया आ रदीफकेँ बाद गजल व्याकरण केर महत्वपूर्ण पक्ष बहरपर, तँ ई कहैमे कोनो संकोच नहि जे संग्रहक पूरा पूरी गजल बेबहर अछि। सरल वार्णिक बहरक साइद ओहि समयमे जनमे नहि भेल छल आ नहि एहि रूपमे संग्रहक कोनो गजल उतरि रहल अछि। वर्णवृत सेहो कोनो गजलमे नहि अछि, कतौ कोनो गजलक एक आधटा शेरमे वर्णवृत्त अबितो अछि तँ गजलक बांकी शेरमे नहि अछि। एकटा उदाहरन देखू संग्रहक 14हम गजलमे गजलकार वर्णवृत करैक प्रयासमे छथि

गजलक मतला अछि

‘‘भेल ई की कहाँ सँ लहरि गेल अछि

212 -212 - 112 - 212

प्रश्नवाचक धरा पर पसरि गेल अछि’’

212 212 - 212 - 212

एहि मतलामे 212-212-212-212केँ वर्णवृत बनैत-बनैत बिगैर गेल अछि। एहिठाम या तँ गजलकार वर्णवृतसँ अज्ञात छथि अथवा चानबिंदुकेँ दीर्घ मानै छथि। गजलक आगू केर तीनटा शेरमे 212x4केँ सटीक वर्णवृतक प्रयोग अछि। गजलक दोसर शेर देखू

‘‘आदमी आदमी केर बैरी बनल

212 212 212 -212

कोन नभसँ घृणा ई उतरि गेल अछि''

212 212 212 - 212

मुदा गजलक पाँचम शेरमे अबैत अबैत वर्णवृत टूटि गेल अछि। पाँचम शेर

''उर काँपैछ धरतीक भालरि जकाँ

222- 12 -212 -212

युग आदम कोना फेर पलटि गेल अछि''

222-222- 1 12- 212

जँ कनिक धियान देने रहितथि तँ एतेक लअग एला बाद वर्णवृत पूरा ने होबाक कोनो कारण नहि। कहब ई जे इहो गजल बेबहर भेल।

कतौ कतौ बुझाइत अछि जेना भट्टजी समकालीन हिंदी गजलकार सभसँ प्रेरणा लऽ कऽ मात्रिक छंदक प्रयोगक फिराकमे छथि। हलाँकी मात्रिक छंद गजलक हिस्सा नहि अछि तथापि एहि संग्रहक गजल एहनो सिस्टममे पूर्ण फिट नहि भए रहल अछि। पहिले गजलक मतला देखू

''घर घरेक आगिसँ अछि जरल जा रहल

2121 -2112-12212

भाइ सँ भाइ द्वेषे भरल जा रहल''

2112-2221-2212

वर्णवृत तँ नहिए अछि मुदा मतलाक दुनू पाँतिमे 20-20 टा मात्रा अछि। ऐ तरहे गजलक तेसर चारिम आ पाँचम शेरमे 20-20 टा मात्रा अछि मुदा दोसर शेरक मात्रा गनियो कए कम बेसी अछि। गजलक दोसर शेर

''कोन आयल जमाना जुआरी एतय (21 मात्रा)

भवना अविवेकी बनल जा रहल'' (19 मात्रा)

एहिना सम्पूर्ण संग्रहमे नहि कोनो गजल मात्रिक गणनामे पूर्ण अछि आ नहि वर्णवृतमे। मने ई संग्रह पूरा-पूरी बेबहर गजल संग्रह अछि। काफिया आ रदीफक अशुध्यताक कारणे एहि तरह केर रचनाक संग्रहकेँ अजादो गजल केर श्रेणीमे रखनाइ उचित नहि।

गजल व्याकरणक एकटा आओर महत्वपूर्ण हिस्सा अछि मकता, अर्थात गजलक अंतिम शेर जाहिमे शाइर अपन नाम अथवा उपनामक देने होथि। एहि संग्रहक कोनो गजलमे मकताक प्रयोग नहि अछि।

आब आबी भाषा पक्षपर। गजलक भाषा एहन होबा चाही जे सुनिते माँतर मुँहसँ निकलै वाह ! वाह ! आ ई की सुनलहुँ आइ आ बुझै लेल दू दिन बादो शव्दकोश ताकैत रहू। एहि पोथीमे एकर सदत अभाब अछि। बहुत उपरकेँ भाषा, माटि थालमे औँघरे वलाकेँ लेल जेना सुन्दर चौपाइ जकाँ नीक तँ बड्ड छै मुदा किछु बुझलौं नहि। किछु कठीन शव्द, ऐ संग्रहक पहिले गजलक एकटा शेर

‘‘क्षुब्ध धरती गगन नयन मूनल अपन

अछि वसाती बलाती बनल जा रहल’’

आब ऐ शेरक की अर्थ बूझल जेए ? आ जँ बुझबो करब तँ कतेक काल बाद आ ओहो के ?

एकटा आओर शेर 37 सम गजलसँ

‘‘घर छोट-छोट भीत चूना सँ ढेउरल

चित्र ओहि पर राधा कृष्णक ललाम’’

चूना, चित्र हिंदीक बेसाहल शव्द ओहूपर अर्थ की? ई ललाम की ? के बुझत ? कठीन भारी भरकम शव्दकेँ अलाबो एहि संग्रहक भाषा मैथिली अवश्य अछि मुदा एहने एहने पोधी पढ़ला बाद हिंदीक दलाल सभ कहैत छै जे मैथिली हिंदीक अंग अछि अथवा हिंदीक उपभाषा अछि। ऐ संग्रहक बहुत कम एहेन गजल अछि जाहिमे हिंदी शव्दक प्रयोग नहि हुए। देखी किछु हिन्दीक शव्द

गजल 1 मे चमन

गजल 2 मे श्रम, विवशता

कनीक आगू आबि गजल 10 मे विकृति, रक्त

गजल 11 मे आदेश, वैशाखी, आतंकित

गजल 12 मे विकट, मनुष्यता, क्रूरता

गजल 14 मे कहाँ, प्रश्नवाचक, धरा, संशकित, आभास

गजल 16 मे निष्क्रिय, शिथिल, सदृश्य, विस्मय

गजल 18 मे अम्बर, मुरझायल

गजल 19 मे कहर, अग्रसर

कनी आओर आगू बढ़ी, गजल 38 मे घटा, उषम, विषम, जल

बांकीओ गजलमे एनाहिते हिंदी शव्दक भरमार अछि। कतौ-कतौ तँ एकछाहा हिंदीए अछि। 15हम गजलकेँ ई दुनू शेर देखू

‘‘घरमे फूटल क्रिया गर्म सीमांत अछि

भावना संकुचित विषमयकारी ने भेल

मंत्र मधुमय कहाँ ओ विश्व वन्धुत्व केर

कोन उतरल ई युग दुराचारी ने भेल’’

उपरकेँ दुनू शेरमे कतेक शव्द मैथिलीक अछि ? 39 म गजल केर ई शेर देखू

‘‘उर बसा द्वेष इर्ष्या घृणा केर लहरि

रक्त तर्पण करैछ ने कोनो जानवर’’

जँ ई मैथिली तँ हिंदी की ?

आब आबी भाव पक्षपर, तँ एहि संग्रहक सभ गजलक भाव पक्ष जबरदस्त अछि। समाजक कोनो एहन कोण नहि जाहिपर शाइर ऐ संग्रहमे वर्णन नहि केने होथि। चापलूसीसँ शुरू कए आम लोकक जीवनक विषमता, भ्रस्टाचार, महगाइ, अपहरण, लूटि-पाट, राजनीति सभ विषयपर अपन कलम चलबैत एक एक भावकेँ उजागर करैमे सफल छथि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल"

1

प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

‘थोडे आगि थोडे पानि’2008 मे प्रकाशित प्रसिद्ध गीतकार भाइ सियाराम झा ‘सरस’क 80 टा गजल संकलन थीक।सरसजी गजलक पोथीक भूमिकामे कविता,कथा,निबन्ध आदि विधामे आबि रहल रचना सभक स्तरपर सवाल उठौलनि अछि। लेखक,कवि,नाटककार कें की की पढबाक चाही,से सलाह देल गेल अछि.लेखक लोकनिमे प्रतिबद्धताक अभाव पर आक्रोश व्यक्त कएल गेल अछि। अपन समाज,अपन भाषाक प्रति अपन लेखकीय प्रतिबद्धताक वर्णन सरसजी जाहि तरहें केलनि अछि से बेर-बेर पढबाक आ मोनहि मोन हुनक चरण स्पर्श करबाक लेल बाध्य क’ देत। मुदा जँ अहाँ ताकब जे गजलकारकें की की पढबाक अथवा कथीक अभ्यास करबाक चाही से एहिमे नहि भेटत। गजलकार स्वयं गजलक सम्बन्धमे की-की पढने छथि तकर उल्लेख नहि कएल गेल अछि। गजलक व्याकरणक कतहु चर्च नहि अछि.गजलकारकें मोन पडैत छनि दक्षिण अफ्रीकाक कवि मोलाइशक क्रान्तिगीत आ फिलीस्तीनी कविक कविता,कोनो शायरक कोनो महत्वपूर्ण शेरक उल्लेख नहि केलनि अछि। एहिसँ गजल लेखनक लेल आवश्यक प्रतिबद्धताक आभास नहि होइत अछि।

पोथीक 80 टा गजलमे 62 टा गजलमे रदीफ आ काफियाक प्रयोग कएल गेल अछि जाहिमे 5 टा गजलमे रदीफ अथवा काफिया अथवा दूनूक निर्वाह सभ शेरमे नहि भ’ सकल अछि।16 टा गजलमे काफिया अछि, रदीफ नहि। 2टामे रदीफ अछि,काफिया नहि। अहूमे एकटामे सभ शेरमे रदीफक निर्वाह नहि भ’ सकल अछि। कोनो गजल एहन नहि अछि जकर सभ शेरमे वर्ण अथवा मात्राक एकरूपता हो।तें बहरमे त्रुटि साफ दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि दिस गजलकारक ध्यान किएक नहि गेलनि से नहि जानि। सरसजीसँ लोककें बहुत अपेक्षा रहैत छैक, मुदा एहि सम्बन्धमे हुनक कोनहु स्पष्टीकरण सेहो कतहु नहि अछि। आशा अछि गजलकारक अगिला गजल-संग्रहमे आवश्यक औपचारिकताक निर्वाह होयत। ई पढि क’ नीक लगैत अछि जे ‘.....धीरू भाइ तं एते धरि कहने रहथि जे खैयाम कें मैथिलीमे सुनबाक हो तं सरस कें सूनल जा सकैछ...’ तें सरसजीसँ अपेक्षा आर बढि जाइत अछि। सरसजी कहैत छथि,‘एहि संकलनक गजल सभ तं सहजहिं अपन लोकवेदक,माटि-पानिक,भाशा-साहित्यक आ संस्कार-संस्कृतिक प्रतिबिम्ब तं थिके,संगहि अनेक ठाम अनेक तरहें तकरा नब सं परिभाषित आ व्याख्यायित सेहो करैछ । नब-नब संस्कारक स्थापना सेहो करैछ ।.....’ सरसजीक उक्तिकें तकैत विभिन्न गजलक एहि शेर सभ पर विचार करू-

जै पाइने पैनछूआ कैरतै ने लोक, छीः छीः छीः

सेहो पाइन घटर-घटर घटघटा रहल,ई मैथिल छौ

जौं-जौं अहंक खसैए पिपनी,धप-धप तेना खसै छी हम

रसे-रसे उठबी तं सरिपहुं, होइए देव-उठान हमर

थप्पा समधिन देल समधि केर अंगा मे

उजरो मोंछ पिजाएल,फागुनक दिन आयल

अइ समुद्रक किन्हेरमे बड चक्रवातक जोर रहलै

बालु पर तैयो अपन हम नाम तकने जा रहल छी

बिज्झो कराओल बैसले रहि गेल नोथारी

गलियाक' कियो खाइत आ उगलि रहल छलै

हम मरब,बेटा लडत,बेटा मरत-पोता लडत

कटब-काटब,जे बुझी-सदभावना-दुर्भावना

हवा-पानिक बिना एमहर भेलैए दूभि सब पीयर

ओम्हर बोडामे कसि-कसि,स्विस खातामे ढुकाबै छै

व्याकरण पक्षकें जँ उपेक्षित क' देल जाए तँ कएटा गजलमे किछु शेर महत्वपूर्ण अछि जे पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि किछु शेर जे पढबामे नीक नहि लगैत अछि, भ' सकैए जे हुनका स्वरमे सुनबामे नीक लागय. मैथिली गजलक भण्डारकें भरबामे सरसजीक योगदानकें महत्वपूर्ण मानैत हम गीतकार सरसजीक प्रशंसक, मैथिलीक सुधी पाठक आ नव-पुरान गजलकार सभसँ अनुरोध करबनि जे कम-सँ-कम तीन बेर अवश्य पढि जाथि सरसजीक 'थोडे आगि थोडे पानि'। नीक लगतनि।

अरविन्दजीक आजाद गजल

मैथिलीयोमे गजल पर खूब काज भेल अछि आ एखनो भ' रहल अछि। गजेन्द्र ठाकुर गजलक व्याकरण विस्तार सँ प्रस्तुत केलनि आ अपनो बहुत गजल लिखलनि. आशीष अनचिन्हार मैथिली गजल ले' स्वतंत्र साइट बनाक' व्याकरण कें स्थापित करबामे अपनो योगदान करैत अपनो बहुत गजल लिखलनि आ आओर बहुत गोटे सँ गजल लिखबौलनि आ से काज एखनो क' रहल छथि हिनका दूनू गोटेक अतिरिक्त आर बहुत गोटे मैथिली गजलकें समृद्ध करबामे योगदान क' रहल छथि।ई प्रसन्नताक बात थिक। हमरा जनैत गजलकारक मुख्य तीनटा वर्ग अछि। एक वर्ग ओ अछि जाहिमे रचनाकार पहिने गजलक व्याकरण पढलनि आ तकरा बाद ओही अनुसारे गजल लिख' लगलाह. दोसर वर्गमे ओ गजलकार सभ छथि जे पहिने गजल लिख' लगलाह , बादमे गजलक व्याकरण दिस घ्यान गेलनि आ ओहि अनुसारे लिखबाक प्रयास कर' लगलाह. तेसर वर्गमे ओ लोकनि छथि जे गजल सूनि क', पढि क' लीख' लगलाह आ लीखैत चल गेलाह, पाछां उनटि क' नहि तकलनि.ओ मात्रा अथवा वर्ण गनि क' शेर लिखबाक-कहबाक चक्करमे नहि पडि अपन बातकें केंन्द्रमे राखि धडाधड लिखैत चल गेलाह आ लिखैत जा रहल छथि।

'बहुरूपिया प्रदेशमे' मात्र 24 दिनमे लीखल गेल 66टा गजलक संग्रह थीक जाहिमे गजलकार अरविन्द ठाकुरजीक कथन पर ध्यान देल जाए: 'हम जे कहय चाहैत छी से महत्वपूर्ण छैक,ताहि लेल व्याकरण टूटय कि विधा विशेषक मापदंड,तकर हमरा परवाहि नहि अछि। ओकरा भल चाही त'हमर सहायक हुअए,बाधा ठाढ नहि करए ।' गजलकारक एहि कथनकें ध्यानमे राखि जँ हिनक गजल पढब त नीक लागत। 66 टा गजलमे 10टा गजल एहेन अछि जाहिमे रदीफ अछि,काफिया नहि. 16 टा एहेन अछि जाहिमे काफिया अछि,रदीफ नहि. 40 टा गजलमे रदीफ आ काफिया दूनू अछि. किछुए गजल एहेन हएत जाहिमे बहरसँ सम्बन्धित दोष नहि हो.मुदा,बहुत रास शेर सभमे जे बात कहल गेल अछि से व्याकरणक त्रुटिकें झांपन देबामे बहुत समर्थ लगैत अछि.सभ गजलक अंतिम शेरमे गजलकारक नामक प्रयोगक प्राचीन परंपराक निर्वाह नीक जकाँ कएल गेल अछि जे बहुत गजलकार नहि क' पबैत छथि. गजलकारक समक्ष सामाजिक,राजनीतिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अवमूल्यनक विषाल क्षेत्रक अनुभवक संपदा छनि जे जहां-तहां विभिन्न गजलक विभिन्न शेर सभमे प्रगट भेल छनि।एकर बानगीक रूपमे प्रस्तुत अछि निम्नलिखित किछु शेर:

दूध लेल नेना आ रोगी हाकरोस करत

नै जखन गाममे मालक बथान रहत

एहि समाजक रूढि भेल अछि घोडनक ओछाओन सन

प्रेममे भीजल बतहबा ताहिपर ओंघरा रहल अछि

गाममे डिबिया जरल अछि रातिसं लडबाक लेल
मेट्रोपॉलिटन टाउनमे अछि राति दुपहरिया बनल

पात बिछैबाक बेर लोकक करमान छल
यार सभ अलोपित भेल ऐंठ उठेबाक बेर

रातिक जे एकबाल बढल
दुर्लभ सगर इजोरिया भेल

संसद केर फोटोमे किछुओ नहि हेर-फेर
सांपनाथ, नागनाथ,इएह दुनू बेर-बेर

कार खोजै छै एम्हर फूटपाथ पर सूतल षिकार
यम अबै छथि एहि नगर विभिन्न वाहन पर सवार

संसदमे घुसिआयल जे
सात जनम लेल केलक जोगार
गजलकारक भयंकर आत्मविश्वास एहि षेर सभमे देखू:
धन्य 'अरबिन'तों एलह गजलक जगतमे
फेर केओ 'खुसरो'की तोहर बाद हेताह

नै पाठक के चिन्ता अरबिन

नीक गजल के पढबे करतै

एहने आर बहुत रास नीक-नीक शेर वला गजल पढबाक लेल देखू श्री अरविन्द ठाकुरक रचल आ 'नवारंभ' द्वारा 2011 मे प्रकाशित आ बहुत सुंदर कागतपर 'प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स', नई दिल्ली द्वारा बहुत सुंदर मुद्रित गजल संग्रह 'बहुरूपिया प्रदेशमे'। अन्तमे हम गजलकारक उक्तिक उल्लेख कर' चाहब: '.....हाथक जेना सभ बान्ह टूटि गेल । एहन धारा-प्रवाह जे गजलक मिसरा,शेर,रदीफ,काफिया,बहर,गिरह सभकें सम्हारब कठिन....' भरिसक, इएह कारण थीक जे गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा हिनक गजल सभकें आजाद गजल कहल गेल अछि। हम एहि विचारसँ सहमत छी।

गजेन्द्र ठाकुर

1

‘‘माँझ आंगनमे कतिआएल छी’’ मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। कतिआएल आ सेहो माँझ आंगनमे! की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि। मुन्नाजी सन कतेको लोक कतिआएल छथि, प्रतिभा अछैत हेराएल छथि। मुदा गजलकार सभटा दोख अपनेपर लऽ लै छथि।

आब तँ माँझ आँगनमे कतिआएल छी

अपने चालिसँ आब बेरा गेलहुँ हम

आ सएह कारण अछि जे ओ नोरक सुख भोगऽ लागै छथि।

नोर तँ खसैए मुदा मजा सन लगैए

केहन नीक प्रेमक दुख लेलहुँ हम

बड़का खाधिमे खसै छथि आ तहू लेल अपनेकेँ दोखी मानै छथि:

छोटको ठेससँ नै सबक लेलहुँ हम

तँए बड़का खाधिमे खसि गेलहुँ हम

तँ की गजलकार प्रेमक महत्व बिसरि गेल छथि, नै प्रेम तँ सभकेँ चाही।

सभ उमेर वर्गकेँ प्रेम चाही

मरितो धरि कुशल-छेम चाही

आ हिनका जँ कोस दू-कोस मात्र चलबाक रहितन्हि तखन ने, हिनका तँ बहुत आगाँ बढ़बाक छन्हि तेँ प्रेम चाही।

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस

आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

आ से सभ ठाम। एकटा हमर संगी छल, एकटा परीक्षामे टॉप केलक तँ बाजल- नै कम्पीट करै छी तँ नै करै छी, आ करै छी तँ टॉप करै छी। ओ गजलकार नै छल जँ रहिते तँ अहिना लिखितए:

बदरी लादल रहै कोनो बात नै

जदि बरसी तँ बरिसात बनि कऽ

आ नजरि-नजरिक फेर आ हाफ ग्लास फुल ई दुनूटा अवधारणा ऐ रूपमे ओ राखै छथि:

नजरि उठा कऽ देखबै तँ खाली बुझाएत ई दुनियाँ

नजरि गरा कऽ देखबै तँ सभ देखाएत ई दुनियाँ

समालोचना आ विरोध दुनूकेँ गजलकार नीक मानै छथि।

पक्षधरसँ राखू अपनाकेँ बचा कऽ

विपक्षीक सभ बातकेँ नै तीत बुझू

महगाइसँ लोक बेकल अछि मुदा तकरा लेल झुमैत मचानक बिम्ब देखू:

महगाइसँ खूने नै हड़िडयो सुखाइए

आब झुलैत मचान सन लगैए लोक

आ ई उलटबासी देखू, बिम्ब नव, भावना शाश्वत:

हम तँ घूर जड़ेलौ गर्मी मासमे

मिझाएल आगिसँ पसाही कहियो

ई कोन गोष्ठी छी जे अछि कोन पत्रिकाक प्रायोजित चिट्ठी छपबाक राजनीति सन, ई रुबाइ देखू:

मोन भए उठल दुखित होहकारीसँ

उठि दर्शक भागल मारामरीसँ

प्रायोजक तँ पथने रहल कान अपन

कर्ता देखार भेला जतियारीसँ

मुदा बाढ़िक विषय जँ मैथिली गजलक अंग नै बनए तँ बुझू जे गजलकार समाजसँ कतिआएल छथि। मुदा से नै अछि।

धार एखन धरि तँ उफानपर अछि

लोक ताका-ताकी करैत बान्हपर अछि

आब पड़ाइन घटल अछि, मिथिलासँ पड़ाइन। बाहरी लोक बिहारीकेँ मजदूर आ श्रमिकक पर्यायवाची मानि लेने छथि। तहूपर गजलकारक कलम चलल अछि।

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब

श्रमिक घटलासँ कंपनी-मालिक लगै बिहारी जकाँ

मुन्नाजीक गजल आ रुबाइ स्वच्छन्द रूपसँ बमकोला जेकाँ बहल अछि। शेरक स्वभाव होइ छै जे जँ ओकरा नेकासँ कहल जाए तँ आह-बाह लोक करिते अछि। मैथिलीमे गजल-रुबाइ जइ तरहेँ प्रसारित भऽ रहल अछि से देखि कऽ यएह लागि रहल अछि जे जतेक ई विधा अपनाकेँ पसारि रहल अछि तइसँ बेशी मैथिली लाभान्वित भऽ पसरि रहल अछि।

--गजेन्द्र ठाकुर 19 मइ 2012

मैथिली गजल शास्त्र

गजलक उत्पत्ति अरबी साहित्यसँ मानल जा सकैत अछि मुदा ओतए ई अरकान माने कोनो उत्तेजक घटनाक वर्णन विशेषक रूपमे छल। मुदा गजल जँ ऐ अरकान सभक समुच्चय अछि तँ से फारसीक देन छी। फेर ओतएसँ गजल उर्दू-हिन्दी आ आब मैथिलीमे आएल अछि।

मायानन्द मिश्र मैथिली गजलकेँ गीतल कहलन्हि, मुदा हम एतए ओकरा गजले कहब आ अरबी फारसीक छन्द-शास्त्रक किछु शब्दावलीक प्रयोग करब। से मैथिली गजल शास्त्रक लेल शब्दावली भेल ‘‘अरूज’’ ।

बहर: उन्नैस टा अरबी बहर होइत अछि। एतेक बहर मोन रखबाक आवश्यकता नै। किएक तँ बहर माने थाट, राग-रागिनी। ऐ उन्नैसटा अरबी बहरक बदला मैथिली लेल नीचाँमे भारतीय संगीत (स्रोत स्व. श्री रामाश्रय झा रामरंग) दऽ रहल छी। आ किएक तँ देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे जे बाजल जाइत अछि सएह लिखल जाइत अछि (ह्रस्व इ सेहो मैथिलीमे अपवाद नै अछि) से ह्रस्व आ दीर्घ स्वरकेँ गनबाक विधि मैथिलीमे भिन्न अछि, सेहो एतए देल जाएत। जइ बहरमे शेरमे आठ (माने शेरक दुनू मिसरामे चारि-चारि) अरकान हुअए से भेल मसम्मन आ जइ बहरमे शेरमे छह (माने शेरक दुनू मिसरामे तीन-तीन) अरकान हुअए से भेल मुसद्दस । एतए मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखबाक वैज्ञानिक आधार फेर सिद्ध होइत अछि कारण गजलमे जे विभक्ति हटाइयो कऽ लिखब तैयो अरकान गनबा काल तेना कऽ गानए पड़त जेना विभक्ति सटल हुअए, विभक्ति लेल अलगसँ गणना नै भेटत।

जइ बहरमे एक्केटा रुक्न हुअए से भेल मफरिद बहर आ जइमे एकटासँ बेशी रुक्न हुअए (रुक्नक बहुवचन अराकान) से भेल मुरक्कब बहर।

दूटा अराकान पुनः आबए तँ ओकरा बहरे-शिकस्ता कहल जाएत।

मिसरा आ शेर: मैथिली गजलमे दू पाँतीक दोहा जे कोनो उत्तेजक घटनाक विशेष वर्णन करैत अछि तकरा शेर (एक पाँती मिसरा) कहल जाइ छै। दुनू पाँती एकट्ठे भेल शेर आ ओइ दुनू पाँतीकेँ असगरे मिसरा कहब। मतलाक दुनू मिसरामे एकरंग काफिया माने तुकबन्दी हएत।

ऊला आ सानी: शेरक पहिल मिसरा ऊला आ दोसर मिसरा सानी भेल। दू मिसरासँ मतला आ दू पाँतीसँ दोहा बनल।

अरकान (रुक्न) आ जिहाफ: आठ टा अरकान (एकवचन रुक्न) सँ उन्नैस टा बहर बहराइत अछि। से अरकान मूल राग अछि आ बहर भेल वर्णनात्मक राग। अरकानक छारन भेल जिहाफ । जेना वरेण्यम् सँ वरेणियम्।

तकतीअ: दू पाँतीक कोनो उत्तेजक घटनाक विशेष वर्णन करैत दोहा जे मिसरा वा शेर अछि आ कएक टा मिसरा वा शेर मिलि कऽ गजल बनैत अछि, तकर शल्य चिकित्सा लेल तकतीअ अछि। से मिसरा कोन राग-रागिनीमे अछि तकर *तकतीअ*सँ बहर ज्ञात होइत अछि ।

मतला (आरम्भ) आ मकता (अन्त): गजलमे पहिल शेर मतला आ आखिरी शेर मकता भेल। मतलाक दुनू मिसरामे तुक एकरंग होइत अछि आ मकतामे कवि अपन नाम दै छथि। मकताक कखनो काल लोप रहत, एकरा सन्दर्भसँ बुझब थिक, मतला सेहो गजलमे नै रहैत अछि मुदा प्रारम्भमे गजलकारकेँ ई रखबाक चाही।

काफिया आ रदीफ: तुकान्त काफियाक बादक वा कफियायुक्त शब्दक पहिनेक अपरिवर्तित शब्द/ शब्द समूहकेँ रदीफ कहैत छिऐ। काफिया युक्त शब्द बदलत मुदा रदीफ नै बदलत। काफिया वर्ण वा मात्राक होइ छै आ रदीफ शब्द वा शब्द समूहक।

दूटा काफियाबला शेर जू काफिया कहल जाइत अछि।

एक दीर्घक बदला दूटा ह्रस्व सेहो देल जा सकैए।

जेना काफिया वर्ण आ मात्राक संग शब्दकेँ सेहो प्रयुक्त करैत अछि तेहिना रदीफ एकर विपरीत शब्द आ शब्दक समूहमे सन्निहित वर्ण आ मात्राकेँ सेहो प्रयुक्त करिते अछि। ऐ तरहेँ पहिल पाँतीमे जँ शब्द समूह रदीफ अछि तँ दोसर पाँतीमे ओकर कोनो एक शब्द दोसर शब्दक अंग भऽ सकैए आ ओइ काफिया युक्त शब्दमे रदीफक उपस्थिति रहि सकैए। दूटा काफियाक बीचमे सेहो रदीफ रहि सकैए, रदीफ ऐ तरहेँ अनुपस्थितसँ लऽ कऽ एक शब्द, शब्दक समूह वा वाक्य भऽ सकैत अछि जे अपरिवर्तित रहत। काफिया युक्त शब्द गजलमे बदलैत रहत। मैथिली व्याकरणक दृष्टिसँ अपरिवर्तित मात्रा अपरिवर्तित अपूर्ण शब्दकेँ बिना रदीफक गजल कहि सकै छिऐ, कारण ई काफियाक मूल विशेषता छिऐ (अपरिवर्तित मात्रा वा अपरिवर्तित अपूर्ण शब्द) ..आ जँ शब्द वा शब्दक अपरिवर्तित समूह दृष्टिसँ देखी तँ एतए रदीफ अनुपस्थित अछि। ओना रदीफ अनुपस्थित सेहो रहि सकैए, शास्त्रीय दृष्टिसँ कोनो दिक्कत नै अछि। से प्रारम्भमे बिना रदीफक गजलक बदला "एक शब्द, शब्दक समूह वा वाक्य" जे अपरिवर्तित रहए, माने रदीफक प्रयोग करू।

बहर आ संगीत

पहिने कमसँ कम ३७ 'की' बला की-बोर्ड लिअ।

ऐमे १२-१२ टाक तीन भाग करू। १३ आ २५ संख्या बला की सा,आ सां दुनूक बोध करबैत अछि। सभमे पाँचटा कारी आ सातटा उज्जर 'की' अछि। प्रथम १२ मंद्र सप्तक, बादक १२ मध्य

सप्तक आ सभसँ दहिन १२ तार सप्तक कहबैछ। १ सँ ३६ धरि मार्करसँ लिखि लिअ। १ आ तेरह सँ क्रमशः वाम आ दहिन हाथ चलत।

१२ गोट 'की' केर सेटमे ५ टा कारी आ सात टा उज्जर 'की' अछि।

प्रथम अभ्यासमे मात्र उजरा 'की' केर अभ्यास करू। पहिल सात टा उजरा 'की' -सा, रे, ग, म, प, ध, नि- अछि आ आठम उजरा की तीव्र- सं - अछि जे अगुलका दोसर सेटक - स - अछि।

वाम हाथक अनामिकासँ स, माध्यमिका सँ रे, इंडेक्स फिंगर सँ ग ,बुढ़बा आँगुरसँ म , फेर बुढ़बा आँगुरक नीचाँसँ अनामिका आनू आ प, फेर माध्यमिकासँ ध, इंडेक्स फिंगरसँ नि, आ बुढ़बा आँगुरसँ सां- ऐ हिसाबसँ बजेबाक प्रयास करू। दहिन हाथसँ १२ केर सेट पर पहिल'की' पर बुढ़बा आँगुरसँ स, इंडेक्स फिंगरसँ रे, माध्यमिकासँ ग, अनामिकासँ म, फेर अनामिकाक नीचाँसँ बुढ़बा आँगुरकेँ आनू आ तखन बुढ़बा आंगुरसँ प, इंडेक्स फिंगरसँ ध, माध्यमिकासँ नि आ अनामिकसँ सां बजाउ। दुनू हाथसँ सां दोसर १२ केर सेटक पहिल उज्जर 'की' अछि। आरोहमे पहिल सेटक सां अछि तँ दोसर सेटक प्रथम की रहबाक कारण सा।

दोसर गप जे की-बोर्डसँ जखन आवज निकलए तँ अपन कंठक आवाजसँ एकर मिलान करू। कनियो नीच-ऊँच नै हुअए। तेसर गप जे संगीतक वर्ण अछि सा,रे,ग,म,प,ध,नि,सां एकरा मिथिलाक्षर/ देवनागरीक वर्ण बुझबाक गलती नै करब। आरोह आ अवरोहमे स्वर कतेक नीच-ऊँच हुअए तकरे टा ई बोध करबैत अछि। जेना कोनो आन ध्वनि जेना ''क'' केँ लिअ आ की-बोर्डपर निकलल सा,रे...केर ध्वनिक अनुसार ''क'' ध्वनिक आरोह आ अवरोहक अभ्यास करू।

ऐ सातू स्वरमे षडज आ पंचम मने सा आ प अचल अछि, एकर सस्वर पाठमे ऊपर नीचाँ हेबाक गुंजाइश नै छैक। सा अछि आश्रय आकि विश्राम आ प अछि उल्लासक भाव। शेष जे पाँचटा स्वर अछि से सभटा चल अछि, मने ऊपर नीचाँक अर्थात् विकृतिक गुंजाइश अछि ऐमे। सा आ प मात्र शुद्ध होइत अछि, आ विकृति भऽ सकैत अछि दू तरहेँ, शुद्धसँ ऊपर स्वर जाएत आकि नीचाँ। यदि ऊपर रहत स्वर तँ कहब ओकरा तीव्र आ नीचाँ रहत तँ ओ कोमल कहाएत। म कँ छोड़ि कऽ सभ अचल स्वरक विकृति होइत अछि नीचाँ, तखन बुझू जे ''रे, ग,ध, नि'' ई चारि टा स्वरक दू टा रूप भेल कोमल आ शुद्ध। म केर रूप सेहो दू तरहक अछि, शुद्ध आ तीव्र। रे दैत अछि उत्साह, ग दैत अछि शांति, म सँ होइत अछि भय, ध सँ दुःख आ नि सँ होइत अछि आदेशक भान। शुद्ध स्वर तखन होइत अछि, जखन सातो स्वर अपन निश्चित स्थानपर रहैत अछि। ऐ सातोपर कोनो चेन्ह नै होइत अछि।

जखन शुद्ध स्वर अपन स्थानसँ नीचाँ रहैत अछि तँ कोमल कहल जाइत अछि आ ई चारिटा होइत अछि, ऐमे नीचाँ क्षैतिज चेन्ह देल जाइत अछि, यथा- <u>रे</u>, <u>ग</u>, <u>ध</u>, <u>नि</u>।

शुद्ध आ मध्यम स्वर जखन अपन स्थानसँ ऊपर जाइत अछि, तखन ई तीव्र स्वर कहाइत अछि, ऐमे ऊपर उर्ध्वाधर चेन्ह देल जाइत अछि। ई एकेटा अछि- मं।

एवम प्रकारे सात टा शुद्ध यथा- सा,रे,ग, म, प, ध, नि, चारिटा कोमल यथा- रे,ग,ध,नि आ एकटा तीव्र यथा मं सभ मिला कऽ १२ टा स्वर भेल।

ऐमे स्पष्ट अछि जे सा आ प अचल अछि, शेष चल वा विकृत।

आब फेर की-बोर्ड पर आउ। ३७ टा की बला की-बोर्ड हम ऐ हेतु कहने छलहुँ, किएक तँ १२, १२, १२ केर तीन सेट आ अंतिम ३७म तीव्र सां हेतु।

सप्तकमे सातटा शुद्ध आ पाँचटा विकृत मिला कऽ १२ टा भेल!

वाम कातसँ १२ टा उजरा आ कारी *की* मंद्र सप्तक, बीच बला १२ टा *की* मध्य सप्तक आ २५ सँ ३६ धरि *की* तार सप्तक कहल जाइत अछि।

आरोह- नीचाँसँ ऊपर गेनाइ, जेना मंद्र सप्तकसँ मध्य सप्तक आ मध्य सप्तकसँ तार सप्तक।

मंद्र सप्तकमे नीचाँ बिन्दु, मध्य सप्तक सामान्य आ तार सप्तकमे ऊपर बिन्दु देल जाइत अछि, यथा-

स, ऱ,ग,म़,प़,ध़,ऩ सा,रे,ग,म,प,ध,नी सां,रें,गं,मं,पं,धं,निं

अवरोह- तारसँ मध्य आ मध्यसँ मंद्रकेँ अवरोह कहल जाइत अछि।

वादी स्वर- जइ स्वरक सभसँ बेशी प्रयोग रागमे होइत अछि। समवादी स्वर- जकर प्रयोग वादीक बाद सभसँ बेशी होइत अछि। अनुवादी स्वर- वादी आ समवादी स्वरक बाद शेष स्वर। वर्ज्य स्वर- जइ स्वरक प्रयोग कोनो विशेष रागमे नै होइत अछि। पकड़- जइ स्वरक समुदायसँ कोनो राग विशेषकेँ चिन्हैत छी।

गायन काल सेहो सभ राग-रागिनीक हेतु निश्चित रहैत अछि। १२ बजे दिनसँ १२ बजे राति धरि पूर्वांग आ १२ बजे रातिसँ १२ बजे दिन धरि उत्तरांग राग गाओल-बजाओल जाइत अछि।

पूर्वांग रागक वादी स्वरमे कोनो एक टा (सा, रे, ग, म, प) होइत अछि। उत्तरांगक वादी स्वरमे (म,प,ध,नि,सा)मे सँ कोनो एक टा होइत अछि। सूर्योदय आ सूर्यास्तक समयमे गाओल जाएबला रागकेँ संधि प्रकाश राग कहल जाइत अछि।

रागक जाति

रागक आरोह आ अवरोहमे प्रयुक्त स्वरक संख्याक आधारपर रागक जातिक निर्धारण होइत अछि।

एकर प्रधान जाति तीन टा अछि। १. संपूर्ण (७) २.षाड़व(६) ३.औड़व(५) आ ऐमे सामान्य स्वर संख्या क्रमशः ७,६,५ रहैत अछि।

आब ऐ आधारपर तीनूकेँ फेँटू।

संपूर्ण-औड़व की भेल? पहिल रहत आरोही आ दोसर रहत अवरोही। कहू आब। (७,५) ऐमे सात आरोही स्वर संख्या आ ५ अवरोही स्वर संख्या अछि। संपूर्णक सामान्य स्वर संख्या ऊपर लिखल अछि(७) आ औड़वक (५) । तखन संपूर्ण-औड़व भेल(७,५)। अहिना ९ तरहक राग जाति हएत। १.संपूर्ण-संपूर्ण (७,७) २.संपूर्ण-षाड़व (७,६) ३.संपूर्ण-औड़व(७,५), ४. षाड़व-संपूर्ण- (६,७), ५. षाड़व- षाड़व - (६,६), ६. षाड़व -औड़व (६,५), ७.औड़व-संपूर्ण(५,७), ८.औड़व- षाड़व(५,६), ९. औड़व- औड़व(५,५)।

थाट:

थाट- एकटा सप्तकमे सात शुद्ध, चारिटा कोमल आ एकटा तीव्र स्वर (१२ स्वर) होइत अछि। ऐमे सात स्वरक ओ समुदाय जेकरासँ कोनो रागक उत्पत्ति होइत अछि, तकरा थाट वा मेल कहल जाइत अछि।

थाट रागक जनक अछि, थाटमे सात स्वर होइत छैक(संपूर्ण जाति)। थाटमे मात्र आरोही स्वर होइत अछि। थाटमे एकहि स्वरक शुद्ध आ विकृत स्वर संग-संग नै रहैत अछि। विभिन्न रागक नामपर थाट सभक नाम राखल गेल अछि। थाटक सातो टा स्वर क्रमानुसार होइत अछि आ ऐमे गेयता नै होइत छैक।

थाट १० टा अछि।

१.आसावरी-सा रे ग म प ध नि २.कल्याण-सा रे ग मं प ध नि ३.काफी-सा रे ग म प ध नि ४.खमाज-सा रे ग म प ध नि ५.पूर्वी-सा रे ग मं प ध नि ६.बिलावल-सा रे ग म प ध नि ७.भैरव-सा रे ग म प ध नि ८.भैरवी-सा रे ग म प ध नि ९.मारवा-सा रे ग मं प ध नि १०.तोड़ी-सा रे ग मं प ध नि

वर्ण:

वर्णसँ रागक रूप-भाव प्रगट कएल जाइत छैक। एकर चारिटा प्रकार छैक।

१.स्थायी-जखन एकटा स्वर बेर-बेर अबैत अछि, ओकर अवृत्ति होइत अछि।

२.अवरोही- ऊपरसँ नीचाँ होइत स्वर समूह, एकरा अवरोही वर्ण कहल जाइत अछि।

३.आरोही- नीचाँसँ ऊपर होइत स्वर समूह, एकरा आरोही वर्ण कहल जाइत अछि।

४.संचारी-जइमे उपरका तीनू रूप लयमे हुअए।

लक्षण गीत: रचना जइमे बादी, सम्बादी, जाति आ गायनक समय केर निर्देशक रागक लक्षण स्पष्ट भऽ जाए।

स्थायी: कोनो गीतक पहिल भाग, जे सभ अन्तराक बाद दोहराओल जाइत अछि।

अन्तरा: जकरा एकहि बेर स्थायीक बाद गाओल जाइत अछि।

अलंकार/पलटा: स्वर समुदायक नियमबद्ध गायन/ वादन भेल अलंकार।

आलाप: कोनो विशेष रागक अन्तर्गत प्रयुक्त भेल स्वर समुदायक विस्तारपूर्ण गायन/ वादन भेल आलाप।

तान: रागमे प्रयुक्त भेल स्वरक त्वरित गायन/ वादन भेल तान।

तानक गति द्रुत होइत अछि आ ऐमे दोबर गतिसँ गायन/ वादन कएल जाइत अछि।

आब आउ तालपर। संगीतक गतिक अनूरूपेँ ई झपताल- १० मात्रा, त्रिताल- १६ मात्रा, एक ताल- १२ मात्रा, कहरवा- ८ मात्रा, दादरा- ६ मात्रा होइत अछि।

गीत, वाद्य आ नृत्यक लेल आवश्यक समय भेल काल आ जइ निश्चित गतिक ई अनुसरण करैत अछि से भेल लय।जखन लय त्वरित अछि तँ भेल द्रुत, जखन आस्ते-आस्ते अछि, तँ भेल विलम्बित आ नै आस्ते अछि आ नै द्रुत तँ भेल मध्य लय।

मात्रा ताल केर युनिट अछि आ ऐसँ लय कँ नापल जाइत अछि।

तालमे मात्रा संयुक्त रूपसँ उपस्थित रहला उत्तर ओकरा विभाग कहल जाइत अछि- जेना दादरामे तीन मात्रा संयुक्त रहला उत्तर २ विभाग।

तालक विभागक नियमबद्ध विन्यास अछि छन्द आ तालक प्रथम विभागक प्रथम मात्रा भेल सम आ एकर चेन्ह भेल + वा x आ जतय बिना तालीक तालकँ बुझाओल जाइत अछि से भेल खाली आ एकर चेन्ह अछि ० ।

ओ सम्पूर्ण रचना जइसँ तालक बोल इंगित होइत अछि, जेना मात्रा, विभाग,ताली, खाली ई सभटा भेल ठेका।

चेन्ह- तालीक स्थान पर ताल चेन्ह आ संख्या। सम + वा x खाली ०

ऽ अवग्रह/बिकारी

- एक मात्राक दू टा बोल

- एक मात्राक चारिटा बोल

एक मात्राक दूटा बोलकेँ धागे आ चारि टा बोलकेँ धागेतिट सेहो कहल जाइत अछि।

तालक परिचय

ताल कहरबा

४ टा मात्रा, एकटा विभाग, आ पहिल मात्रा पर सम।

धागि नाति नक धिन।

तीन ताल त्रिताल

१६ टा मात्रा, ४-४ मात्राक ४ टा विभाग। १,५ आ १३ पर ताली आ ९ म मात्रापर खाली रहैत अछि।

धा धिं धिं धिं

धा धिं धिं धा

धा तिं तिं ता

ता धिं धिं धा

झपताल

१० मात्रा। ४ विभाग, जे क्रमसँ २,३,२,३ मात्राक होइत अछि।

१ मात्रा पर सम, ६ पर खली, ३,८ पर ताली रहैत अछि।

धी ना

धी धी ना

ती ना

धी धी ना

ताल रूपक

७ मात्रा। ३,२,२ मात्राक विभाग।

पहिल विभाग खाली, बादक दू टा भरल होइत अछि।

पहिल मात्रापर सम आ खाली, चारिम आ छठमपर ताली होइत अछि।

धी धा त्रक

धी धी

धा त्रक

ह्रस्व-दीर्घ गणना

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रिक आ वार्णिक। वेदमे वार्णिक छन्द अछि।

वार्णिक छन्दक परिचय लिअ। ऐमे अक्षर गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नै गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि।द्विमानक कोनो अक्षर नै होइछ। मुख्यतः तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-० २. संयुक्त अक्षर-१ ३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू :-

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+३+१=२० मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू ; पश्चात्=२ मात्रा ; आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२ मात्रा ; आब चारिम उदाहरण देखू स्क्रिप्ट=२ मात्रा

छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए । मुदा ऐसँ ई नै बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद मे परिगणित होइत अछि - जेना यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना- वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः।

आजुक नव कविताक संग हाइकू/ क्षणिका लेल मैथिली भाषा आ संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपिमे वएह स्वर आ *कचटतप* व्यञ्जन विधान अछि, जइमे जे लिखल जाइत

अछि सएह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व ‘‘इ’’ एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नै अछि- यथा ’अछि’ ई बाजल जाइत अछि अ, ह्रस्व ’इ’, छ वा *अ इ छ*। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल हाइकू लेल मैथिली उपयुक्त भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि मुदा की इंग्लिशमे संधि नै अछि? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवाड्र्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवाड्र्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधारपर संधिक निअम बनओलन्हि मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नै होइत छै -आइ एम कँ ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि- मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कऽ लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि।मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द ।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि।

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती; शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतए छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कऽ सेहो अक्षर पूर कऽ सकैत छी।

ए = अ + इ , ओ = अ + उ , ऐ = अ/आ + ए, औ = अ/आ + ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त ‘गुरु’ आ ‘लघु’ छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ ; ई पाँच ह्रस्व आ आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ ; ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ ‘गुणिताक्षर’ बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का ।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक ‘अक्षर’ कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नै मानल जाइत अछि- जेना ‘अवाक्’ शब्दमे दू टा अक्षर अछि; अ, वा ।

"* ऐमे एकटा अपवाद अछि ।"म्ह" आ "न्ह" केँ संग एहन नियम नै लगैत अछि ।"--- मैथिली लेल ई निअम नै छै (हिन्दीमे ई निअम छै, आ किछु मैथिली लेखक ओकर अनुकरण कऽ ई लिखनहियो छथि), एतऽ म्ह आ न्ह केर पहिलुका ह्रस्व सेहो सामान्य रूपसँ दीर्घ होइत अछि। जेना छनि आ छन्हि कोनो बच्चासँ बजबा कऽ देखू- छनि मे छ ह्रस्व, मुदा छन्हि मे छ दीर्घ उच्चारित होइए। तहिना जिम्हर मे जि दीर्घ उच्चरित होइए (पद्यमे)। ओना कोनो लेखक जँ एकाध ठाम ओकरा ह्रस्व लऽ रहल छथि तँ ओ पद्यक पाँति अपवाद रूपमे स्वीकृत भऽ सकैए; मुदा निअममे ऐ अपवादक हिन्दीक अनुकरणमे स्वीकृत करबाक आवश्यकता नै। तहिना जिनका मैथिली गायनक अनुभव छन्हि से आर नीक जकाँ बुझि सकैत छथि जे पद्य पहिने पढ़ल आ फेर गाओल जाइ छै, तेँ "हमर स्वर" गेबा काल "हमर" केर "र" दीर्घ हएत, बावजूद ओकर दोसर शब्दक भाग रहलाक बादो- कारण ओकर निर्धारण पद्यक पाँतिक अनुसार लगातार हएत। हँ जँ पद्यक दोसर पाँतिक पहिल अक्षर संयुक्ताक्षर अछि आ पछिला पाँतिक अन्तिम अक्षर ह्रस्व तँ ओ ह्रस्व दीर्घ नै हएत; कारण पाँतिक अन्तक संग गणनाक अन्त भऽ जाइत अछि।

दीर्घ आ बिकारी (संअस्कृतमे अवग्रह, बांग्लामे जफला)मे अन्तर छै। बिकारी ऽ जँ चारियोटा दऽ दियौ तैयो दीर्घ नै हएत.. जेना बच्चाक गीतमे घऽऽऽऽऽऽर- ई ह्रस्व-ह्रस्व भेल। पदक अन्तिम अक्षरकेँ आवश्यकतानुसार ह्रस्वकेँ दीर्घ आ दीर्घकेँ ह्रस्व कएल जा सकैत अछि।

कोनो गजलक पाँती (मिसरा)क वज्न/ वा शब्दक वज्न तीन तरहेँ निकालि सकै छी, सरल वार्णिक छन्दमे वर्ण गानि कऽ; वार्णिक छन्दमे वर्णक संग ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) क क्रम देखि कऽ; आ मात्रिक छन्दमे ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) क क्रम देखि कऽ। जिनका गायनक कनिकबो ज्ञान छन्हि ओ बुझि सकै छथि जे गजलक एक पाँतीमे शब्दक संख्या दोसर पाँतीक संख्यासँ असमान रहि सकैए, मुदा जँ ऊपर तीन तरहमे सँ कोनो तरहेँ गणना कएल जाए तँ वज्न समान हएत। मुदा आजाद गजल बेबहर होइत अछि तेँ ओतऽ सभ पाँती वा शब्दमे वज्न समान हेबाक तँ प्रश्ने नै अछि। ऐ तीनू विधिसँ लिखल गजलमे मिसरामे समान वज्न एबे टा करत। ओना ई गजलकार आ गायक दुनूक सामर्थ्यपर निर्भर करैत अछि; गजलकार लेल वार्णिक छन्द सभसँ कठिन, मात्रिक ओइसँ हल्लुक आ सरल वार्णिक सभसँ हल्लुक अछि, मुदा गायक लेल वार्णिक छन्द सभसँ हल्लुक, मात्रिक ओइसँ कठिन, सरल वार्णिक ओहूसँ कठिन आ आजाद गजल (बिनु बहरक) सभसँ कठिन अछि।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर ‘लघु’ मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओइ अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। ऐ मे अ आ स दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओइ युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि:- १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओलापर उत्पन्न होइत अछि)।

१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नै अछि। २. उदाताात्तर- कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि। ३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ।नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ। ४. अनुदाताात्ततर- कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि। ५. स्वरित- जइमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, ऐमे। ६. अनुदाक्तानुरक्तस्वरित- जइमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ। ७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक,तानक उत्पत्ति होइत अछि।

१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत अछि।तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि।आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एकरा प्रकृतिगण कहैत छी। २.उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कऽ क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण कऽ उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२,३, आ ४ मंत्रक समूह) मे ऐ लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लयपर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।

उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव प्रस्तोतर द्वारा, उद्गीत उदगातर द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कय गाओल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं,हुं,हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।

हाथक मुद्रा- हाथक मुद्रा १.१.आँठा(प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. आँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. आँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. आँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. आँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट आँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद।

ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थलपर गाओल जाइत छल। आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाओल जाइत छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान ऐ विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थानपर गाओल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १.स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९

सात टा स्वर सा,रे,ग,म,प,ध,नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य, मन्द, तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।

ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ ऐ सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि विशेषण-विपर्यय।

वेदपाठ-

१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

अग्निमीळे पुरोहितं यघ्यस्यदेवम्त्विजम।होतारंरत्न धातमम्।

२. पद पाठ- ऐमे प्रत्येक पदकें पृथक कऽ पढ़ल जाइत अछि।

३. क्रमपाठ- एतऽ एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कए पाठ कएल जाइत अछि।

४. जटापाठ- ऐमे जँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम ऐ रूपमे हएत। कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ-ऐ मे उपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप हएत- कख,खक,कखग,गखक,कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।

साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकेँ ध्यानमे रखैत घटाओल, बढ़ाओल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकेँ ओग्नाय। २. विश्लेषण- शब्द/पदकेँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकेँ खिंचनाइ/अधिक मात्राक बराबड़ बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ।५. विराम- शब्दकेँ तोड़ि कऽ पदक मध्यमे

‘यति’। ६. स्तोभ-आलाप योग्य पदकेँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा ‘हाउ’ ‘राइ’ जोड़ैत छथि। राणानीय शाखा ‘हावु’, ‘रायि’ जोड़ैत छथि।

मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नै अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत छल। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।

५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।

६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।

७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।

यदि अक्षर पूरा नै होइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।

(अ) वरेण्यम् केँ वरेणियम् स्वः केँ सुवः।

(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकेँ अलग कए लेल जाइत अछि।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

अहू प्रकारेँ नै पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।

यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट्(२६)।

ॐ भूर्भुवस्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहैत छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतए आध्यात्म चेतना, अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक

भाषामे रूप देल गेल अछि। ओना ओइ समएमे सेहो सम्मिलित रूपेँ ऋचा पाठ करैबलाकेँ बेङ सन टर्र-टर्र करैबला (अथर्ववेदमे) कहल गेल छै, माने गायनमे असहमतिक स्वरक स्वीकृति छलै।

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ केर हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नै होइत अछि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि- जेना छान्दोग्य उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क॑) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध र् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) केर प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द' (दऽ केर बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओइ फाँटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा ''आ''कार क बाद बिकारीक आवश्यकता नै अछि।

जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जइमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

पहिने स्वरक वर्णन दैत छी- जइ वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नै रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जइमे बाजैमे एक मात्राक समय लागय से भेल ह्रस्व, जइमे दू मात्रा समय लागल से भेल दीर्घ आ जइमे तीन मात्राक समय लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ ऌ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहैत छलाह।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहैत छलाह।

ऌ दीर्घ नै होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नै होइत अछि।

अ इ उ ऋ ऐ सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। ऌ केर ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (ऌ३) तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू

दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ ऐ चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कऽ २२ टा स्वर।

ऐ सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तँ उदात्त कहल जाइत अछि। नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जइ अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तट पर बनबाओल, एतए इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ 'दात्त' आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नै भेलोपर स्वरमे भेद अछि। ऐसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करैत छलाह।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकैत छी- जेना ऐमे अन्तिम स्वरक तीव्रस्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आब व्यञ्जनपर आउ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् ष् स्

ह्

य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।

एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।

ई दुनूटा स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।

विसर्जनीय मूल वर्ण नै अछि, वरन् स् वा र् केर विकार थीक। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।

अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।

उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।

कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्त्रुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)

पञ्चम वर्ण आगाँ रहलापर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।

यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।

अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय केर उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।

इ ई चवर्ग य श केर उच्चारण तालुमे होइत अछि।

ऋ ॠ टवर्ग र ष केर उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।

ऌ तवर्ग ल स केर उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।

उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय केर उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।

व केर उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठ केर सहायतासँ होइत अछि।

ए ऐ केर उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।

ओ औ केर उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।

य र ल व अन्य व्यञ्जन जेकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नै करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ ऐमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नै होइत अछि।

क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।

सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु, नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।

अनुस्वार आ यम केर उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण ऐ सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् केर उच्चारण नै हेबाक चाही।

जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यएह गूँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।

श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल ‘‘अघोष’’ , आ नाद प्रकृतिक भेल ‘‘घोषवान्’’। जइ वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि ‘‘अल्पप्राण’’ आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल ‘‘महाप्राण’’।

कचटतप केर पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगहि कचटतप केर पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष।स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

तँ आब लिखू मैथिली गजल। कविता, अकविता, गद्य-कविता, पद्य सभ लेल तर्क उपलब्ध अछि। से मैथिली गजल सेहो अनिवार्य रूपमे बहर (छन्द) मे सरल-वार्णिक, वार्णिक आ मात्रिक छन्दमे कहल जएबाक चाही। जेना सोरठा, चौपाइ छै तहिना गजल छै। उर्दूमे बे-बहर आजाद गजलक नामसँ प्रयास भेलै। कहबाक आवश्यकता नै जे ओ नै चललै। ५३९ ई.सँ अरबीमे बहर युक्त गजल आइ धरि लिखल जा रहल छै, फारसी आ उर्दूमे सेहो बिना बहरक गजल नै होइ छै। गजलमे भगवान धरिक मजाक उड़ाओल जाइत छै, ओइ अर्थमे ओ उदार छै मुदा बहरक मामिलामे ओ बड़ड कट्टर छै, आ ई कट्टरता ने अरबीमे गजलकेँ कम केलकै आ ने उर्दूफारसीमे, मात्रा मिलान आ सहज प्रवाह गजलमे एकटा रीतियेँ होइ छै, आ से ओकर विशेषता छिऐ, नै तँ फेर ई नज्म भऽ जेतै।

मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देश: *(बोल्ड कएल रूप ग्राह्य):-*

*दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम , मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य **श**मे जीह तालुसँ , **ष**मे मूर्धासँ आ दन्त **स**मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे **ष** केँ वैदिक संस्कृत जकाँ **ख** सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित*

होइत अछि आ ण ड़ जकाँ (यथा संयोग आ गणेश **संजोग** आ **गड़ेस** उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

अछि- अ इ छ **ऐछ (उच्चारण)**

छथि- छ इ थ छैथ **(उच्चारण)**

पहुँचि- प हुँ इ च **(उच्चारण)**

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ केँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ केँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककेँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि।

फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।

उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइव http://www.videha.co.in/ पर उपलब्ध अछि। फेर **केँ** / **सँ** / **पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ** / **कऽ** हटा कऽ। **ऐमे सँ** मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ जेना **छहटा** मुदा **सभ टा**। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नै। घरबलामे **बला** मुदा घरवालीमे **वाली** प्रयुक्त करू।

रहए- **रहै** मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास **रहै** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्ना ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत **रहए**।

छलै, छलए मे सेहो ऐ तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

*संयोगने- (उच्चारण **संजोगने)***

कँ/ कऽ

*केर- **क** (**केर** क प्रयोग गद्यमे नै करू , पद्यमे कऽ सकै छी।)*

*क (जेना रामक) **रामक** आ संगे (उच्चारण **राम के** / **राम कऽ** सेहो)*

सँ**- सऽ **(उच्चारण)

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

कँ जेना रामकँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ , तऽ , त , केर (गद्यमे) ऐ चारू शब्द सबहक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थँ प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना, के कहलक? विभक्ति "क"क बदला एकर प्रयोग अवांछित।

*नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ, नइं ऐ सभक उच्चारण आ लेखन - **नै***

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नै)।

राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछैले/ *पोछै लेल/* ***पोछए लेल***

पोछैए/ पोछए/ *(अर्थ परिवर्तन)*

पोछए/ पोछै

ओ लोकनि (हटा कऽ, ओ मे बिकारी नै)

ओइ*/ ओहि*

ओहिले/ ओहि लेल/ ओही लऽ

जएबेँ/ बैसबेँ

पँचभइयाँ

देखियौक*/ (देखिऔक नै- तहिना अ मे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)*

जकाँ */ जेकाँ*

तँइ/ ***तैँ/***

होएत / ***हएत***

नञि/ नहि*/ नँइ/ नइँ/ नै*

सौँसे/ सौंसे

बड़ */* ***बड़ी*** *(झोराओल)*

गाए (गाइ नहि), मुदा गाइक दूध (गाएक दूध नै।)

रहलौँ/ पहिरतैँ

हमहीं/ अहीं

*सब - **सभ***

***सबहक** - सभहक*

***धरि** - तक*

***गप**- बात*

***बूझब** - समझब*

***बुझलौं/ समझलौं/** बुझलहुँ - समझलहुँ*

हमरा आर - हम सभ

***आकि**- आ कि*

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नै)

***होइन**/ होनि*

***जाइन** (जानि नै, जेना देल जाइन) मुदा **जानि**-बूझि (अर्थ परिवर्तन)*

पइठ/ जाइठ

***आउ/ जाउ/** आऊ/ जाऊ*

*मे, कैं, सँ, पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेसी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकैं सटाऊ। जेना **ऐमे सँ** ।*

***एकटा , दूटा** (मुदा **कए टा**)*

*बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना **दिअ, आ**/ दिय' , आ', आ नै)*

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison

d'etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

अइमे, एहिमे/ ***ऐमे***

जइमे*, जाहिमे*

एखन/ ***अखन/*** *अइखन*

कैँ *(के नहि)* ***मे*** *(अनुस्वार रहित)*

भऽ

मे

दऽ

तैँ *(तऽ, त नै)*

सैँ *(सऽ स नै)*

गाछ तर

गाछ लग

साँझ खन

जो (जो go, करै जो do)

तै/तइ *जेना- तै दुआरे/ तइमे/ तइले*

जै/जइ *जेना- जै कारण/ जइसँ/ जइले*

ऐ/ अइ *जेना- ऐ कारण/ ऐसँ/* ***अइले****/ मुदा एकर एकटा खास प्रयोग- लालति कतेक दिनसँ कहैत रहैत* ***अइ***

लै/लइ *जेना लैसँ/ लइले/ लै दुआरे*

लहँ/ ***लौं***

गेलौं/ लेलौं/ लेलँह/ *गेलहुँ/ लेलहुँ/ लेलँ*

जइ*/ जाहि/* ***जै***

जहिठाम/ जाहिठाम/ ***जइठाम/ जैठाम***

एहि/ ***अहि/***

अइ ***(वाक्यक अंतमे ग्राह्य)*** */* ***ऐ***

अइछ/ ***अछि/*** *ऐछ*

तइ*/ तहि/* ***तै/*** *ताहि*

ओहि/ ***ओइ***

सीखि/ ***सीख***

जीवि/ जीवी/ ***जीब***

भलेहीं/ ***भलहिं***

तैं/ *तँइ/* ***तँए***

जाएब*/ जएब*

लइ/ ***लै***

छइ/ ***छै***

नहि/ ***नै****/ नइ*

गइ/ ***गै***

छनि/ छन्हि *...*

समए *शब्दक संग जखन कोनो विभक्ति जुटै छै तखन समै जना समैपर इत्यादि। असगरमे* ***हृदए*** *आ विभक्ति जुटने हृदे जना हृदेसँ, हृदेमे इत्यादि।*

जइ*/ जाहि/* ***जै***

जहिठाम/ जाहिठाम/ ***जइठाम****/ जैठाम*

एहि/ अहि/ अइ/ ***ऐ***

अइछ/ ***अछि****/ ऐछ*

तइ/ तहि/ ***तै****/ ताहि*

ओहि/ ***ओइ***

सीखि/ ***सीख***

जीवि/ जीवी/ ***जीब***

भले/ भलेहीं/ ***भलहिं***

तैं*/ तँइ/* ***तँए***

जाएब*/ जएब*

लइ/ ***लै***

छइ/ ***छै***

नहि/ ***नै****/ नइ*

गइ/ ***गै***

छनि/ छन्हि

चुकल अछि/ ***गेल गछि***

लिखू मैथिली गजल:

५ सँ १० टा शेर मोटामोटी एकटा गजलक निर्माण करत। मुदा कोनो ५-७ टा शेरकेँ एकक बाद दोसर लिख देबै तँ गजल नै बनि जाएत।
ऐमे दू-चारिटा गपपर ध्यान देमए पड़त।

जेना वर्ड डोक्युमेन्टमे जस्टीफाइ कएलासँ पाँतिक आदि आ अन्तमे एकरूपता आबि जाइ छै तहिना यदि शेरक दुनू पाँती आ गजलक सभ शेरमे बिनु जस्टीफाइ केने पाँतिक आदि आ अन्तमे एकरूपता रहए तँ कहल जाएत जे ओ एकहि बहरमे अछि आ ऐ तरहक शेरक समुच्चय एकटा गजलक भाग हेबाक अधिकारी हएत

मैथिलीक सन्दर्भमे वार्णिक छन्दक गणना पद्धति माने

हलंतयुक्त अक्षर-०

संयुक्त अक्षर-१

अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक; से उपयोग कएल जाए आ औ आधारपर १९ बहरक बदला छोट-मझोला आ पैघ आकारक पाँतिक उपयोग कएल जाए; नामकरणक कोनो आवश्यकता नै। संगहि गजलक पहिल शेरक दुनू पाँतीक अन्तमे आ शेष शेरक दोसर पाँतीक अन्तमे एक वा एकसँ बेशी शब्दक समूह दोहराओल जाए **(रदीफ)** सेहो आवश्यक। ओना बिनु रदीफक सेहो गजल कहि सकै छी-एक्के भावपर सेहो गजल कहि सकै छी, बिनु मतलाक आ बिनु मकताक (लोक तँ मकतासँ सेहो गजलक प्रारम्भ करै छथि) सेहो गजल लिख सकै छी- , मुदा ई सभ अपवादे स्वरूप, आ अपवाद तँ अपूर्ण रहिते अछि। मतला एकसँ बेशी सेहो भऽ सकैए। गजलक कोन शेर हुस्न-ए-गजल (सभसँ नीक शेर) अछि तइमे ओइ गजलक विभिन्न समीक्षकक मध्य मतभिन्नता रहि सकैत अछि। फेर काफिया ओना तँ गजलक सभ शेरमे रहै छै (रदीफक पहिने) आ काफिया युक्त शब्द बदलै छै (एकाध बेर पुनः प्रयोग कऽ सकै छी) मुदा ध्यानसँ देखलापर लागत जे तुक मिलानीक दृष्टिएँ ओहूमे शब्दक आरम्भ-मध्य-आखिरीक किछु अक्षर नै बदलै छै। माने लय रहबाके चाही।

आब आउ किछु गजल सुनी:

१

सबसबाइत गप्प छल तकैत हमरापर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द हमरापर)**

आबैत छलए खौंझाइत आ सेहो ओकरापर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द ओकरापर)**

होएत हँसारथि की रहि जाएत चुकड़िऔने ओ मोन मारि **(२३ वार्णिक मात्रा)**

बाजत नै मुँह फुलौने, रहत मुदा मोनपर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द मोनपर)**

ईह कहलकै जे, मोने-मोन प्रसन्न अछि ओ मारने गबदी **(२३ वार्णिक मात्रा)**

बुझैए सभ हमहीं बुझै छी, नियारे-भासपर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द नियारे-भासपर)**

माने तोहूँ आ तोहर बापो हमर सार सम्बन्ध फरिछा देबौ **(२३ वार्णिक मात्रा)**

गप्पी छथि ! मुँह घुमेने देखैए कोना मचानपर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द मचानपर)**

बुझै सभटा छी से नै जे नै बुझै छी मुदा मोना कहैए साइत **(२३ वार्णिक मात्रा)**

बड़बड़ाइए बाइमे, माने अछि ओ स्वयम् पर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द स्वयम् पर)**

"ऐरावत" बुझैत बुझि गेल छी ई जे सृष्टिक पहिलुके राति **(२३ वार्णिक मात्रा)**

सभ चरित्र रहल देखैत, एक-दोसरापर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द एक-दोसरापर)**

आब मैथिली गजलक किछु कठिनाह विषएपर आबी।

कठिनाह विषए किछु विविधता आनत आ मैथिलीक परिप्रेक्ष्यमे नूतनता सेहो, मुदा ई ततेक कठिनाह सेहो नै अछि।

वैदिक आ मैथिली छन्दक गणना अक्षरसँ होइत अछि से तँ कहिये गेल छी, गुरु-लघुक विचार ओतए नै भेटत। मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लौकिक संस्कृत आ हिन्दीसँ प्रभावित छथि मुदा गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक शब्दावलीमे ढेर रास शब्द भेटत जे वैदिक संस्कृतमे अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै, तँ कम दूषित आ खाँटी मैथिली भाषा हुनके लोकनिक अछि आ तँ छन्दक गणना अक्षरसँ करबाक आर बेशी आवश्यकता अछि।

गायत्री-२४ अक्षर

उष्णिक्- २८ अक्षर

अनुष्टुप् ३२ अक्षर

बृहती- ३६ अक्षर

पङ्क्ति- ४० अक्षर

त्रिष्टुप्- ४४ अक्षर

जगती- ४८ अक्षर

शूद्र कवि ऐलुष आ आन गोटे द्वारा रचित ऋक् वेद मे गायत्री, त्रिष्टुप् आ जगतीक छन्द सर्वाधिक परिमाणमे भेटैत अछि, से अही तीनूपर विचारी।

गायत्री: ई चारि प्रकारक होइत अछि- द्विपदी, त्रिपदी, चारि पदी आ पाँचपदी। चारि पदी मे ८-८ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्णविराम दऽ सकै छी, माने एक गायत्री शेर तैयार। ओना ऐठाम हम स्पष्ट करी जे गायत्री मंत्र नै छंद अछि। लोक जकरा गायत्री मंत्र कहैत छैक ओ सविता मंत्र छी जे गायत्री छंदमे कहल गेल अछि आ सेहो तखन जखन स्वकेँ सुवः आ वरेण्यम् केँ वरेणियम् कहलजाए।

त्रिष्टुप्: चारि पद, ११-११ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्णविराम दऽ सकै छी। माने एक त्रिष्टुप् शेर तैयार।

जगती: चारि पद १२-१२ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्णविराम दऽ सकै छी। माने एक जगती शेर तैयार।

आब जेना पहिने कहल गेल अछि जे गायत्रीमे एक-दू अक्षर कम वा बेशी सेहो भऽ सकैत अछि माने २२ सँ २६ अक्षर धरि, से गायत्रीक प्रकार भेल- विराड् गायत्री भेल- २२, निचृद् गायत्री भेल- २३, भुरिग् गायत्री भेल- २५, आ स्वराड् गायत्री भेल २६ अक्षरक। तँ निअमक अन्तर्गत भेट गेल ने छूट आ स्वतंत्र भऽ गेल ने मैथिली गजल। गजलमे पाँतीक अन्तमे पूर्ण विराम दैयो सकै छी आ छोड़ियो सकै छी।

फारसीक काव्यशास्त्रक हिन्दुत्वीकरणक संबंधमे हमरा नै बुझल अछि आ मौलिक गजल रचनामे कोना हिन्दुत्व आनल जाए सेहो हमरा नै बुझल अछि। काव्यकेँ "हिन्दु" आ "विधर्मी" शब्दावलीसँ दूर राखल जाए सएह नीक, हँ "मैथिली गजल" शब्दक प्रयोगमे हमरा कोनो आपत्ति नै आ तकरा हिन्दुत्वीकरण मानल जाए तँ हमर कोनो दोख नै।
जतेक सौँसे विश्वमे मिला कऽ कवि/ काव्यशास्त्री भेल हेताह ओइसँ बेशी कवि/ काव्यशास्त्री अरबी-फारसीमे भेल छथि।
मैथिली भाषामे गजल जे हम लिखी तँ छन्दशास्त्रक अनुसार लिखी, आ से छन्दशास्त्र हम अरबी-फारसीक प्रयुक्त करी, मुदा ओइ प्रयासक अतिरिक्त ऋगवैदिक छन्दशास्त्र टगण-मगणसँ बेशी वैज्ञानिक आ सरल छै आ ऐसँ मैथिली गजल लिखबा-पढ़बा-गुनगुनएबामे लोककेँ सुविधा हेतैक से हमर विश्वास अछि। वेदक समएमे हिन्दू शब्दक जन्मो नै भेल रहै से वैदिक छन्दशास्त्रक प्रयोग मात्र, मैथिली गजलकेँ हिन्दू बना देतै से हमरा नै लगैए।

हम "मैथिली हाइकूशास्त्र" लिखने रही तहिया सेहो हमरा लग "वार्णिक" आ "मात्रिक"मे एकटा चयन करबाक छल, आ तहियो हम "वार्णिक" गणना पद्धतिक चयन कएलहुँ। "शिन्टो" धर्मावलम्बी जापानी (किछु बौद्ध सेहो) सभक लिपि आ तकर छन्दशास्त्र जे प्रयोग करी तँ मैथिलीमे हाइकू कहियो नै लिखल जा सकत; कारण ओकर काव्यशास्त्र, जापानी भाषा आ ओकर कएक तरहक लिपिक सापेक्ष छै आ ओइमे धर्म अबितो छलै (टनका/ वाका- ईश्वरक आह्वाण)। अरबी-फारसी गजल मुदा धर्म निरपेक्ष छै, मुदा ओकर काव्यशास्त्र ओकर अपन भाषा-लिपि लेल छै। से भाषा-निरपेक्ष ने जापानी काव्यशास्त्र भऽ सकै छै आ ने अरबी-फारसी काव्यशास्त्र।

आउ आब गजल कही:

गायत्री गजल

छै सुनि देखि रहल , छै ककरासँ ककर

कोन गपक सहल, छै ककरासँ ककर

हे अछि देखि सहल, अछि की टीस उठल

रे चिन्हलकेँ चीन्हल, छै ककरासँ ककर

ई सभ सत्यक संगी , सभ छै भेष बदलि
के अछि मुँह फेरल, छै ककरासँ ककर

हे बिजुलौका देखियौ, छै उकापतङ्ग जेकाँ
की माथ सुन्न कएल, छै ककरासँ ककर

अगिनवान मैथिली, की सुखि जाएत धार
कहै किदनि कहल, छै ककरासँ ककर

करू कोन समझौता, करू कोन निपटारा
के ललकारि रहल, छै ककरासँ ककर

के अछि उठा रहल, अछि के झुका रहल
के अछि बाजि रहल, छै ककरासँ ककर

ऐरावत छै चकित, अछि की सोचि रहल
ई कर्णधार बँचल, छै ककरासँ ककर

त्रिष्टुप् गजल

अछि चोरबा संग देखू ठाढ़, देखैत रहलि डकलिलामी
नहि होएत आब बरदाश्त, डाक- डकौअलि डकलिलामी

ई सुरकि रहल छल आब, नै भेटत आब फेर की खाद्य
अछि कोना भेल ई असम्हार, डघरब चलि डकलिलामी

कोना तड़फड़िया सभ अछि, डगहर थस लेने की बात
नञि निचेन भेल अछि बाप, ओ मुहानी आनि डकलिलामी

औ बुझारति होएत फेरसँ, भेल की ई ढिंढमदरा आब
ई ढाबुस बेंगक अछि ठाढ़, ई ककर चालि डकलिलामी

पुक्की पाड़ि के रहल पुकारि, बहीर बनि भने अछि ठाढ़
नहि ककरो सुनब पुकार, ई हथौड़ा मारि डकलिलामी

कहू यौ किएक छी हूस ठाढ़, ऐरावतक फोंफक अबाज
नहि किए बनल बौक ठाढ़ , चिपैले सुआदि डकलिलामी

जगती गजल

भगवानक बनाओल ई गाम, जखन अछि हो भोर बकटेंट
नहि तँ भेटत की कोनो विराम, अछि भेल कोना भेर बकटेंट

औ की नहि भेटत आबहु त्राण, छी सुनल सएह सरनरिया
कोना मिरदडिया देलक थाप, ई मिरहन्नी शेर बकटेंट

जाए रहल पछताए रहल, नहि बाट कोनो सुझाए रहल
अछि गोलहत्थी खाइत ई छौड़ा, पँचागि ई बिहटार बकटेंट

मोचण्ड बूड़ि रौदमुँहा होइत, साँझक लकधक बैसि रहल
धमधूसर सभ बेर लगौरी, आनि रहल गनौर बकटेंट

गदा रे गुइँ गुइँ मार गदा रे, गदा रे पुइँ पुइँ, मुक्का मारल
गताखोरक छै ई हँज चलल, गतात संग पथार बकटेंट

बेराम पड़ब नै आउ सकल, बेपर्द करब बेदरंग भेल
ऐरावत चीन्हि बेपारी सभकेँ, करू भाषाक व्यापार बकटेंट

मैथिली आ संस्कृतमे मात्र तुकान्त (अन्तक तुक) लयक निर्माण नै करै छै, मुदा करितो छै। तुक मिलानीक दृष्टिएँ ओहूमे शब्दक आरम्भ-मध्य-आखिरीक किछु अक्षर नै बदलै छै। वेद-ए-मुकद्दस मे वेदक विषएमे अली सरदार जाफरी लिखै छथि- *शुऊरे-इन्साँ के आफताबे-अजीम की अव्वलीं शुआएँ*- मनुष्यक चेतनाक पहिल किरिण।

जेना तमिलमे संस्कृत शब्दक आ तुर्कीमे अरबी शब्दक बहिष्कारक आन्दोलन चलल तहिना फारसीमे (फारसक प्राचीन ग्रन्थ अवेस्ता आ वैदिक-संस्कृतक मध्य समानता द्रष्टव्य) सेहो अरबी शब्दक बहिष्कार आ तकरा स्थानपर आर्य भाषा-समूहक शब्दक ग्रहणक आन्दोलन चलल अछि। मैथिलीमे सेहो हिन्दी-उर्दू शब्दक बहुलतासँ प्रयोग भाषाक अस्तित्वपर संकट जेकाँ अछि, खास कऽ मिथिलाक्षरक मैथिल ब्राह्मण संप्रदाय द्वारा दाह-संस्कार कएलाक बाद।

आब उर्दू गजलपर आबी। १८९३ ई.मे हाली मुकद्दमा-ए-शेर-ओ-शायरी लिखलन्हि जे हुनकर काव्य-संग्रहक भूमिका छल। ओइ काल धरि उर्दू गजलक विषय आ रूप दुनू मृतप्राय छल से हाली विषय-परिवर्तनक आह्वान तँ केबे केलन्हि संगहि काफिया आ रदीफक सरल स्वरूपक ओकालति कएलन्हि। ओ लिखै छथि जे एकाधे टा शेर आइ-काल्हि नीक रहैए आ शेष गजल फारसीक शब्द सभसँ भरि देल गेल शेरक संकलन भऽ जाइए, जइसँ ओकर स्तरहीनतापर लोकक ध्यान नै जाए। से उर्दू गजल धार्मिक कट्टरतापर व्यंग्यक क्षेत्रमे फारसी गजलसँ आगाँ बढ़ि गेल।

संगीत आ गजल गायन

ठाठ कल्याणक अन्तर्गत राग यमनमे त्रिताल १६ मात्रा (दू पाँतिक अनुष्टुप् ३२ अक्षर) क एतए प्रयोग भऽ सकैए। ठाठ बिलावलक अन्तर्गत राग बिलावल एकताल १२ मात्राक होइत अछि, एतए गायत्री-२४ अक्षरक गजलक प्रयोग भऽ सकैए। कारण वार्णिक गणनाक उपरान्त रेघा कऽ गायककेँ कम गाबए पड़तन्हि आ शब्द/ अक्षरक अकाल नै बुझना जाएत।

ई मात्र उदाहरण अछि आ से गायकक लेल, मैथिली गजल लिखनिहारक लेल नै।

मैथिलीमे एखन धरि जे गजल लिखल गेल अछि ओइमे बहरक एकरूपताक कोनो विचार नै राखल गेल अछि। ने से बहर-विचार फारसी काव्यशास्त्रक हिसाबसँ राखल गेल छै आ ने भारतीय काव्यशास्त्रक हिसाबसँ। आ तइ कारणसँ मैथिली गजल सभकेँ ‘‘गजल सन कविता’’ मात्र कहि सकै छिऐ। ओना बहरक एकरूपता गजलकार लोकनि द्वारा गजल लिखलाक बाद एक गजलपर आध घण्टा लगेला मात्रसँ कएल जा सकैए।

गजल

सहस्राब्दीक हारि हमर आ जीत ओकर, नै जातिवादीक सोझाँ होएब लरताङर
भेष बदलि जातिपंथी जीति रहल कवि, ऐलुष नै फेर हम हएब लरताङर

एहि भू मार्गक अछि तँ गप्पे विचित्र सन, प्रकाश आएल अछि भेल अन्हार निवृत्त
मयूरपंखी पनिसोखा उगल छै एखने, इन्द्रक मेघकेँ सोंखि करब लरताङर

बनि बाल बुद्धि हम पुछने आइ छलहुँ, ई सत्य अहिंसाक पथ ई विजयक पथ
जीतल जाइए असत्यक रथ हुनकर, टनकाएब नै फेर होएब लरताङर

रस्ता चलैत छलहुँ दिन राति सदिखन, से भेल जाइत छारन नव रस्ता बनल
छी देखि रहल रस्ताक केंचुली भरिगर, गऽ जाइत आगाँ नहि होएब लरताङर

अबैए ओ सत्यक क्षण कोन विपदा बनि, अछि आएल दौगल ओ सुनझाएल अछि
पोखरिक जाइठपर भेल ठाढ़ छी हम, छछड़बाएब घर नै हैब लरताङर

छनगा पीबि शिव देखि रहल चारूकात, विषहन्त ओ घूमि रहल बनल बसात
तांडव ई अहाँक बुद्धि कहैए से त्रिकटु, तगबाए तकरा नै होएब लरताङर

हे भाइ ऐरावत अछि आइ झूमि रहल, कदैमे करैत ओ कदमताल विकराल
चरखा कत्तिनक टकुआ काटब देखल, नहि कदरियाएब खोभब लरताङर

गजल

बरसातिक ई राति बनल सुखराति हे कालि
करब षोडशोपचार आर दए बलि हे कालि

बाल बसन्त भैया बढ़थु बहिनक अछि आस
आस्तीक करैत भैया लेल सुधियो नहि हे कालि

लाल झिंगुर, लाल सिन्दुर, लाल अड़हुल फूल
ताहूसँ लाल देखल ई दृश्य-देश मिथि हे कालि

स्वप्नक सोझाँ सत्यक नै अछि आब कोनो मोल
पोखड़ि झाँखड़ि सगरि घूमि ई देखलि हे कालि

अमुआ फड़ए लदा लदी डारि लीबि-लीबि जाए
ओकर नम्रतामे कोनो अगुताइ सुनलि हे कालि

ऐरावत गजल सन कविता देखू देलनि ई
मैथिलीक गरिमा एहिठाँ देखू सदति हे कालि

गजल

जाइत-जाइत देखल ओ ठाढ़ आर मेघडम्बर सन छाती
भैयाक पीठ धोबिया पाट हुनकर मेघडम्बर सन छाती

पड़ल फेर अकाल करैत हाक्रोस छथि ओ ठाढ़ भेल कात
छाती धकधक उन्नत्त ठाढ़ि दुआर मेघडम्बर सन छाती

देखल ई चित्कार हम भऽ सोझाँ ठाढ़ देबै ओकरा हुतकारी
संकट प्रहारमे धैर्य अपरम्पार मेघडम्बर सन छाती

देखल हुनका आइ छन्हि मुँह क्लान्त मुदा नहि कोनो बात
कर्तव्यक बिच कोनो विश्राम डगर मेघडम्बर सन छाती

सुनू सुनू भाइ गप भेल असम्हार करू पुकार समधानि
भेल मानवक ई हाल करू दुत्कार मेघडम्बर सन छाती

ऐरावत देखल घुरचालि बनल हथियार ओ लेने जाल
छी तैयो ठाढ़ की हम क्षितिजक पार मेघडम्बर सन छाती

आब किछु शब्दावली देखी।

अरकान :अरकान सामिल पूर्णाक्षर:

अरकान सामिल पूर्णाक्षर: फ ऊ लुन U।। फा इ लुन।U। मफा ई लुन U।।। मुस तफ इ लुन

।।U। फा इ ला तुन ।U।। मु त फा इ लुन UU।U। मफा इ ल तुन U।UU। मफ ऊ ला तु ।।।U

सभ पूर्णाक्षरी घटक मारते रास प्रकार। १० पूर्णाक्षरी(सालिम) अराकानसँ १९ बहर आ से दू प्रकारक: मुफरद बहर माने रुक्नक बेर-बेर प्रयोगसँ।सात सालिम(पूर्णाक्षरी)बहर, संगीत शब्दावलीमे एकरा शुद्ध कहि सकै छी।सभ पाँतीमे २-८ बेर दोहरा कऽ शेरमे ४-१६ रुक्नी बहर बनत।

४ रुक्नक बहर- मुरब्बा ६ रुक्नक बहर- मुसद्दस ८ रुक्नक बहर- मुसम्मन / मुफ़रद(विशुद्ध) आठ रुक्न, छह रुक्न आ चारि रुक्नक सालिम बहर

हजज :-आठ रुक्न म फा ई लुन (U।।।) चारि बेर/ छः रुक्न म फा ई लुन (U।।।) तीन बेर/ चारि रुक्न म फा ई लुन (U।।।) दू बेर

रजज़ आठ रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) चारि बेर/ छः रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) तीन बेर/ चारि रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) दू बेर/

रमल आठ रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) चारि बेर/ छः रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) तीन बेर/ चारि रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) दू बेर

वाफ़िर आठ रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) चारि बेर/ छः रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) तीन बेर/ चारि रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) दू बेर

कामिल आठ रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) चारि बेर/ छः रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) तीन बेर/ चारि रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) दू बेर

मुतकारिब आठ रुक्न फ ऊ लुन (U।।) चारि बेर/ छः रुक्न फ ऊ लुन (U।।) तीन बेर/ चारि रुक्न फ ऊ लुन (U।।) दू बेर

मुतदारिक आठ रुक्न फा इ लुन (।U।) चारि बेर/ छः रुक्न फा इ लुन (।U।) तीन बेर/ चारि रुक्न फा इ लुन (।U।) दू बेर

ऐ सभक मारते रास अपूर्णाक्षरी रूप सेहो।

मुरक्कब बहर: दू प्रकारक अरकानक बेर-बेर अएलासँ १२ सालिम बहर,संगीतक भाषामे मिश्रित। तीन तरहक- ४ रुक्नक बहर, ६ रुक्नक बहर, ८ रुक्नक बहर / मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर १२ टा तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तजब, मज़ारे, मुजतस, खफीफ,बसीत,सरी अ,जदीद, करीब, मुशाकिल

अरकान :मुज़ाहिफ अरकान अपूर्णाक्षर :

मुज़ाहिफ अरकान अपूर्णाक्षर :फ इ लुन UU। मफा इ लुन U।U। फ इ ला लुन UU।। म फा ई लु U।।U मुफ त इ लुन ।UU। फ ऊ लु U।U मफ ऊ लु ।।U मफ ऊ लुन ।।। फै लुन ।। फा । फ अल् U। फ उ ल् U।U फा अ । U फा इ लुन । U । फ ऊ लुन U । ।

मुक्तजब (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):फ ऊ लु U । U फै लुन U । फ ऊ लु U।U फै लुन। ।
मज़ारे (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):मफ ऊ लु । । U फा इ ला तु । U । U म फा ई लु U ।
। U **फा इ लुन। U । / फा इ ला न। U । U**

मुजतस (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):म फा इ लुन U । U । फ इ ला तुन U U । । म फा इ लुन U । U । **फै लुन। ।/ फ इ लुन UU।**
ख़फीफ़ (अपूर्णाक्षरी छः रुक्न):फा इ ला तुन । U । । म फा इ लुन U । U । फै लुन। ।
/ फ इ लुन U U ।

आब एक धक्का फेरसँ मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ विचारपर आउ।

जेना कहल गेल रहए जे अनुस्वार आ विसर्गयुक्त भेलासँ दीर्घ होएत तहिना आब कहल जा रहल अछि जे चन्द्रबिन्दु आ ह्रस्वक मेल ह्रस्व होएत।

माने चन्द्रबिन्दु+ह्रस्व स्वर= एक मात्रा

संयुक्ताक्षर: एतए मात्रा गानल जाएत ऐ तरहेँ:-

क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १

क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

आब पाँती वा पाँति खण्डक अन्तिम वर्णपर आउ।

क्ष= क् + ष= ०+१

त्र= त् + र= ०+१

ज्ञ= ज् + ञ= ०+१

श्र= श् + र= ०+१

स्र= स् +र= ०+१

शृ =श् +ऋ= ०+१

त्व= त् +व= ०+१

त्त्व= त् + त् + व= ० + ० + १

ह्रस्व + ऽ = १ + ०

अ वा दीर्घक बाद बिकारीक प्रयोग नै होइत अछि जेना दिअऽ आऽ ओऽ (दोषपूर्ण प्रयोग)। हँ व्यंजन+अ गुणिताक्षरक बाद बिकारी दऽ सकै छी।

ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+०

दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०

जेना हँसल= १+१+१

साँस= २+१

बिकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य होएत।

जा कऽ = २+१

क् =०

क= क् +अ= ०+१

किएक तँ क कँ क् पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तँ बिकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ स्वरमे एहन आवश्यकता नै अछि।

U- ह्रस्वक चेन्ह

।- दीर्घक चेन्ह

एक दीर्घ । =दूटा ह्रस्व U

आब आउ बहरे मुतकारिबमे एकटा गजल कही:

बहरे मुतकारिब:- सभ पाँतिमे पाँच-पाँच वर्णक संगीत-शब्द चारि बेर ऐ क्रममे:

U । । **अरकान सामिल पूर्णाक्षर**

आब मैथिलीमे विभक्ति सटलासँ कनेक सुविधा अछि, तैयो शब्दक संख्या चारिसँ बेशी राखि सकै छी मुदा ह्रस्व दीर्घक क्रम वएह राखू।

फ ऊ लुन U।।

फ ऊ लुन फ ऊ लुन फ ऊ लुन फ ऊ लुन

फ ऊ लुन फ ऊ लुन फ ऊ लुन फ ऊ लुन

कविवर जीवन झाक नाटक सुन्दर संयोगसँ लेल मैथिलीक पहिल गजल

सुन्दर संयोग चतुर्थ अंकमे लेखक स्वयं (गजल) कहि एकरा सम्बोधित कएने छथि।

(गजल)

आइ भरि मानि लिअऽ नाथ ने हट जोर करू।

देहरी ठाढ़ि सखी हो न एखन कोर करू ॥१॥

हाय रे दैव! इ ककरासँ कहू क्यो न सुनै।

सैह खिसिआइए जकरा कनेको सोर करू ॥२॥

लाथ मानै ने क्यो सभ लोक करैए हँसी।

बाजऽ भूकऽ ले जँ कनेक जकर सोझ ओठ करू ॥३॥

जाइ एखन ने धनी एक कहल मोर करू।

आन संगोर करू एहि ठाम भोर करू ॥४॥

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ रुक्न फ ऊ लुन (U।।) चारि बेर

अनेरे धुनेरे जतेको ठकेलौं

बकैतो ढ़कैतो सुझेलौं घनेरौं

२

बहरे मुतदारिक मुतदारिक आठ रुक्न फा इ लुन (।U।) चारि बेर

बीकि गेलै तँ की जोतबै खेतमे

झीकि लेतै तँ की बोलतै बेरमे

३

बहरे कामिल कामिल आठ रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) चारि बेर

इनसान जे कहबैत छै सकुचा कऽ छै जँ ठकैल यौ

बहरा कऽ जे कहतै जँ नै सहिते तँ छै कमजोर यौ

४

बहरे वाफिर वाफिर आठ रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) चारि बेर

अबै अछि ओ सुनै अछि ओ जँ जाइत छै बसै अछि ओ

कहै अछि जे सुनै अछि ओ जँ खाइत छै ढकै अछि ओ

५

बहरे रमल रमल आठ रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) चारि बेर

झूरझामो भेल छी से बात ने की काटने की

से समेटू से लपेटू आर की की आरने छी

६

बहरे रजज रजज आठ रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) चारि बेर

ऐ ओतऽ की छै केहनो आ की अते की छी अए

नै छै कएलो नै सुनै छै की करै भेटैत-ए

७

बहरे हजज हजज :-आठ रुक्न म फा ई लुन (U।।।) चारि बेर

अबै छै नै सुनै छै नै बहीरो छै बुझै छै से

नरैमे छी कटै की से जजातो छै बुझै छै से

१.आब सामिल अराकानक आठ रुक्नक छः रुक्न - तीन बेर/ आ चारि रुक्न - दू बेरक प्रयोग देखब। ई सभ मुफरद बहर अछि माने रुक्नक बेर-बेर प्रयोग होइत अछि।
२.एकर अतिरिक्त सामिल अराकानक १२ टा मुरक्कब बहर अछि माने दू प्रकारक अरकानक बेर-बेर अएलासँ १२ सालिम बहर, संगीतक भाषामे मिश्रित। ई तीन तरहक अछि:- ४ रुक्नक बहर, ६ रुक्नक बहर, ८ रुक्नक बहर / मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर- १२ टा तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तज़ब, मज़ारे, मुजतस, ख़फीफ, बसीत, सरीअ, जदीद, क़रीब, मुशाकिल।
३.आ तकर बाद सामिल आ मुजाहिफ अराकान दुनूक मेलपेँचसँ बनल १२ टा बहर मख्बून, अखरब, महजूफ, मक्तूअ, मक्बूज, मुज्मर, मरफू, मासूब, महजूज, मकफूफ, मश्कूल, आ अस्लम बहर।
४.आ ऐमे मात्र मुजाहिफ अराकानसँ बनल बेशी प्रयुक्त चारिटा बहर (मुक्तजब, मजारे, मुजतस आ खफीफ)।

१.आब सामिल अराकानक आठ रुक्नक छः रुक्न - तीन बेर/ आ चारि रुक्न - दू बेरक प्रयोग देखब। ई सभ मुफरद बहर अछि माने रुक्नक बेर-बेर प्रयोग होइत अछि।

बहरे मुतकारिब *छः रुक्न फ ऊ लुन (U।।) तीन बेर*

एके बेरमे जे कएलौं

बड़े भेर भेनँ सुनेलौं

बहरे मुतकारिब *चारि रुक्न फ ऊ लुन (U।।) दू बेर*

बड़ी दूर ठाढ़े

कनी दूर नाचे

बहरे मुतदारिक छः रुक्न फा इ लुन (।U।) तीन बेर

एकरे केलहा केलहीं

तैं अनेरे दुर्गा भेलहीं

बहरे मुतदारिक *चारि रुक्न फा इ लुन (।U।) दू बेर*

काहि काटी एतै

बात बाँटी एतै

बहरे हजज :- छः रुक्न म फा ई लुन (U।।।) तीन बेर

अनेरे भऽ गेलैं ऐ लड़ैले गै

तखैनो जे भऽ जेतै की गमैए गै

बहरे हजज :- चारि रुक्न म फा ई लुन (U।।।) दू बेर

कने बेगार बेमारी

कते की बात सुनाबी

बहरे रजज़ छः रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) तीन बेर

ई जे धरा देखैसँ छै हेतै तँ नै

ई जे घटा घूमैसँ घूमै ने तँ नै

बहरे रजज़ चारि रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) दू बेर

भोरे अएलै कोन गै

सोझे न एलै फोन गै

बहरे रमल छः रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) तीन बेर

की गरीबो की धनीको तैँ सभे छी

की समीपो की कतेको जे घुमै छी

बहरे रमल चारि रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) दू बेर

की कतेको बात भेलै

की जतेको लात खेलै

बहरे वाफ़िर छः रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) तीन बेर

कने ककरा कहेबइ आ बतेबइ की

जते सुनबै तते कहता बतेबइ की

बहरे वाफ़िर चारि रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) दू बेर

करेजक बात छै कतबो

करेजक हाल ई नञि हो

बहरे कामिल छः रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) तीन बेर

अनका कतौ कहबै कने सुनतै कहाँ

सुनि ओ बजौ करतै कने जितबै जहाँ

बहरे कामिल चारि रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) दू बेर

पहिले अनै तखने सुनै

कहबै कते कखनो करै

२.एकर अतिरिक्त सामिल अराकानक १२ टा मुरक्कब बहर अछि माने दू प्रकारक अरकानक बेर-बेर अएलासँ १२ सालिम बहर, संगीतक भाषामे मिश्रित। ई तीन तरहक अछि:- ४ रुक्नक बहर, ६ रुक्नक बहर, ८ रुक्नक बहर / मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर- १२ टा तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तज़ब, मज़ारे, मुजतस, ख़फीफ, बसीत, सरीअ, जदीद, क़रीब, मुशाकिल।

बहरे तवील **फ ऊ लुन U।। मफा ई लुन U।।।**

कहेबै सुनेबै की मुदा जे कहेतै से
सुनेतै उकारो की मुदा जे बजेतै से

बहरे मदीद **फा इ ला तुन ।U।। फा इ लुन।U।**

सूनि बाजू मूँहमे कैकटा छै बातमे
बूझि बाजूमीत यौ कैकटा छै घातमे

बहरे मुनसरेह मुस तफ इ लुन ।।U। मफ ऊ ला तु ।।।U

की की रहै की की भेल कोनो भला कोनो सैह
माँ माँ करी पैघो भेल सेहो जरौ सेहो जैह

बहरे मुक्तजब मफ ऊ ला तु ।।।U मुस तफ इ लुन ।।U।

रामोनाम सेहो उठा रामोनाम सेहो जरा

रामोनाम मोहो लए रामोनाम बातो करा

बहरे मजारे मफा ई लुन U।।। फा इ ला तुन ।U।।

अरे की छी सैह नै की अरे छी छी वैह ने छी

बिसारी की उघारी की अरे की की देब ने की

बहरे मुजतस मुस तफ इ लुन ।।U। फा इ ला तुन ।U।।

नै छै रमा नै रहीमो नै छै मरा नै मरीजो

नै ई कनेको मृतो छै नै ई कनेको जियै ओ

***बहरे खफीफ* फा इ ला तुन ।U।। मुस तफ इ लुन ।।U। फा इ ला तुन ।U।।**

रेख राखू फेकू तँ नै देख लेलौं

सूनि राखू बेरो तँ नै बीति गेलौं

बहरे बसीत मुस तफ इ लुन ।।U। फा इ लुन।U।

की की रहै की भऽ गै की की छलै की भऽ नै

रीतो बितै ने कऽ गै गीतो बितै गाबि नै

बहरे सरीअ मुस तफ इ लुन ।।U। मुस तफ इ लुन ।।U। मफ ऊ ला तु ।।।U

सेहो कने छै ने अते की केहैत

लेरो चुबै छै ने अते की केहैत

बहरे जदीद फा इ ला तुन ।U।। फा इ ला तुन ।U।। मुस तफ इ लुन ।।U।

लेलहेँ ई बेगुणो आ भेलै भने

बेलगो ई नैहरो आ गेलै भने

बहरे करीब मफा ई लुन U।।। मफा ई लुन U।।। फा इ ला तुन ।U।।

चलै छै ई कने बाटो जाइ छै नै

गतातोमे भने कोनो बात छै नै

***बहरे मुशाकिल* फा इ ला तुन ।U।। मफा ई लुन U।।। मफा ई लुन U।।।**

मोदमानी अहोभागी कनी छै की

क्रोध जानी प्रणो खाली बनै छै की

३.आ तकर बाद सामिल आ मुजाहिफ अराकान दुनूक मेलपैंचसँ बनल १२ टा बहर मख्बून, अखरब, महजूफ, मक्तूअ, मक्बूज, मुज्मर, मरफू, मासूब, महजूज, मकफूफ, मश्कूल, आ अस्लम बहर।

मख्बून: बहरे रमल मुसद्दस मख्बून

फा इ ला तुन ।U।। फ इ ला लुन UU।। फ इ ला लुन UU।।

खेल खेला असली ऐ अगबे नै

मिलमिला आँखिगौरो बतहा नै

अखरब: बहरे हजज मुरब्बा अखरब

मफ ऊ लु ।।U मफा ई लुन U।।।

की भेल लटू बूडू

के गेल अत्ते जोडू

महजूफ: बहरे रमल मुसम्मन महजूफ

फा इ ला तुन ।U।। फा इ ला तुन ।U।। फा इ ला तुन ।U।। फा इ लुन । U ।

एनमेनो भेल गेलौ आश आगाँ बीतलौ

सूनि गेलौं नै भगेलौं नाश नारा गीत यौ

मक्तूअ: बहरे मुतदारिक मुसद्दस मक्तूअ

फा इ लुन।U। फा इ लुन।U। फै लुन ।।

कीसँ की भेल छी बाबू

कीसँ की कैल छी आगू

मक्बूज: बहरे मुतकारिब मुसम्मन मक्बूज (एहिमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान)

फ ऊ लुन U । । फ ऊ लुन U । । फ ऊ लुन U । । फ ऊ लु U।U

अरे रे अहाँ जे कहेलौं सिनेह

अरे रे अहाँ जे बजेलौं सिनेह

मुज्मर: बहरे कामिल मुसद्दस मुज्मर (एहिमे सभटा अरकान सामिल)

मु त फा इ लुन	**UU।U।**	**मु त फा इ लुन**	**UU।U।**	**मुस तफ इ लुन**	**।।U।**
अनठयने	*रहबै*	*रहबै*	*हरे*	*हे*	*रोमबै*
अनठयने	*रहबै*	*रहबै*	*अरे*	*हे*	*घूरिऐ*

मरफू: बहरे मुक्तजिब मुसद्दस मरफू

मफ ऊ ला तु	**।।।U**	**मफ ऊ ला तु**	**।।।U**	**मफ ऊ लु**	**।।U**
की	*की*	*रेह*	*की*	*की*	*सैह*	*निंधेस*
की	*की*	*रेह*	*की*	*की*	*यैह*	*निंधेस*

मासूब बहरे वाफिर मुसद्दस (एहिमे सभटा अरकान सामिल)

मफा इ ल तुन	**U।UU।**	**मफा इ ल तुन**	**U।UU।**	**मफा ई लुन**	**U।।।**
अरे	*अनलौं*	*सुहागिन*	*यै*	*अनेरो*	*की*

अरे अनलौं मुहोथरिमे जनेरो की

महजूज: बहरे मुतदारिक मुसम्मन महजूज (एहिमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान)

फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा ।

के रहै सूनि यै ई अहाँकेँ

के रहै कूदि यै ई अहाँकेँ

मकफूफ: बहरे हजज मुसम्मन मकफूफ

मफा ई लुन U।।। मफा ई लुन U।।। मफा ई लुन U।।। म फा ई लु U।।U

अनेरे की अनेरे की धुनेरे की कहेलौं हँ

अनेरे की अनेरे की धुनेरे की कहेलौं हँ

मश्कूल: बहरे रमल मुसम्मन मश्कूल

फा इ ला तुन ।U।। फा इ ला तुन ।U।। फा इ ला तुन ।U।। मफ ऊ लु ।।U

सूनि सुन्झा केलियै ने कोन पापी छोड़ाइ

सूनि सुन्झा केलियै ने कोन पापी छोड़ाइ

अस्लम: बहरे मुतकारिब मुसद्दस अस्लम

फ ऊ लुन U।। फ ऊ लुन U।। फ अल् U।

अरे की अरे की अहाँ

अरे की अरे की अहाँ

४.आ ऐमे मात्र मुजाहिफ अराकानसँ बनल बेशी प्रयुक्त चारिटा बहर (मुक्तजब, मजारे, मुजतस आ खफीफ)।

बहरे मुक्तजब (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):फ ऊ लु U । U फै लुन U । फ ऊ लु U।U फै लुन। ।

कतेक गपो कतेक सप्पो

कतेक मिलै रहैत छै ओ

बहरे मज़ारे (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):मफ ऊ लु । । U फा इ ला तु । U । U म फा ई लु U । । U फा इ लुन। U । / फा इ ला न। U । U

ने छैक नै इनाम कते कोन छानि गै

ने छैक नै नकाम कते कोन काज गै

बहरे मुजतस (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):म फा इ लुन U । U । फ इ ला तुन U U । । म फा इ लुन U । U । फै लुन। ।/ फ इ लुन UU।

भने भले करतै की भने भले भेटौ

कते कते जरतै ई कते कने देखौ

बहरे खफीफ (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी छः रुक्न):फा इ ला तुन । U । । म फा इ लुन U । U । फै लुन। । / फ इ लुन U U ।

देख लेलौं दिवारसँ बेचै कखनो

बेख देखै गछारसँ हेतै निक ओ

गजल द्वारा किछु संदेश, किछु भावनात्मक अभिव्यक्ति, किछु जीवन दर्शन, सौन्दर्य आकि प्रेम ओ विरहक सौन्दर्य प्रदर्शित रहबाक चाही। किछु एहेन जे सायास नै अनायास हुअए। तँ गजल आन पद्य-कविता जेना- कहल जएबाक चाही, लिखल नै। लिखल तँ चित्र जाइत अछि- मिथिला चित्रकला लिखिया द्वारा लिखल जाइत अछि, संस्कृतमे हम कहै छिऐ- अहं चित्रं लिखामि। गजलक विषय अलग होइत अछि, गजलशास्त्रक अधारपर भजन लिख देलासँ ओ गजल नै भऽ जाएत। अरबीमे तँ गजलक अर्थ होइ छै स्त्रीसँ वार्तालाप। गजल प्रेम विरहक बादो, नै पौलाक बादो, लोकापवाद आ तथाकथित अवैध रहलाक उत्तरो प्रेमक रस लैत अछि। ई प्रेम भगवान आ भक्तक बीच सेहो भऽ सकैत अछि, शारीरिक आ आध्यात्मिक भऽ सकैत अछि। ई राधाक प्रेम भऽ सकैत अछि तँ मीराक सेहो। ई प्रेम दुनू दिससँ हुअए सेहो जरूरी नै। भावनाक उद्रेक आ संगमे गजल कहि कऽ आत्मतुष्टिक लेल गजलकार भावनाक उद्रेककेँ क्षणिक नै वास्तविक आ स्थायी बनाबथि तखने नीक गजल लिख सकै छथि।

रुबाइ:

रुबाइक चतुष्पदीमे पहिल दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि; आ मात्रा २० वा २१ होइत अछि।

रुबाइमे मात्रा २० वा २१ राखू। रुबाइक सभ पाँतीक प्रारम्भ दू तरहेँ होइत अछि- १.दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (**मफ ऊ लु ।।U**)सँ वा २.दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (**मफ ऊ लुन ।।।)** सँ। ओना फारसी रुबाइमे पाँती सभ लेल प्रारम्भक आगाँक ह्रस्व-दीर्घ क्रम निर्धारित छै, मुदा मैथिली लेल अहाँ २०-२१ मात्राक कोनो छन्द जे १.दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (**मफ ऊ लु ।।U**)सँ वा २.दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (**मफ ऊ लुन ।।।)** सँ प्रारम्भ होइत हुअए, तकरा उठा सकै छी। पाँती २० वा २१ मात्राक हेबाक चाही माने (**मफ ऊ लु ।।U**) वा (**मफ ऊ लुन ।।।) सँ प्रारम्भ हेबाक चाही।**

मुदा एक रुबाइक वाक्य सभक बहर वा छन्द/ लय एकसँ बेशी तरहक भऽ सकैए। चारू पाँतीमे सेहो काफियाक मिलान भऽ सकैए।

आन चतुष्पदी जइमे पहिल दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि मुदा मात्रा २०-२१ नै हुअए से रुबाइ नै।

मैथिलीमे मुदा "कता"क परिभाषामे ओ आओत जँ प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घसँ हुअए मुदा छन्द आगाँ सरल वार्णिक, वार्णिक वा ,मात्रिक हुअए। ‘‘कता’’क प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घसँ हेबाक छै आगाँ सरल वार्णिक, मात्रिक वा वार्णिकमे सँ कोनो एकमे शेर लिख सकै छी, कमसँ कम दोसर आ चारिम पाँतीक काफिया मिलबाक चाही।

रुबाइक चतुष्पदीक चारिम पाँतीमे भावक चरम हेबाक चाही।

रुबाइ

कारी अनहार मेघ, आ नै होइए

कत्तौ बलुआ माटि, खा नै होइए

दाहीजरती देखि, हिलोरै-ए मेघ

भगजोगनी भकरार, जा नै होइए

बहर आ छन्दक मिलानी

गजल कोनो ने कोनो बहर (छन्द) मे हेबाक चाही। वार्णिक छन्दमे सेहो ह्रस्व आ दीर्घक विचार राखल जा सकैत अछि, कारण वैदिक वर्णवृत्तमे बादमे वार्णिक छन्दमे ई विचार शुरू भऽ गेल छल:- जेना

तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस

तकैत (ह्रस्व+दीर्घ+दीर्घ)- वर्णक संख्या-तीन

रहैत (ह्रस्व+दीर्घ+ह्रस्व)- वर्णक संख्या-तीन

छी (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

ऐ (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

मेघ (दीर्घ+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

दिस (ह्रस्व+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

मात्रिक छन्दमे द्विकल, त्रिकल, चतुष्कल, पञ्चकल आ षटकल अन्तर्गत एक वर्ण (एकटा दीर्घ) सँ छह वर्ण (छहटा ह्रस्व) धरि भऽ सकैए।

द्विकलमे- कुल मात्रा दू हएत, से एकटा दीर्घ वा दूटा ह्रस्व हएत।

त्रिकलमे कुल मात्रा तीन हएत- ह्रस्व+दीर्घ, दीर्घ+ह्रस्व आ ह्रस्व+ह्रस्व+ह्रस्व; ऐ तीन क्रममे।

चतुष्कलमे कुल मात्रा चारि; पञ्चकलमे पाँच; षटकलमे छह हएत।

वार्णिक छन्द तीन-तीन वर्णक आठ प्रकारक होइत अछि जकरा ‘‘यमाताराजसलगम्’’ सूत्रसँ मोन राखि सकै छी।

आब कतेक पाद हएत आ कतऽ काफिया (यति,अन्त्यानुप्रास) देबाक अछि; कोन तरहेँ क्रम बनेबाक अछि से अहाँ स्वयं वार्णिक/ मात्रिक आधारपर कऽ सकै छी, आ विविधता आनि सकै छी।

वर्ण छन्दमे तीन-तीन अक्षरक समूहकेँ एक गण कहल जाइत अछि। ई आठ टा अछि-

यगण U।।

रगण ।U।

तगण ।। U

भगण । U U

जगण U। U

सगण U U ।

मगण ।।।

नगण U U U

ऐ आठक अतिरिक्त दूटा आर गण अछि- ग / ल

ग- गण एकल दीर्घ ।

ल- गण एकल ह्रस्व U

एक सूत्र- आठो गणकेँ मोन रखबा लेल:-

यमाताराजभानसलगम्

आब ऐ सूत्रकेँ तोड़ू-

यमाता U।। = ***यगण***

मातारा ।।। = ***मगण***

ताराज ।। U = ***तगण***

राजभा ।U। = ***रगण***

जभान U। U = ***जगण***

भानस । U U = ***भगण***

नसल U U U = ***नगण***

सलगम् U U । = ***सगण***

बहर आ संस्कृत छन्दक मिलानी

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ रुक्न फ ऊ लुन (U। ।) चारि बेर

वर्णवृत्त भुजंगप्रयात : प्रति चरण यगण (U। ।) चारि बेर। बारह वर्ण। पहिल, चारिम, सातम आ दसम ह्रस्व, शेष दीर्घ। छअम आ आखिरी वर्णक बाद *अर्द्ध*-विराम।

बहरे मुतकारिब *चारि रुक्न फ ऊ लुन (U। ।) दू बेर*

वर्ण वृत्त सोमराजी यगण (U। ।) *दू बेर। छह वर्ण। पहिल आ चारिम ह्रस्व, शेष दीर्घ। दोसर आ अन्तिम वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।*

मात्रिक रूप- प्रति चरण बीस मात्रा। पहिल, छअम, एगारहम आ सोलहम मात्रा ह्रस्व।

बहरे मुतदारिक मुतदारिक आठ रुक्न फा इ लुन (।U।) चारि बेर

वर्ण वृत्त स्त्रग्विणी रगण (।U।) चारि बेर। बारह वर्ण। दोसर, पाँचम, आठम आ एगारहम ह्रस्व आ शेष दीर्घ। छअम आ आखिरी वर्णक बाद *अर्द्ध*-विराम।

मात्रिक रूप- प्रति चरण बीस मात्रा। तेसर, आठम, तेरहम आ अट्ठारहम मात्रा ह्रस्व।

महजूफ: बहरे रमल मुसम्मन महजूफ **फा इ ला तुन ।U।। फा इ ला तुन ।U।। फा इ ला तुन ।U।। फा इ लुन । U ।**

मात्रिक छंद गीतिका -प्रति चरण २६ मात्रा। तेसर, दसम, सत्रहम आ चौबीसम मात्रा ह्रस्व।

गीतिका-वर्णवृत्त २० वर्ण एकटा सगण, दूटा जगण, एकटा भगण, एकटा रगण, एकटा सगण, एकटा लगण आ एकटा गगण। तेसर, पाँचम, आठम, दसम, तेरहम, पन्द्रहम, अठारहम आ बीसम वर्ण दीर्घ आ शेष ह्रस्व। पाँचम, बारहम आ अन्तिम वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।

महजूज: बहरे मुतदारिक मुसम्मन महजूज (ऐमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान) **फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा ।**

वर्ण वृत्त बाला-१० वर्ण। प्रति चरण रगण **। U ।** *तीन बेर आ फेर एकटा दीर्घ* **।**

मात्रिक रूप- प्रति चरण सत्रह मात्रा। तेसर, आठम, तेरहम मात्रा ह्रस्व आ आखिरीमे एक दीर्घ **।** *आकि दूटा ह्रस्व* **U**

मैथिली गजलक आरम्भिक स्वरूप

"हमरा मानसपटलपर मैथिलीक सम्मानित आलोचक श्री रमानन्द झा ''रमणक'' ओ वाक्य औखन ओहिना अंकित अछि जाहिमे ओ मैथिलीक वर्तमान गीत-गजलकेँ मंचीय यश एवं अर्थलाभक औजार कहिकऽ एकर महत्वकेँ एकदम्मे नकारि देने रहथि (सन्दर्भ- मिथिला मिहिर, फरबरी-१९८३); ...कोनो आलोचककेँ एहेन गैर जिम्मेदारीवला वक्तव्य देबाक की अधिकार? भारतीय संविधानमे भाषणक स्वतंत्रता एकटा मौलिक अधिकार छैक तेँ?'' (सियाराम झा ''सरस'', दीपोत्सव, १८/१०/९०; आमुख, लोकवेद आ लालकिला)

वियोगी लोकवेद आ लालकिलाक एकटा दोसर आमुखमे लिखै छथि- ''छन्दशास्त्रक नियमपर आधारित होयबाक उपरान्तो एहिमे गजलकारकेँ गणना-नियमक स्वातन्त्र्यक अधिकार रहैत छैक।'' (!)

देवशंकर नवीन लिखै छथि ''...पुनः डॉ. रामदेव झाक आलेख आएल। एहि निबन्धमे दूटा अनर्गल बात ई भेल, जे गजलक पंक्ति लेल, छन्द जकाँ मात्रा निर्धारण करए लगलाह..''।

लोकवेद आ लालकिलामे गजल शुरू हेबासँ पहिने कएकटा आलेख अछि, मैथिली गजलपर कोनो सकारात्मक टिप्पणी तँ नै अछि ऐ सभमे, हँ मुदा समीक्षककेँ लाठी हाथे ''*ई सभ मैथिली गजल थिक, गजले टा थिक*'' कहबापर विवश करैत प्रहार सभ अवश्य अछि।

गजल कतेको ढंगसँ कतेको बहरमे कतेको छन्दमे लिखल जा सकैए, ई सत्य अछि, मुदा गणना निअमक स्वातन्त्र्यक अधिकार ने मात्रिक गणनामे छैक आ ने वार्णिक गणनामे।

हाइकूमे सिलेबल आ वर्णक मिलानी अंग्रेजी हाइकूक आरम्भिक लेखनमे नै भऽ सकल, देखल गेल जे ५/७/५ सिलेबलमे बेसी अल्फाबेट आबि गेल, जापानीमे ओतेक अल्फाबेट ५/७/५ सिलेबलमे नै छल।

मैथिलीक आरम्भिक हाइकूमे सेहो ५/७/५ सिलेबलक अनुकरण करैत ज्योति सुनीत चौधरी अपन कविता संग्रह ''अर्चिस्'' मे बेसी वर्णक प्रयोग केलन्हि। तैँ हम सलाह देलहुँ जे मैथिली हाइकू सरल वार्णिक छन्दक आधारपर लिखल जाए, जइमे ह्रस्व-दीर्घक विचार नै हुअए। संस्कृतमे १७ सिलेबलबला वार्णिक छन्दमे नोकमे नोक मिला कऽ १७ टा वर्ण होइ छै- जेना शिखरिणी, वंशपत्र पतितम्, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, हारिणी, नरदत्तकम्, कोकिलकम् आ भाराक्रान्ता। से ५/७/५ मे १७ सिलेबल लेल १७ टा वर्ण हाइकू लेल गेल, से आब ज्योतिजी सेहो लऽ रहल छथि, हम सेहो लऽ रहल छी आ मिहिर झा, इरा मल्लिक, उमेश मंडल, रामविलास साहु, सुनील कुमार झा सेहो लऽ रहल छथि। रुबाइमे हमर सलाह छल जे एतए सरल वार्णिक छन्दक प्रयोग सम्भव नै अछि, कारण एकर प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ वा दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व सँ होइत अछि से चाहे तँ ह्रस्व-दीर्घक मिलानी खाइत वर्णिक छन्दक प्रयोग करू वा मात्रिक छन्दक। रुबाइक चतुष्पदीमे कमसँ कम पहिल, दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि; आ मात्रा २० वा २१ हेबाक चाही। कारण चारू पाँती चारि तरहक बहर (छन्द) मे लिखल जा सकैए से निअमकेँ आगाँ नमरेबाक आवश्यकता नै छै, हँ ई निर्णय करैए पड़त जे चारू पाँतीमे वार्णिक वा मात्रिक गणना पद्धति जे ली, से एक्के हेबाक चाही।

गजलमे मुदा अहाँ वार्णिक, सरल वार्णिक वा मात्रिक छन्दक प्रयोग कऽ सकै छी, मुदा एक गजलमे दूटा बौस्तु मिज्झर नै करू। बिन छन्द वा बहरक गजल अहाँ कहि सकै छी, समीक्षककेँ लुलुआ कऽ आ लाठी हाथे; मुदा ओ गजल नै हएत, उर्दू/ फारसीमे तँ मुशायरामे अहाँकेँ ढुकैये नै देत। आ आब जखन रोशन झा, प्रवीण चौधरी प्रतीक, आशीष अनचिन्हार, सुनील कुमार झा सन युवा गजलकार अन्तर्जालपर एकटा टिप्पणीक बाद सरल वार्णिक छन्दमे गजलकेँ संशोधित कऽ सकै छथि, तँ लालकिलावादी गजलकार लोकनि ई किए नै कऽ सकै छथि? मायानन्द मिश्र ''गीतल'' कहि आ गंगेश गुंजन ''गजल सन किछु मैथिलीमे'' कहि जे गलत परम्पराकेँ जारी रखबाक निर्णय लेने छथि तकरा बाद अजित आजाद आ आन युवा गजलकार जँ बिना छन्द/ बहरक गजल लिखै छथि तँ एकरा हम मायानन्द मिश्र, गंगेश गुंजन आ लालकिलावादी अ-गजलकार लोकनिक दुष्प्रभावे बुझै छी।

लोकवेद आ लालकिला:

आत्ममुग्ध आमुख सभक बाद ऐ संग्रह मे कलानन्द भट्ट, तारानन्द वियोगी, डॉ. देवशंकर नवीन, नरेन्द्र, डॉ. महेन्द्र, रमेश, रामचैतन्य ''धीरज'', रामभरोस कापड़ि ''भ्रमर'', रवीन्द्र नाथ ठाकुर, विभूति आनन्द, सियाराम झा ''सरस'' आ सोमदेवक गजल देल गेल अछि।

कलानन्द भट्ट

भोर आनब हम दोसर उगायब सुरुज

करब नूतन निर्माण हम बनायब सुरुज

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१७ वर्ण दोसर पाँती- १८ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जएबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-२१ मात्रा, दोसर पाँती- २१ मात्रा, मात्रा मिल गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। पहिल पाँती **दीर्घ-ह्रस्व**-*दीर्घ*-**ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व**-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व (एतए दूटा लगातार ह्रस्वक बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब)। दोसर पाँती- **ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व**-*दीर्घ*-**ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व**-दीर्घ- ह्रस्व-हस्व- ह्रस्व-हस्व-दीर्घ- ह्रस्व-हस्व- ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व। मुदा एतए गाढ़ कएल अक्षरक बाद क्रमटूटि गेल।

तारानन्द वियोगी

दर्द जँ हद कैँ टपल जाए तँ आगि जनमै अछि

बर्फ अंगार बनल जाए तँ आगि जनमै अछि

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१९ वर्ण दोसर पाँती- १८ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जएबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-२५ मात्रा, दोसर पाँती- २५ मात्रा, मात्रा मिल गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। **दीर्घ** (संयुक्ताक्षरकैँ पहिने)-*ह्रस्व*-**ह्रस्व-ह्रस्व**-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रअस्व-ह्रस्व।(एतए दूटा लगातार ह्रस्वक बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब)। दोसर पाँती- **दीर्घ** (संयुक्ताक्षरकैँ पहिने)-*ह्रस्व*-**दीर्घ**-दीर्घ एतए क्रमभंग भऽ गेल।

देवशंकर नवीन

अँटा लेब समय-चक्र, सहजहि एहि आँखि बीच

नबका प्रभात लेल, क्रान्ति कोनो ठानि लेब

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१९ वर्ण दोसर पाँती- १६ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जएबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-२५ मात्रा, दोसर पाँती- २५ मात्रा, मात्रा मिलि गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-

ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व (एतए दूटा लगातार ह्रस्वक बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब)। दोसर पाँती- **ह्रस्व-**ह्रस्व-दीर्घ- मुदा एतए गाढ़ कएल अक्षरक बाद क्रमटूटि गेल।

नरेन्द्र

निकलू तँ सजिकऽ सजाकेँ

बासन ली ठोकि बजाकेँ

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१० वर्ण दोसर पाँती- ९ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जएबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-१३ मात्रा, दोसर पाँती-१४, मात्रा गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जएबाक मेहनति बचि गेल।

डॉ महेन्द्र

चलैछ आदमी सदिखन चलैत रहबा लए

जीबैछ आदमी सदिखन कलेस सहबा लए

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१८ वर्ण दोसर पाँती- १८ वर्ण। मुदा तेसर शेरमे दोसर पाँतीमे १६ वर्ण आबि गेल अछि। मात्रिकमे सेहो उपरका दुनू पाँतीमे क्रमसँ २४ आ २५ वर्ण अछि।

रमेश

जखन-जखन साओनक ओहास पड़ैए

हमर छाती मे गजलक लहास बरैए

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१६ वर्ण दोसर पाँती- १६ वर्ण। मुदा दोसर शेरक पहिल पाँतीमे १५ वर्ण। मात्रिकमे सेहो उपरका दुनू पाँतीमे २२ वर्ण अछि। मुदा ह्रस्व-दीर्घ गणनामे दोसरे शब्दमे ई मारि खा जाइए।

ई दोष शेष गजलकारमे सेहो देखबामे अबैए।

एकर अतिरिक्त सुरेन्द्रनाथक ‘‘गजल हमर हथियार थिक’’ , सियाराम झा ‘‘सरस’’क ‘‘थोड़े आगि थोड़े पानि’’, रमेशक ‘‘नागफेनी’’ आ तारानन्द वियोगीक ‘‘अपन युद्धक साक्ष्य’’ मे सँ किछु किताब

लाठी हाथे मैथिली साहित्यमे गजल संग्रहक रूपमे साहित्य अकादेमीक सर्वे ऑफ मैथिली लिटेरेचरक उत्तर जयकान्त मिश्र संस्करणमे आबि गेल अछि, किछु ऐ साहित्यक इतिहासक अगिला संस्करणमे आबि जाएत! अरविन्द ठाकुरक गजल सेहो पत्र-पत्रिकामे गजल कहि छपि रहल अछि, से अही परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

जँ ई सभ गजल नै अछि तँ पद्य तँ अछि आ तइ रूपमे एकर विवेचन तँ हेबाके चाही। ऐ क्रममे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक ‘‘लेखनी एक रंग अनेक’’ देखू। मैथिली गजल संग्रहक रूपमे ई पोथी आइसँ २५ बर्ख पूर्व आएल। सोमदेव आ भ्रमरक संग हिनको गजल लालकिलावादक परिभाषामे नै अबैत अछि। गजल नै मुदा पद्यक रूपमे एकर स्थान मैथिली साहित्यमे सुरक्षित छै, मुदा ई आन वर्णित गजलक तथाकथित संकलनक विषयमे नै कहल जा सकैए।

एक छन्द, एक बाँसुरी, एक धुन सुनयबालेऽ

लियौ ई एक गजल, आई गुनगुनयबालेऽ

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर ‘‘लेखनी एक रंग अनेक’’)

मैथिली गजलक पहिल दुर्भाग्य तखन देखा पड़ैत अछि जखन एतए गजलकेँ मुस्लिम धर्मसँ जोड़ि कऽ देखल जाए लगलै आ मुस्लिम धर्म आ ओकर साहित्यकेँ अछोप मानि लेल गेलै। गजलक प्रारम्भ इस्लामक आगमनसँ पूर्वक घटना अछि आ अवेस्ता आ वैदिक संस्कृत मध्य ढेर रास साम्य अछि। दोसर दुर्भाग्य मायानंद मिश्रक ओ कथन भेल जइमे ओ घोषणा केलथि जे मैथिलीमे गजल लिखले नै जा सकैए, हुनकर तात्पर्य दोसर रहन्हि मुदा लोक अही तरहेँ ओकरा प्रस्तुत करए लागल, कारण ओ स्वयम् गीतल नामसँ गजल लिखलन्हि। मैथिली गजलमे "अनचिन्हार आखर" सन अन्तर्जालीय जालवृत्त उपस्थित भेल, जतए बहर (छन्दयुक्त) गजल आ गजलकारक लाइन लागि गेल। मुदा सभसँ बड़का दुर्भाग्य ई भेलै जे मैथिलीक किछु तथाकथित शाइर सभ रामदेव झा द्वारा बहर संबंधी विचारकेँ नकारि देलन्हि (देखू- लोकवेद आ लालकिलामे देवशंकर नवीन जीक आलेख)। जँ वर्तमानमे गजलक परिदृश्यकेँ देखी तँ मोटामोटी दूटा रेखा बनैत अछि (जकरा हम दू युगक नाम देने छी) पहिल भेल "जीवन युग" आ दोसर भेल "अनचिन्हार युग"। आब कने दुनू युगपर नजरि देल जाए।

१.जीवन युग- ऐ युगक प्रारंभ हम जीवन झासँ केने छी जे आधुनिक मैथिली गजलक पिता मानल जाइ छथि मुदा ओ कम्मे गजल लिख सकला। मुदा हुनका बाद मायानंद, इन्दु, रवीन्द्रनाथ

ठाकुर, सरस, रमेश, नरेन्द्र, राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रौशन जनकपुरी, अरविन्द ठाकुर, सुरेन्द्र नाथ, तारानंद वियोगी आदि गजलगो सभ भेलाह। रामलोचन ठाकुर जीक बहुत रचना गजल अछि मुदा ओ अपने ओकर क्रम-विन्यास कविता-गीत जकाँ बना देने छथिन्ह मुदा किछु गजलक श्रेणीमे सेहो अबैए। ऐ ‘‘जीवन युग’’क गजलक प्रमुख विशेषता अछि बे-बहर अर्थात बिन छंदक गजल। ओना बहरकेँ के पुछैए जखन सुरेन्द्रनाथ जी काफियेक ओझरीमे फँसल रहि जाइ छथि। एकर अतिरिक्त आर सभ विशेषता अछि ऐ युगक। आ जँ एकै पाँतिमे कहए चाही तँ पाँति बनत---"गजल थिक, ई गजल थिक, आ इएह टा गजल थिक"।

२.आब कने आबी " अनचिन्हार युग" पर। ऐ युगक प्रारंभ तखन भेल जखन इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल गजल आ शेरो-शाइरीकेँ समर्पित ब्लाग "अनचिन्हार आखर" (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) क जन्म भेल आ ऐ ‘‘अनचिन्हार आखर’’ जालवृत्तक नामपर हम ऐ युगक नाम "अनचिन्हार युग" रखलहुँ अछि। ऐ युगक किछु विशेषता देखल जाए-

गजलक परिभाषिक शब्द आ बहरक निर्धारण---- ई श्रेय "अनचिन्हारे आखर"केँ छैक जे ओ हमरासँ १३ खंडमे (एखन धरि १३ खण्ड) "मैथिली गजल शास्त्र" लिखेलक। आ ई मैथिलीक पहिल एहन शास्त्र भेल जइमे गजलक विवेचन मैथिली भाषाक तत्वपर कएल गेलै। तकरा बाद आशीष अनचिन्हार सेहो "गजलक संक्षिप्त परिचय" लिख ऐ परंपराकेँ पुष्ट केलथि। आ एकरे फल थिक जे सभ नव-गजलकार बहरमे गजल कहि रहल छथि।

स्कूलिंग ---- "अनचिन्हार आखर" गजल कहेबाक परंपरा शुरू केलक आ तइमे सुनील कुमार झा, दीप नारायण "विद्यार्थी", रोशन झा, प्रवीन चौधरी "प्रतीक", त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विकास झा "रंजन", सद्रे आलम गौहर, ओमप्रकाश झा, मिहिर झा, उमेश मंडल आदि गजलकार उभरि कए अएलाह।

गजलमे मैथिलीक प्रधानता----"अनचिन्हार युग" सँ पहिने गजलमे उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार छल आ मान्यता छल जे बिना उर्दू-हिन्दी शब्दक गजल कहले नै जा सकैए। मुदा "अनचिन्हार आखर" ऐ कुतर्ककेँ धवस्त केलक आ गजलमे १००% मैथिली शब्दक प्रयोगकेँ सार्वजनिक केलक।

गजलक लेल पुरस्कार योजना--- "अनचिन्हार आखर" मैथिली साहित्यक इतिहासमे पहिल बेर गजल लेल अलगसँ पुरस्कार देबाक घोषणा केलक। ऐ पुरस्कारक नाम "गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा" पुरस्कार अछि।

ऊपर चारू विशेषताक आधारपर एकटा अंतिम मुदा सभसँ बड़का विशेषता जे निकलल ओ थिक मायानंद मिश्रक ओइ कथनक खंडन, जकर अभिप्राय छल जे मैथिलीमे बहरयुक्त गजल लिखल नै

जा सकैए। "अनचिन्हार आखर" सरल वार्णिक, वार्णिक आ मात्रिक छन्दक अतिरिक्त फारसी/ उर्दू बहरमे सेहो मैथिली गजल लिखबाक शास्त्र ओ उदाहरण खाँटी मैथिली शब्दावलीमे प्रस्तुत केलक।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा, रोला ई सभ एकटा स्थापित विधा अछि। स्थापित विधा माने जकर लिखबाक विधि जइ भाषा सभक ई मूल खोज अछि, ओइ भाषामे स्थापित भऽ गेल अछि। जँ हाइकू लिखबा काल कोनो निअम पालन नै करी तँ ओकर नाम क्षणिका पड़ि गेलासँ ओ हाइकू दोषविहीन नै भऽ जाएत। जँ कोनो भाषासँ हम गजल/ रुबाइ/ कता मैथिलीमे प्रयोग लेल सोचै छी तँ ऐ कारणसँ जे ओ ओइ भाषाक चमत्कारिक चीज अछि,आ मैथिलीक छौंक लगलासँ कोनो आर चमत्कारक हम आशा राखै छी। सएह हाइकू, शेनर्यू, टनका आ हैबून लेल सेहो लागू अछि। आब एतऽ ई देखबाक अछि जे कोनो विधाक आयात सतर्कतासँ हुअए, ओइ विधाक सैद्धान्तिक पक्ष सुदृढ़ छै। से जेना तेना आयात कऽ हाथपर हाथ धरि सए बर्ख आर इन्तजार करी ई सोचि जे तकर बाद एकर मैथिली छौंकबला अलग सिद्धान्त बनत, तँ तइ लेल स्थापित विधाक आयातक कोन बेगरता? एतेक समएमे तँ एकटा आर नव विधा बनि जाएत!

हँ, मात्र लिप्यांतरण कऽ देलासँ उर्दूक सभ गजल निअम हिन्दीक भऽ जाइत अछि, मुदा ओतहु वर्तनीक भिन्नता मारते रास काफियाक उपनिअमक निर्माणक बाध्यता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली तँ साफे अलग भाषा अछि तेँ एकर काफियाक निअम सोझे आयातित नै भऽ सकैए। बहरमे वर्ण/ मात्राक गणना पद्धति सेहो हिन्दी-उर्दूमे मात्र कोनो खास शब्दक वर्तनीक भिन्नताक कारण कखनो काल उपनिअम बनेबाक खगता अनुभूत करबैए, मुदा से मैथिलीमे सोझे आयातित नै भऽ सकैए कारण ई साफे अलग भाषा थिक। तँ की काफिया आ बहरक वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति मैथिलीमे साफे छोड़ि देल जाए? आकि ओइ मे ततेक ढील दऽ देल जाए जे ओकर कोनो मतलबे नै रहए? आ तखन जे बहरमे लिखथि वा काफियाक शुद्ध प्रयोग करथि से भेलथि कट्टर आकि जे एकर विरोध करथि से भेला कट्टर? आ जँ बिन काफिया आ बहरक गजलकेँ गजल नै कहल जाए तँ ओ रचना महत्वहीन भऽ गेल? ओ गजल नै भेल, वा जीवन युगक मैथिली गजल भेल, मुदा गीत/ कविता तँ भेबे कएल। कोनो गजल मात्र काफिया आ बहरक शुद्धता मात्र रहने उत्कृष्ट तँ नहिए हएत, मुदा उत्कृष्ट हेबाक सम्भावनाक प्रतिशतता कएक गुणा बढ़त। तहिना कोनो गजल सन रचना जँ अशुद्ध काफियामे आ बे-बहर अछि तँ सएह मात्र ओकर उत्कृष्टताक प्रमाण भऽ जाएत? एकर विपरीत हम ई कहऽ चाहब जे ओहनो रचना उत्कृष्ट भऽ सकैए, मुदा तकर सम्भावनाक प्रतिशतता भयंकर रूपेँ घटि जाएत।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा आ रोला निअमबद्ध रचना अछि। एकरा अकविता, गद्य-कविता आ गीतक स्वरूप देलासँ अहाँ भाषाक कोन उपकार कऽ सकब, कारण अकविता, गद्य-कविता आ गीत तँ स्वयं स्थापित विधाक स्वरूप लऽ लेने अछि। छोट कविता

क्षणिका भऽ सकत, हाइकू नै। कुण्डलिया, दोहा आ रोलाक निअम मैथिलीमे बनेबामे कोनो असोकर्ज नै भेल कारण ई सोझे आयातित भऽ गेल मुदा गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबूनमे वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति जापानी आ उर्दू-फारसीसँ अहाँ लइए नै सकै छी। जापानक लेखन पद्धति अल्फाबेट (वर्ण) आधारित अछिये नै, तखन अहाँ ओकर गणना पद्धति कोना आयात कऽ सकब। ओकर तरीका छै, पाश्चात्य तरीका आ सिलेबल आधारित लेखन पद्धति सेहो जापानी भाषामे होइ छै, से तकर प्रयोग कऽ ओइ चित्रात्मक लेखनक सिलेबल आधारित शैलीक मिलान संस्कृतक वार्णिक छन्द गणना पद्धतिसँ कएल गेल आ ओकरा हाइकू, शेनर्यू आ टनका लेल प्रयोग कएल गेल। तहिना गजल, कता आ रुबाइमे वैज्ञानिक आधारपर मैथिली भाषाक सापेक्ष निअम बनाओल गेल जइसँ गजल, कता आ रुबाइ मैथिलीमे दोसर भाषासँ एलाक उपरान्तो अपन मूल विशेषता बना कऽ राखि सकल। आ तकर बाद जे मैथिली गजल आ गजलकारक संख्यामे परिणामात्क आ गुणात्मक वृद्धि भेल अछि, से दुनियाँक सोझाँ अछि।

मुन्नाजी

1

बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

घड़ीक पेण्डुलम सन झुलैत जिनगीमे स्थिरता भागल फिरैए। ने देह स्थिर आ ने चित्त। केखनो क' तँ अपनो ठर-ठेकान हेराएल सन लगैए लोककेँ। जँ चिन्तनशील भ' ताकब तँ ठकाएल सन अनुभव हएत। एहन स्थितिमे कोनो नव सोच वा नव अवधारणाकेँ घीचा-तीरीमे फँसि जेबाक आशंका घेरि लैए। मुदा रक्षात्मको भ' वएह नव अवधारणा, नव प्रयोग, नव रचना साहित्यकेँ जिया क' रखबाक क्षमता देखबैए।

पद्य विधाक एकटा रूप गजल अपन आ समाजक सौन्दर्यबोध करबैए। हासिक, रसिक भ' प्रेममे ओझरा उब-डुब करैत अपन बाट पर ससरल जाइत देखाइए। गजलक बढ़ैत लोकप्रियता आब अपन विस्तार तकैए। आब गजल सभ भावमे चतरल-पसरल जा रहल अछि। ऐ बीच चर्चित युवा गजलकार आशीष अनचिन्हार जी गजलक क्षेत्रमे एकटा नव अवधारणा रखलन्हि। साहित्य अकादेमी आ मैलोरंगक संयुक्त तत्वावधानमे भेल कथा गोष्ठी 24 मार्च 2012केँ अनचिन्हार जी बाल गजलक अवधारणाकेँ स्पष्ट करैत कहलन्हि " जेना गद्य विधा वा अन्य विधामे बाल साहित्य लिखल जाइत अछि तहिना गजलमे सेहो बाल मनोविज्ञान पर आधारित बाल गजल लिखल जाए"।24 मार्च 2012 के प्रस्तुत कएल गेल बाल गजलक परिकल्पनाक विधिवत् घोषणा अनचिन्हार आखर आ विदेहक फेसबुक वर्सन पर 27 मार्च 2012केँ होइते बहुत रास परिपक्व बाल गजल सभ सोंझा आएल। घोषणा होइते ऐ विधाक पहिल रचनाकार भेलाह आशुतोष मिश्रा जे की नेपालसँ छथि मुदा यदा-कदा लिखैत छथि। दोसर स्थान पर भेलाह जगदानंद झा मनु आ तकरा बाद तँ अमित मिश्रा, रुबी झा, नवल श्री पंकज, चंदन झा, मिहिर झा, मुन्ना जी आ आन गजलकार सभहँक बाल गजलक प्रकाशनक क्रम बनि गेल। आ ऍं तरहेँ ऐ अवधारणाक प्रथमे चरण ठोस भ' सोंझा आएल , जाहिसँ एकर मजगूत भविष्यक आकलन कएल जा सकैए। संगे एकर पूर्ण संभावना सेहो जागल देखाइए।

अनचिन्हार आखर द्वारा बाल गजलक महत्वकेँ देखैत " गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" अलगसँ देबाक घोषणा सेहो कएल गेल। आ ई मार्च मासमे प्रभावी मानल गेल। आ श्रीमती प्रिती ठाकुर जीकेँ मुख्यचयनकर्ती बनाएल गेल। एखन धरि जून मास धरिक प्रारंभिक चरणक चयन भेल अछि जे एना अछि----------

1) मार्च लेल श्री मती रूबी झा जीकेँ चूनल गेल।

2) अप्रैल लेल नवलश्री पंकज जीकेँ चूनल गेल।

3) मइ लेल अमित मिश्रा जीकेँ चूनल गेल।

4) जून लेल चंदन झा जीकेँ चूनल गेल।

संप्रति विदेह द्वारा प्रस्तुत बाल गजल विशेषांक एकर आधारकेँ मजगूत करबाक दिशामे एकटा सशक्त प्रयास अछि जाहिसँ एकर विकासक संभावना अक्षुण्ण रहए।

मैथिली गजलपर परिचर्चा

मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)

मैथिली गजलकेँ लोकप्रिय होइत देखि बेगरता बुझाएल एकरा पूर्ण रूपेँ फरिछेबाक। तेँ विदेह www.videha.co.in ISSN 2229-547X द्वारा "मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)" विषयपर परिचर्चाक आयोजनक भार हमरा देल गेल। ऐ विषयपर लेखक लोकनिक विचार संक्षिप्तमे नीचाँ देल जा रहल अछि।- मुन्नाजी

१

सियाराम झा "सरस"

मुन्नाजी, मैथिली गजलपर परिचर्चाक आयोजन नीक लागल।

बन्धुवर, मैथिली गजल सम्बन्धी हमर मान्यता एना अछि:-

१)उत्पत्ति: पण्डित जीवन झाक नाटक "सुन्दर संयोग" (१९०५-०६) मे सर्वप्रथम मैथिली गजलक आगमन पबैत छी। तइसँ पूर्वक कोनो सूचना नै देखा पड़ैछ। तँए उत्पत्ति हम एतैसँ मानैत छी।

२) विकास: विगत १०६ बर्खक इतिहासमे गुणात्मक नै जँ संख्यात्मके चर्चा करी तँ अमरजी, माया बाबू (गीतल कहि कऽ), केदार नाथ लाभ, सोमदेव, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, स्व. मार्कण्डेय प्रवासी, स्व. इन्दुजी, राजेन्द्र बिमल, गंगेश गुंजन, बुद्धिनाथ मिश्र, सियाराम सरस, स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ. देवशंकर नवीन, डॉ. तारानन्द वियोगी, रमेश, भ्रमर, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल", अरविन्द ठाकुर, अशोक दत्त, रोशन जनकपुरी, अजित आजाद, कु. मनीष अरविन्द, डॉ. कृष्णमोहन झा "मोहन"(राँची), आशीष अनचिन्हार समेत दर्जनो रचनाकार एकरा पुष्ट-बलिष्ट केलन्हि अछि।

कथन आ भंगिमामे सेहो विविधता आएल अछि। दर्जनसँ बेशी संकलन नोटिस लेबा योग्य उपलब्ध अछि। विकास अखनो भऽ रहल अछि।

३) स्वरूप आ संरचनामे यथास्थान अछि। बहरक विकास गजलकारक अपन क्षमतापर निर्भर होइछ, किछु अध्ययन-मननपर सेहो। मैथिलीमे शेर तँ कहैत छी, मुदा मिसरा वा मतला-मकता आदिक प्रयोग नै कएल जाइछ। लोक बात-बातमे शेर नै कहैछ।

४) सम्भावना- नव-नव लोक सभ जुड़ि रहल छथि, संकलनो आबि रहल अछि, परिचर्चो शुरू भेल अछि, से चलैत रहए। आशीष अनचिन्हार जे योजना आरम्भ केलनि अछि, सेहो महत्वपूर्ण बिन्दु थिक। *खरा-खरी कहबाक नाम छी गजल..गाम-घरमे दिवा रातिमे; हवा जकाँ बहबाक नाम छी गजल।*-सरस।

२

गंगेश गुंजन

धन्यवाद जे ऐ मैथिली-गजल परिचर्चामे अहाँ हमरो शामिल कएलौंहेँ। ओना तँ अहाँ लोकनिक मैथिली गजलक परिभाषा-मान्यताक आन्दोलनमे स्वयंकेँ हम मैथिलीक गजल रचनाकारक श्रेणीसँ बाहर मानि लेने रही। किछु अर्थमे एखनो सएह अनुभव होइत अछि। तथापि -

१.मैथिली गजलक प्रारम्भ अपने पं जीवन झासँ मानी बा विद्यमान रवीन्द्रनाथ ठाकुर सँ (अप्रिय-अनसोहाँत लगनु भने किनको, तथापि) ओइ 'खास' प्रवर्तन-गजलक मूल पाठ सेहो पाठकक सोझाँ देब उचित। नव भावबोधकेँ, नवतुरिया कवि-पीढ़ीकेँ से देखलाक बादे तकर मीमांसाक आधार भेटतै।

हमर लाचारी अछि जे साहित्येतिहासक ने हम ओतेक आग्रहीए रहलौं आ तेँ ने अन्वेषके। मुदा तकर 'उत्स' आभास, निजी हमरा अहीमे सँ कतौ बुझाइछ। यद्यपि कोनो प्रयोग, विशेषतः साहित्य बा कला-विधामे, मात्र एतबे बात लेल ओइ रचनाकार बा ओइ विधाक 'प्रारम्भ' नै मानि लेल जएबाक चाही जे 'ओ' पहिल बेर 'लीखल' गेल। से पहिल बेर लीखल गेल विधा-रचना, अपन साहित्यिक प्रवृत्तिक स्वरूपमे निरन्तरतासँ कहाँ धरि सृजन-सक्रिय रहल? आगाँ रहबो कएल कि नै? असल मूल्य मानक सएह थिक। कोनो साहित्यक आयु ओकर जीवन्त आ प्रवहमान प्रयोगक काल मात्रहिमे देखल-बूझल जाइछ। हिन्दीमे छायावादी महाप्राण *निराला* तथा *प्रसाद*, संयोगसँ एतऽ हमर ऐ दुनू सिद्धान्तक युगीन आ मूर्त्त उदाहरण छथि। ई दुनू 'छायावाद'क स्तम्भ छथि आ 'गजल' सेहो लिखलनि। मुदा

‘गजल’ मे तँ आइ दुनूक आयु इतिहास मात्र अछि। तँ मैथिली गजलपर विचारैत काल से महत्वपूर्ण बिन्दु। रचनाकारो काल लेखनक अपन मौलिक रुचि-प्रवृत्ति तथा अभ्याससँ फराक जा, तात्क्षणिक आवेशेँ ‘अन्यो विधा’मे टहलि-बूलि अबैए। परन्तु से आवेश निरन्तरतामे ओकर सर्जनाक स्वाभाविक प्रवृत्ति नै बनि पबै छै, यावत ओइ नव विधामे सृजन करबामे ओकर मोन रमि नै जाइक। हिन्दीक दुष्यन्त कुमार कविताक प्रारम्भ ‘गजल’ सँ नै कएने रहथि जे कि आगाँ आबि कऽ अपन उत्तर पीढ़ीक प्रेरणा भेलाह। से दुष्यन्ते जी भेलाह, जखन कि शमसेर बहादुर जी सन प्रशस्त पैघ कवि ‘गजल’ लीखि रहल छलाह। आनो कए टा नाम अछि, जे हिन्दीमे महत्वपूर्ण। मुदा गजल विधा-लेखनमे ऐ सघन निरन्तरताक श्रेय हम तँ दुष्यन्ते जीकेँ मानैत छी।

अपने विचारियौ जे मधुप जी चाहितथि तँ गजल सेहो उत्कृष्ट नै लीखि सकैत छलाह? नै लिखलनि। किए? बा यात्री जी ? कविक अनुभव-आनुभूतिक विकलता ओकरासँ प्राथमिकता तय करबैत छै- जे ओ की आ कोना कहए-लिखए। सएह प्राथमिकता रचना प्रक्रियामे रचनाकारकेँ अपन स्वभावक फ्रेममे उद्वेलित करै छै आ कवि से शैलीक बाट धरबा लेल सृजन विवश भऽ होइत अछि। सभ कविक तँ अपन-अपन रुचिक खास विधा सेहो भऽ जाइ छै। सएह ओकर अभिव्यक्तिक सहज स्वाभाविक तागति बनि जाइ छै। कालांतरमे समाज मध्य ताही रूपमे ओकर परिचिति बनि जाइ छै। सएह मोटा-मोटी सुमन-मधुप-मणिपद्म-अमर तथा यात्रीक रूपमे चीन्हल जाइ योग्य होइछ।

एखन मैथिली-गजलक प्रवाह ‘बाढ़ि’ बला अछि, यद्यपि स्नेह आ स्वागत करबा योग्य। किएक तँ मुख्यतः प्रवृत्तिक ई सृजन-प्रवाह एकछोहा ‘युवापीढ़ी’क थिक आ यदि मैथिली गजलक कोनो भविष्य छै तँ एही पीढ़ीक सृजन-सम्पदामे। एक बएग जे ई सघन आ कए तरहेँ संगठित सेहो, ऐ विधाक प्रति उत्कट आग्रह आ ताही कारणेँ सक्रिय निरन्तरता आएल छै, से अगिला दशक धरि उल्लेख करबा योग्य स्वरूप लऽ लेत, ऐ बातमे हमरा कोनो संदेह नै। अवश्ये ऐ परिवेश-निर्माण मे ब्लॉग/ फेसबुक/ अर्थात इन्टरनेट महाशक्तिक अपूर्व योगदान अछि, जे हमरा युगक नव रचनाकारकेँ नै छलै। अभिव्यक्ति सम्प्रेषण-माध्यम अत्यन्त सीमित छलै।

तेँ मैथिली-गजलक वास्तविक ‘प्रस्थान’ हम एकदम टटका पीढ़ीमे पबैत छी। नव गछुली अछि एखन। बताह भऽ कऽ मजरल अछि। एकर कतेक मज्जर टिकुला भऽ पाओत आ कतेक ‘गोपी’ धरि परिणत हएत से देखबा योग्य हएत।

आशा-अभिलाषा तँ ‘नव गछुलीए’ सँ। निश्छल तथा उदार बुद्धिये एकर अभिसिंचन-संरक्षण हेबाक चाही। से दायित्व पूर्व खाढ़ीक बचलाहा जीवित रचनाकारक। यदि नवतुरियाकेँ से स्वीकार होइक, जे कि अधिकांश नव रचना आ रचनाकारक ‘तेवर’मे परिलक्षित नै बुझाइछ। जइ गजलक ई गहन विमर्श कऽ रहल छी, तकर ‘जन्मभूमिक भाषा’ मे आइयो ‘इस्लाह’क परम्परा काएम छै। मान्य, श्रेय-प्रेय। ओना यथावत ताइ दिनबला गुरु-शिष्य परम्पराकेँ हमहूँ नै मानैत छी। आजुक युग आ

वातावरणमे आब उचितो नै हएत से। मुदा कोनो विद्याक सरिता धार, जेँ कि एखनो प्रवाहित भइए रहल छै, तेँ किछु दूर धरि, पुरना 'घटबारोक' जरूरति बाँचले छै। तै अर्थमे कहलौं।

सम्प्रति गजल-रूपमे लिखल गेल समस्त मैथिली-गजलकेँ चालल जाए तँ साबुत गजल दू गाहीसँ बेसी भरिसक्के निकलत। चनकल, टूटल-भांगल रचनाक गनती नै हुअए। से तँ कहबे कएलौं 'बाढ़ि' आएल अछि। अप्रिय परन्तु हमर जानकारीक यथार्थ यएह कहैए जे मैथिलीमे गजलक नामे लिखल जाइत रचनाक अधिकांश 'खखरी' अछि। उत्सुकतामे हम फेसबुकपर विशेष कऽ नव हस्ताक्षर सभकेँ पढ़बे करैत छी। मुदा फालतू..सँ आगाँ बुझाए लगैत अछि। एक-दू टा रचना पढ़ैत काल तँ जीह ओकियाय लागल। हमर बात उत्कट लगैत हुअए भने मुदा एकटा पाठकक रूपमे हमरा एहनो अनुभव भेलए।

दोसर जे, आजुक पीढ़ीक रचनाकार हमरा बेसी काल 'बहर-मैनिया' सँ ग्रस्त बुझाइछ, से माफी देब। दोसर रूपे कही तँ 'बहर'क 'ऑबसेसन' सीमा तक आग्रही बुझाइत छथि। बहर अंततः साँच मात्र थिक। फ्रेम । 'रूह' नै।

हम जखन रेडियोमे रही तँ हमरे कोठलीमे नारी जगत आ नाटक विभाग सेहो रहै। नारी जगतमे एक टा परम सुन्दरि स्त्री आबथिन। नख शिख सुन्दरि। कत्तौसँ कोनो कमी नै। तथापि कोनो आकर्षण नै। ई हमर सोचब छल। कए टा हमरासँ भेंट कएनिहारो देखथिन। ओइ सुन्दरी दऽ चर्चा करथि मुदा यएह प्रश्न सेहो जे आखिर की छै जे ई एहन सुन्दरी होइतो प्रशंसा योग्य नै। एकदिन अंततः हमर दू टा महिला संगी, जे रेडियोक रहथि, हमरा लोकनि संगे चाह पीबी, अएली संग करऽ। ओ सुन्दरी कोनो रिकार्डिंमे आएलि रहथि। फेर देखलखिन तँ ओइ दिन चाह दोकान दिस जाइते काल अचानक पुछलनि- 'ई के सुन्दरी छथि जे दिलमे नै उतरि पबै छथि। विचित्र असुन्दर सुन्दरता छन्हि गुंजन जी।' हम किछु जवाब नै दऽ यएह सोचैत रहलौं जे ओइ सुन्दरीक विषयमे हमर अपनो यएह जिज्ञासा रहए। अर्थात हमरा लोकनिक बुद्धियें शरीर तँ सर्वगुण सुन्दर, मुदा 'सौन्दर्य' सँ आत्मा गाएब रहनि सुन्दरीक।

यदि अहाँक सूचीमे बाँचल छी तँ हम एखनो यएह मानैत छी आ वएह कहब-

छुच्छे 'इल्म' सँ कविता जेकाँ किछु लिखि देल गेल, 'गजल' नै भऽ जाइ छै।

लीखू किछु आसान गजल

सबहक मोनक जान गजल

एक एक हृदयक छाँह लगय

गाबय सबहक प्राण गजल

सब कानय अपने अपनी

बनय सभक मुस्कान गजल

लोकक दुःखक बनय पुकार

बौआय नै सुनसान गजल

झलझल जल मोनक सपना

से अछि गंगास्नान गजल

जइ क्षण पीड़ा मे कानल

धो दय सकल जहान गजल

आकांक्षा हो जन-जन के

से गीतक अभिमान गजल

प्रेमचन्द्र पंकज

मैथिली गजल : एक नजरिमे

गजल एकटा एहन सशक्त विधाक नाम थिक, जकरा माध्यमसँ अनेक सामाजिक प्रक्रियाक जटिलताकें थोड़ शब्दमे सहजतासँ अभिव्यक्ति प्रदान कएल जाइत अछि। सहजता एवं भाव-चमत्कार एकर मुख्य लक्षण थिक। अपन सहजता एवं भाव-चमत्कारक कारण एकरामे एकटा अद्भुत आकर्षण छै। अही आकर्षणक कारणें फारसीसँ उर्दू एकरा हपसि कऽ अपन कोरामे लेलक। हिन्दी सेहो ओकर नजरि अपना दिस घिचबाक प्रयास कएलक। सफलता सेहो भेटलै। मुदा उर्दूक कोरामे जेहन छलै, तेहने प्राप्त भेलै। कहबाक तात्पर्य जे उर्दूमे गजल एक खासे मानसिकताबला लोकक बीच अपन आकर्षणक भाभट पसारने छल आ हिन्दीमे सेहो ओहने स्थिति रहलै- बहुत दिन धरि। ओना सम्प्रति ओतौ (हिन्दीमे सेहो) इतिहास-दृष्टि आ सामाजिक द्वन्द्वबोधक ज्ञानसँ परिपूर्ण गजलकार लोकनि सार्वभौमिक अनुभूतिकें अभिव्यक्ति देबाक माध्यम नीक जकाँ बनौने छथि।

गजलक ऐ सहजता एवं भाव-चमत्कारक आकर्षणक कारणें आइ प्राय: सभ भारतीय भाषामे एकरा दुलरुआ बना कऽ राखल गेल छै। ई दुलरुआ सुकुमार छै, मुदा कमजोर नै। कखनो किछु कऽ सकैए। केहनो विस्फोट।

मैथिलीमे सेहो गजल आएल- ओहिना- सुकुमार, मुदा कमजोर नै। कखनो किछु कऽ सकैबला। कोनो विस्फोट। तें सुरेन्द्र नाथ कहै छथि- गजल हमर हथियार थिक। तारानन्द वियोगी एकरा *अपन युद्धक साक्ष्य* मानैत आगि जनमा रहल छथि-

दर्द जँ हदसँ टपल जाए तँ आगि जनमै अछि

बर्फ अंगार बनल जाए तँ आगि जनमै अछि

प्रेमचन्द्र पंकज गजलक प्रसंग कहै छथि-

ढोढ़िया नञि असली नाग छी गजल

मस्तीमे गरजैत बाघ छी गजल

प्रेमिकाक आँचर नहि, प्रीतमक बोल नहि

चेतनामे बरकल मिजाज छी गजल

गजलकें पारिभाषिक रूपसँ बुझबाक लेल एकर स्त्रोत-भाषा अरबी-फारसीक परम्पराक सूत्रकें पकड़ब आवश्यक भऽ जाइत अछि। ओतए एकर परिभाषा देल गेल छै- सुखन अज जनान (अथवा अज माशूक) गुफ्तन तथा बाजनान गुफ्तन करदैन। एकर अर्थ थिक स्त्रीगणक विषयमे वार्तालाप किंवा प्रेमी-प्रेमिकाक संवाद। आइ ई परिभाषा विस्तार पाबि सभ प्रकारक संवाद-प्रेषण-स्थापन करबामे सक्षम अछि- जँ ऐ परिभाषाकें संकुचित रूपसँ नै देखल जाए। प्रेम सार्वभौमिक अछि, सार्वस्थानिक अछि, सार्वकालिक अछि। जँ प्रेमक अर्थ विस्तृत अछि, प्रेम स्वयं एतेक विस्तारमे पसरल अछि तँ ने प्रेमी-प्रेमिका संकुचित भए सकैत अछि आ ने प्रेमी-प्रमिकाक वार्तालाप विषय विशेष पर सीमित रहि सकैत अछि। तें आइओ सभ भाषाक गजलमे उक्त परिभाषाकें घटित देखल जा सकैत अछि।

गजलक अपन भिन्न व्याकरण छै आ ई व्याकरण देखबामे जतबा सरल छै, वस्तुत: ओइसँ कइएक गुना जटिल छै। ओना ऊपरसँ लगैत अछि जे ई मतला, शेर आ मक्ताक चौकठिमे ठोकल एकटा काव्य-विधा थिक। मुदा एकर बहरक निर्बाह करबामे मगज दुहा जाइ छै। ध्यान देबाक बात थिक जे गजल लिखल नै जाइ छै, कहल जाइ छै। स्पष्ट अछि, जे एकर बहर (छन्द) क संरचनामे वज्न (मात्रा)क गणना शब्दक उच्चारणक अनुसार कएल जाइत अछि, जइमे अनेक गजलकार (तथाकथित) हरदा बाजि जाइ छथि। गजल किछु शेरक माला थिक। पारम्परिक रूपसँ गजलक प्रत्येक शेरक विषय भिन्न-भिन्न होइ छै, परन्तु एक गजलक प्रत्येक शेरमे रदीफ आ काफिया एके रहै छै। गजलक पहिल शेर मतला कहबैत अछि, जकर दुनू पाँती (मिसरा) सानुप्रासिक होइत अछि, अर्थात् रदीफ आ काफियासँ सामन रूपें युक्त रहैत अछि। एकर अन्तिम शेर मक्ता कहबैत अछि तखन, जखन ओइमे रचनाकारक नाम अथवा उपनामक प्रयोग होइत अछि, अन्यथा सामान्य शेर भऽ कऽ रहि जाइत अछि। बीचबला शेरक उपरका पाँतीक रदीफसँ मेल रहब आवश्यक नै। किन्तु निचला पाँतीकें रदीफसँ मेल अर्थात् सानुप्रासिक हएब अनिवार्य छै। शेरक लेल आवश्यक छै जे ओ कोनो छन्द विशेषमे रहए, जे निश्चित कएल गेल छै। ई छन्द विशेष बहर कहबैत अछि।

अस्तु, मैथिली गजलक इतिहास पर एक नजरि फेकबाक प्रयास कएल जाए तँ मैथिलीक पहिल गजल बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे लिखल गेल आ मैथिलीक पहिल गजलकार भेलाह पं. जीवन झा। जीवन झाक गजलमे एकर मुख्य गुण- सहजता एवं भाव-चमत्कार स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, जे ऐ

बातकें द्योतित करैत अछि जे ओ गजलकें कतेक लगीचसँ बुझबाक चेष्टा कएने छलाह, बुझने छलाह। हुनक एक गजलक मतला देखल जाए-

पड़ैए बूझि किछु ने ध्यानमे हम भेल पागल छी

चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी कि जागल छी

जीवन झा द्वारा रोपल गजलक ऐ पिपहीकें समय-समय पर भुवनेश्वर सिंह भुवन, यात्री, आरसी प्रसाद सिंह, डॉ. व्रजशोर वर्मा मणिपद्म आदि खाद-पानि दैत रहलाह आ ई वर्तमान रहल। बादमे केदारनाथ लाभ, सुधांशु शेखर चौधरी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विभूति आनन्द, कलानन्द भट्ट, सियाराम झा सरस, मार्कण्डेय प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र, राजेन्द्र बिमल, तारानन्द वियोगी, नरेन्द्र, देवशंकर नवीन आदिक सेवासँ ई एकटा झमटगर गाछक रूप धारण कऽ लेने अछि। मैथिलीक गजलकारक जँ सूची बनाओल जाए तँ आस्वस्त करत। किन्तु मैथिलीमे गजल-संग्रहक सर्वथा अभाव अछि- जकरा अंगुरी पर गानल जा सकैत अछि। मैथिली गजलक पहिल संग्रह थिक विभूति आनन्दक *उठा रहल घोघ तिमिर*। एकर प्रकाशन जून ८१ मे भेल। फेर कलानन्द भट्टक *कान्ह पर लहास हमर*, सियाराम झा सरस क *शोणिताएल पैरक निशान*, तारानन्द वियोगीक *अपन युद्धक साक्ष्य*, रमेशक *नागफेनी* आएल। सियाराम झा सरस क सम्पादनमे बारह गोटेक कुल चौरासीटा गजलक संकलन *लोकवेद आ लालकिला* प्रकाशित भेल। *थोड़े आगि थोड़े पानि* सरसजीक एहन गजल संग्रह थिक जे ऐ विधाकें अओर मजगूती प्रदान करैत अछि। सुरेन्द्र नाथक *गजल हमर हथियार थिक* निश्चित रूपसँ स्वागत योग्य अछि।

गजल-संग्रहक एहन अभाव थोड़ेक निरास अवश्य करैत अछि, मुदा सम्प्रति मैथिलीमे धुड़झाड़ गजलक रचना भए रहल अछि, अनेक बाधाक अछैतो। मैथिली गजल बहुत दिन धरि गजल बनाम गीतलक ओझराहटिमे पड़ल रहल। किन्तु कोनो भ्रममे नै पड़ल। सभ तर्कक जवाब दैत रहल। आगाँ बढ़ैत रहल। आइ मैथिली गजलक स्थिति ई अछि जे अनेक नव-पुरान रचनाकार अपन अभिव्यक्तिक माध्यम एकरा बनओने छथि, अपन स्वर गजलकें दऽ रहल छथि। डॉ. गंगेश गुंजन, डॉ. अरविन्द अक्कू, अरविन्द ठाकुर, डॉ. नरेश कुमार विकल, अजित आजाद, फूलचन्द्र झा प्रवीण आदि अपन अभिव्यक्तिक माध्यम गजलकें बनाए एकरा एकटा सशक्त विधाक सरूपमे प्रतिष्ठित कऽ रहल छथि। प्रसन्नताक विषय ईहो अछि जे आशीष अनचिन्हार *अनचिन्हार आखर* नामसँ गजलक लेल एकटा फराकसँ वेबसाइट तैयार कएने छथि जकरा माध्यमसँ अनेक नव-पुरान गजलकार लोकनिक गजल-रचना लगातार सोझाँ आबि रहल अछि।

कतिपय व्यक्ति एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितो एकरा मान्यता नै भेटि रहल छै। एहन बात प्राय: ऐ कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकें कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानि कऽ एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बुझैत

छथि। ऐ सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जनिकामे गजलक सूक्ष्मताकें बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिकें बुझबाक लेल हुनका लोकनिकें स्वयं प्रयास करऽ पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि कऽ भट्ठा नै धरओतनि। हँ, एतबा निश्चय, जे गजल धुड़झाड़ लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थ्यक बलपर समीक्षक-समालोचक लोकनिकें अपना दिस आकर्षित कइए कऽ छोड़त। हमरा सभकें मन पाड़बाक चाही जे एकटा एहनो समए छलै जहिआ नव-कविताक प्रति समीक्षक-समालोचक लोकनिक रबैया एहने छलनि। मुदा आइ? आइ की स्थिति छै? सएह होएतै गजलोक संग। निश्चय होएतै।

वस्तुत: मैथिली गजल आइ ओइ ठाम ठाढ़ अछि जतएसँ ओकरा एकसूत्रताधारी विचार, दर्शन, समाज-संहिताक अतिरिक्त राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रिय संवेदनाकें अभिव्यक्त करबाक स्त्रोत सहजहिं भेटि जाइ छै। सम्भावनासँ परिपूर्ण ऐ विधाक क्रमिक विकासक लेल आवश्यक अछि प्रतिबद्धतापूर्वक गजलक निरन्तर रचना हएब। से भए रहल अछि- ऐ रूपमे भए रहल अछि जे एकर भविष्य लेल आश्वस्त करैत अछि, निश्चित रूपसँ।

४

राजेन्द्र बिमल

मुन्नाजी: मैथिली साहित्य मध्य वर्तमान समयमे गजलक की दशा अछि, एकर भविष्यक की दिशा देखाइछ?

राजेन्द्र बिमल: गजल अत्यन्त लोकप्रिय विधा थिक। मैथिलीमे सेहो खूब लीखल जा रहल अछि आ पढ़लो जा रहल अछि। बहुत गजलकार एकर व्याकरणसँ कम परिचित छथि। मुदा भविष्य उज्जवल छै। मैथिली गजलमे अपन निजात्मकताक विकास शुभ संकेत थिक।

मुन्नाजी: मैथिलीक प्रकाशित गजलक संगोर (कतेको गजल संग्रह) आ मायानन्द मिश्रक गजलकेँ गीतल कहि प्रकाश्यक मादेँ गजेन्द्र ठाकुर एकरा अस्तित्वहीन कहि अपन सम्पादकीय आलेख माध्यमे अवधारणा स्पष्ट केलनि।अहाँक ऐपर अपन स्वतंत्र विचार की अछि?

राजेन्द्र बिमल: संगोर सभ नै देखल अछि। आदरणीय माया बाबूक गीतल (गीत-गजल) एक गोट प्रयोग थिक। हम कोनो सृजनकेँ निरर्थक नै बुझैत छी आ लेखन स्वतंत्रतामे विश्वास रखैत छी।

५

मंजर सुलेमान

जखन ऐ मिथिलामे अमीर खुशरो (१२२५-१३२५) सन विद्वान एलाह तँ ओहो ऐ भाषाक मधुरतासँ मुग्ध भऽ फारसी, मैथिली आ उर्दूक समिश्रणसँ कहलनि-

हिन्दु बच्चा है कि अजब हुस्न रै छै।

बर बक्ते सुखन गुफ्तम मुख फूल झरै छै॥

गुफ्तम ज लबे लालें तऽ यक बोसा बगीरम।

गुफ्ता के अरे राम तुर्क का ई करै छै।

(मंजर सुलेमान - त्याग-बलिदानक पवित्र पर्व मुहर्रम (मिथिला दर्शन नवम्बर-दिसम्बर २०१०)

६

शेफालिका वर्मा

आदरणीय मुन्नाजी,

अपनेक विषय गजल पर परिचर्चा बड नीक लागल मुदा मैथिलीक प्रोफेसर हम नै छी, तैं एकर जानकारी देनाइ हमरा लेल सुरुजकेँ दीपक देखेनाइ अछि। हँ हम एतबे जनैत छी जे पहिने छिटपुट गजल लिखल जाइत छल, हमहूँ पढ़ैत रही, कखनो हमरो नीक लागल छल। मुदा आशीष अनचिन्हारक कारण विदेहक पन्नापर गजलक जेना बाढ़ि आबि गेल अछि। गजल हमर सभसँ प्रिये

विधा हमरा लेल अछि, प्यार, रोमांससँ भरल भावातीत भऽ हृदएक उन्मेषमे जिबैत उर्दू गजल, शेरो शायरी सभ। हम तँ गजल माने प्यार मुहब्बते टा बूझैत छलौं जे शुद्ध प्रेम भावपर आधारित छल। एखनो हमर पुरना डायरीमे गजल सभक अंश लिखल अछि, कोमलकान्त पदावलीसँ परिपूर्ण मुदा मैथिलीमे एकर नाना अर्थे प्रयोग होइत देखलौं, कखनो नीक लगैत छल तँ कखनो कचोटी। मुदा जमाना कतऽ सँ कतऽ चलि गेल। सभ ठाम विकास भऽ रहल छै तँ मैथिली गजल केर सेहो नव परिभाषा उल्लेखनीय रहत। साँच पुछू तँ प्रायः सभ टा गजल हम अवश्य पढ़ैत छी, ऐलेल आशीष जीकेँ अशेष बधाइ। मैथिली साहित्यमे गजल विधा नूतन मुस्की लऽ सबहक ह्रदएकेँ आलोक लोकसँ भरि देत, संगहि विदेह परिवारकेँ जे नाना रुपे माँ मैथिलीक श्री वृद्धि कऽ रहल छथि।

७

मिहिर झा

गजल मूलतः अरबी भाषा केर काव्य विधा छै। गजल शब्दक अरबीमे माने छै स्त्रीसँ वा स्त्रीक बारेमे बात केनाइ। गजल जेखन अरबीसँ फारसीमे आएल तँ एकर शिल्प विधाक तँ पालन भेल लेकिन एकर विषय वस्तु भौतिक वा दैहिक रखैत एकर मर्ममे अध्यात्मिक प्रेमक अनुभूति आनि देलक। ऐ मर्मकेँ रखैत फारसी सूफी कवि सभ गजलक प्रसारमे महत्वपूर्ण योगदान केलन्हि। सूफी साधनामे विरहक बेशी महत्व छै, तइ कारणे, फारसी गजलमे विरह प्रेम केर बेशी उल्लेख अछि।

गजल जखन फारसी सँ उर्दू मे प्रवेश केलक तँ एकर शिल्प विधा तँ ओहिना रहलै लेकिन कथ्य एकदम भारतीय भऽ गेल। मध्य कालमे उर्दू फारसीसँ बहुत प्रभावित छलै आ एकर व्याकरण ओ शब्द जटिल फारसी होइ छलै। भारतकेँ स्वतंत्र भेलाक बाद उर्दू धीरे धीरे फारसीक प्रभावसँ निकलल आ गजलमे बोल चालक शब्द प्रयोगमे आबए लागल। संगहि एकर मर्म अपन परंपरागत मर्म "स्त्रीसँ वा स्त्री संबंधित"केँ कात छोड़ैत नव-नव आयाम अपनामे सम्मिलित केलक। ध्यान देबाक गप ई अछि जे गजल केर शिल्प विधामे कोनो बदलाओ नै आएल, केवल एकर मर्ममे परिवर्तन आएल। जे गजल अरबीमे मात्र प्रेम तक सीमित छल से आब अपनामे सभटा विषय वस्तु समेट लेलक।

हिन्दीक बाद गजल मराठी, अँग्रेजी होइत आब मैथिलीमे प्रवेश केलक आ धीरे धीरे मैथिली साहित्यमे अपन स्थान बना लेलक। मैथिलीमे सेहो गजलक शिल्प विधामे परिवर्तन नै भेलै, हँ एकर मर्म आ शब्दकोष पूर्ण मैथिल भऽ गेल। भाव भक्ति, प्रेम, वीर, विरहक होइक वा सामाजिक,

राजनीतिक वा व्यक्तिक कटाक्ष पर, सभ विधामे मैथिलीमे गजल देखबामे आबि रहल अछि। संगहि मिथिलाक संस्कार ओ परिवेशक छाप लैत मैथिली गजल आब पूर्णतः मैथिल भऽ चुकल अछि। गजलक मैथिली शिल्प विधाक लेखन विस्तारमे "अन्चिन्हार आखर" मे आलेखित अछि। बहुत रास मैथिली गजलकारक मैथिली गजलकारीमे प्रवेश ऐ बातक द्योतक अछि जे ई मैथिलीक पोर-पोरमे समा चुकल अछि आ कोनो एक विशेष स्तरक लोकक बदलामे ई जनकाव्य बनि चुकल अछि।

"मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप एवं संभावना सहित)" विषय पर अपन भावना हम गजलक रूपमे देबाक प्रयास कऽ रहल छी-

बैसलहुँ आइ करै ले मैथिली गजलक बखान हम
डूबि गेलहुँ उदगार मे केलहुँ नहि किछु ध्यान हम

गजल होइत छैक प्रेम महिमा एकर महान छैक
दू पाँति मे समेटा देलहुँ ई प्रेम गाथा क बखान हम

बहर रफीद और काफिया शेरक होइ छैक प्राण यौ
मतला मकता जोड़ि एहि मे बढेलौ शेरक शान हम

फारसी उर्दू अंग्रेजी सँ होइत ई आयल मिथिला धाम
तघज्जुल अपन बनाबी लऽ माछ मखान ओ पान हम

शास्त्रीय कहू वा आधुनिक वा पकड़ू अ-गजलक कान
समय संग बदलबै आब एहि गजलक प्राण हम

प्रेम विरह सूफी आ भक्तिमे कऽ चुकल ई नाम अमिट
जन जीवन सँ जोड़बै लऽ आधुनिकताक नाम हम

मुरद्दफ होइक वा गैर मुरद्दफ पबै छै एके शान
"शौकीन" क ई कथा अमोल राखब सदिखन ध्यान हम

८

ओम प्रकाश झा

मैथिली गजल पर परिचर्चा

मैथिली गजलक उद्भव आ विकास विषय पर कोनो विचार प्रकट करबाक बहुत योग्य तँ हम अपनाकेँ नै मानै छी, मुदा ई विषय देखि किछु कहैसँ अपनाकेँ रोकि नै पाबि रहल छी। मैथिली गजलक इतिहास ओना तँ बड्ड पुरान नै अछि। मुदा गीत आ कविता लेखनक कार्य बहुत दिनसँ मैथिलीमे चलि रहल अछि। गीत आ कवितामे मैथिलीक बड्ड धनिक इतिहास छै। भारतवर्षक आर्य भाषा सभमे यदि देखल जाए तँ ई अपने बुझा जाइ छै जे उत्पत्तिक बादेसँ मैथिलीमे नीक गीत आ कविता लिखेनाइ शुरू भऽ गेल छल। गजल लिखबाक कोनो परम्परा मैथिलीमे नै छल। २० म शताब्दीमे गजल लिखबाक शुरूआत भेल आ २०म शताब्दीक उतरार्द्धमे ऐमे तेजी आएल। हम अपने किछु दिन पूर्व धरि गजलसँ अनजान छलौं। आशीष अनचिन्हार जी आ गजेन्द्र जीक सम्पर्कमे आबि मैथिली गजलक विषयमे किछु ज्ञान प्राप्त भेल। अनचिन्हार आखर ब्लाग पूर्ण रूपसँ गजलक लेल समर्पित अछि आ गजलक शास्त्रीयताकेँ नीक जकाँ ऐ ब्लागपर बुझाओल गेल अछि। यएह ब्लाग पढ़ि कऽ हम थोड़ बहुत सरल वार्णिक बहरक गजल लिखबाक प्रयास करैत रहै छी। एखन मैथिलीमे गजल बहुत तँ नै लिखल गेल अछि, मुदा गजलक अकालो नै बुझाइत अछि। एकटा नीक गप जे हमरा नोटिसमे आएल जे आब मैथिली पत्र-पत्रिकामे सेहो मैथिली गजल नियमित रूपेँ छपि रहल अछि। उत्कृष्टतापर हम किछु बाजबा योग्य नै छी। मुदा एतबा कहब जे जेना जेना नव नव गजलकार सभ एता आ गजल पढ़बाक रूचि बढ़ल जेतै, तेना तेना नव प्रयोगक संग नीक नीक रचना केर बाढ़ि आबि जेतै। हमरा बुझने मैथिली गजल एखन जवान भऽ रहल अछि आ समएक संग एकर जवानी मैथिली गजलकेँ बहुत ऊँच स्थान पर लऽ जाएत।

९

गजेन्द्र ठाकुर

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा, रोला ई सभ एकटा स्थापित विधा अछि। स्थापित विधा माने जकर लिखबाक विधि जइ भाषा सभक ई मूल खोज अछि, ओइ भाषामे स्थापित भऽ गेल अछि। जँ हाइकू लिखबा काल कोनो निअम पालन नै करी तँ ओकर नाम क्षणिका पड़ि गेलासँ ओ हाइकू दोषविहीन नै भऽ जाएत। जँ कोनो भाषासँ हम गजल/ रुबाइ/ कता मैथिलीमे प्रयोग लेल सोचै छी तँ ऐ कारणसँ जे ओ ओइ भाषाक चमत्कारिक चीज अछि, मैथिलीक छौंक लगलासँ कोनो आर चमत्कारक हम आशा राखै छी। सएह हाइकू, शेनर्यू, टनका आ हैबून लेल सेहो लागू अछि। आब एतऽ ई देखबाक अछि जे कोनो विधाक आयात सतर्कतासँ हुअए, ओइ विधाक सैद्धान्तिक पक्ष सुदृढ़ छै। से जेना तेना आयात कऽ हाथपर हाथ धरि सए बर्ख आर इन्तजार करी ई सोचि जे तकर बाद एकर मैथिली छौंकबला अलग सिद्धान्त बनत, तँ तइ लेल स्थापित विधाक आयातक कोन बेगरता? एतेक समएमे तँ एकटा आर नव विधा बनि जाएत!

हँ, मात्र लिप्यांतरण कऽ देलासँ उर्दूक सभ गजल निअम हिन्दीक भऽ जाइत अछि, मुदा ओतहु वर्तनीक भिन्नता मारते रास काफियाक उपनिअमक निर्माणक बाध्यता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली तँ साफे अलग भाषा अछि तेँ एकर काफियाक निअम सोझे आयातित नै भऽ सकैए। बहरमे वर्ण/ मात्राक गणना पद्धति सेहो हिन्दी-उर्दूमे मात्र कोनो खास शब्दक वर्तनीक भिन्नताक कारण कखनो काल उपनिअम बनेबाक खगता अनुभूत करबैए, मुदा से मैथिलीमे सोझे आयातित नै भऽ सकैए कारण ई साफे अलग भाषा थिक। तँ की काफिया आ बहरक वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति मैथिलीमे साफे छोड़ि देल जाए? आकि ओइमे ततेक ढील दऽ देल जाए जे ओकर कोनो मतलबे नै रहए? आ तखन जे बहरमे लिखथि वा काफियाक शुद्ध प्रयोग करथि से भेलथि कट्टर आकि जे एकर विरोध करथि से भेला कट्टर? आ जँ बिन काफिया आ बहरक गजलकेँ गजल नै कहल जाए तँ ओ रचना महत्वहीन भऽ गेल? ओ गजल नै भेल, वा जीवन युगक मैथिली गजल भेल, मुदा गीत/ कविता तँ भेबे कएल। कोनो गजल मात्र काफिया आ बहरक शुद्धता मात्र रहने उत्कृष्ट तँ नहिए हएत, मुदा उत्कृष्ट हेबाक सम्भावनाक प्रतिशतता कएक गुणा बढ़त। तहिना कोनो गजल सन रचना जँ अशुद्ध काफियामे आ बे-बहर अछि तँ सएह मात्र ओकर उत्कृष्टताक प्रमाण भऽ जाएत? एकर विपरीत हम ई कहए चाहब जे ओहनो रचना उत्कृष्ट भऽ सकैए, मुदा तकर सम्भावनाक प्रतिशतता भयंकर रूपेँ घटि जाएत।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा आ रोला निअमबद्ध रचना अछि। एकरा अकविता, गद्य-कविता आ गीतक स्वरूप देलासँ अहाँ भाषाक कोन उपकार कऽ सकब? कारण अकविता, गद्य-कविता आ गीत तँ स्वयं स्थापित विधाक स्वरूप लऽ लेने अछि। छोट कविता क्षणिका भऽ सकत, हाइकू नै। कुण्डलिया, दोहा आ रोलाक निअम मैथिलीमे बनेबामे कोनो असोकर्ज नै भेल कारण ई सोझे आयातित भऽ गेल मुदा गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबूनमे वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति जापानी आ उर्दू-फारसीसँ अहाँ लइए नै सकै छी। जापानक लेखन पद्धति अल्फाबेट (वर्ण) आधारित अछिये नै, तखन अहाँ ओकर गणना पद्धति कोना आयात कऽ सकब।

ओकर तरीका छै, पाश्चात्य तरीका आ सिलेबल आधारित लेखन पद्धति सेहो जापानी भाषामे होइ छै, से तकर प्रयोग कऽ ओइ चित्रात्मक लेखनक सिलेबल आधारित शैलीक मिलान संस्कृतक वार्णिक छन्द गणना पद्धतिसँ कएल गेल आ ओकरा हाइकू, शेनर्यू आ टनका लेल प्रयोग कएल गेल। तहिना गजल, कता आ रुबाइमे वैज्ञानिक आधारपर मैथिली भाषाक सापेक्ष निअम बनाओल गेल जइसँ गजल, कता आ रुबाइ मैथिलीमे दोसर भाषासँ एलाक उपरान्तो अपन मूल विशेषता बना कऽ राखि सकल। आ तकर बाद जे मैथिली गजल आ गजलकारक संख्यामे परिणामात्क आ गुणात्मक वृद्धि भेल अछि, से दुनियाँक सोझाँ अछि।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

प्रेमर्षि जीक ई आलेख विदेहक अंक 21मे छल तकरा बाद अनचिन्हार आखरपर सेहो देल गेल। वर्तमान समयमे ई आलेख पढ़एसँ पहिने प्रेमर्षि जीक ई विचार देखू जे की ऐ विशेषांक लेल माँगल गेल सहमति केर बाद आएल छल–''आशिषजी, ओ कोनो गम्भीर आलेख नइ छै। हमरा जनैत ओ आलेख हम तहिया लिखने रही जहिया गजलपर बेसी काज नइ होइत छलै। एखनुक सन्दर्भमे ओ आलेख बहुत हल्लुक भऽ सकै छै। आ वर्तमानमे कने मेहनति कऽकऽ लिखबाक अवस्थामे सेहो हम नइ छी- समयाभावक कारणेँ। तेँ हम नइ राखू से तेँ नइ कहब, मुदा कमसँ कम हमर ई स्वीकार्यता उल्लेख कऽकऽ राखि देबै तेँ भऽ सकैछ जे छपलाक बादहु हम दोषक भागी कने कम बनी। धन्यवाद''

1

मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

रूप-रङ्ग एवं चालि-प्रकृति देखलापर गीत आ गजल दुनू सहोदरे बुझाइत छैक। मुदा मैथिलीमे गीत अति प्राचीन काव्यशैलीक रूपमे चलैत आएल अछि, जखन कि गजल अपेक्षाकृत अत्यन्त नवीन रूपमे। एखन दुनूकेँ एकठाम देखलापर एना लगैत छैक जेना गीत-गजल कोनो कुम्भक मेलामे एक-दोसरासँ बिछुड़ि गेल छल। मेलामे भोतिआइत-भासैत गजल अरबदिस पहुँचि गेल। गजल ओम्हरे पलल-बढ़ल आ जखन बेस जुआन भऽ गेल तेँ अपन बिछुड़ल सहोदरकेँ तकैत गीतक गाम मिथिलाधरि सेहो पहुँचि गेल। जखन दुनूक भेट भेलैक तेँ किछु समय दुनूमे अपरिचयक अवस्था बनल रहलैक। मिथिलाक माटिमे पोसाएल गीत एकरा अपन जगह कब्जा करऽ आएल प्रतिद्वन्दीक रूपमे सेहो देखलक। मुदा जखन दुनू एक-दोसराकेँ लगसँ हियाकऽ देखलक तखन बुझबामे अएलैक- आहि रे बा, हमरासभमे एना बैर किएक, हम दुनू तेँ सहोदरे छी! तकरा बाद मिथिलाक धरतीपर डेगसँ डेग मिला दुनू पूर्ण भ्रातृत्व भावेँ निरन्तर आगाँ बढ़ैत रहल अछि।

गीत आ गजलक स्वरूप देखलापर दुनूक स्वभावमे अपन पोसुआ जगहक स्थानीयताक असरि पूरापूर देखबामे अबैत अछि। गीत एना लगैत छैक जेना रङ्गबिरङ्गी फूलकेँ सैँतिकऽ सजाओल सेजौट हो। मिथिलाक गीतमे काँटोसन बात जँ कहल जाइछ तेँ फूलेसन मोलायम भावमे। एकरा हम एहू तरहेँ कहि सकैत छी जे गीत फूलक लतमारापर चलबैत लोककेँ भावक ऊँचाइधरि पहुँचबैत अछि। एहिमे मिथिलाक लोकव्यवहार एवं मानवीय भाव प्रमुख भूमिका निर्वाह करैत आएल अछि। जाहि भाषाक गारियोमे रिदम आ मधुरता होइत छैक, ओहि भूमिपर पोसाएल गीतक स्वरूप कटाह-धराह भइए नहि सकैत अछि। कही जे गीतमे तेँ लालीगुराँसक फूलजकाँ ओ ताकत विद्यमान छैक जे माछ खाइत काल जँ गऽरमे काँट अटकि गेल तेँ तकरो गलाकऽ समाप्त कऽ दैत छैक।

गजलक बगय-बानि देखबामे भलहि गीतेजकाँ सुरेबगर लगैक, एहिमे गीतसन नरमाहटि नहि होइत छैक। उसराह मरुभूमिमे पोसाएल भेलाक कारणे गजलक स्वभाव किछु उस्सठ होइत छैक। ई कट्टर

इस्लामीसभक सङ्गतिमे बेसी रहल अछि, तेँ एकर स्वभावमे ‘‘जब कुछ न चलेगी तो ये तलवार चलेगा’’ सन तेज तेवरबेसी देखबामे अबैत छैक। यद्यपि गजलकेँ प्रेमक अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम मानल जाइत छैक। गजल कहितहिँदेरी लोकक मन-मस्तिष्कमे प्रेममय माहौल नाचि उठैत छैक, एहि बातसँ हम कतहु असहमत नहि छी। मुदा गजलमे प्रेमक बात सेहो बेस धरगर अन्दाजमे कहल जाइत छैक। कहबाक तात्पर्य जे गजल तरुआरिजकाँ सीधे बेध दैत छैक लक्ष्यकेँ। लाइलपटमे बेसी नहि रहैत छैक गजल। मिथिलाक सन्दर्भमे गीत आ गजलक एक्कहि तरहेँ जँ अन्तर देखबऽ चाही तँ ई कहल जा सकैत अछि जे गजल फूलक प्रक्षेपणपर्यन्त तरुआरिजकाँ करैत अछि, जखन कि गीत तरुआरि सेहो फूलजकाँ भँजैत अछि।

मैथिलीमे संख्यात्मक रूपेँ गजल आनहि विधाजकाँ भलहि कम लिखल जाइत रहल हो, मुदा गुणवत्ताक दृष्टिएँ ई हिन्दी वा नेपाली गजलसँ कतहु कनेको झूस नहि देखबामे अबैत अछि। एकर कारण इहो भऽ सकैत छैक जे हिन्दी, नेपाली आ मैथिली तीनू भाषामे गजलक प्रवेश एक्कहि मुहूर्त्तमे भेल छैक। गजलक श्रीगणेश करौनिहार हिन्दीक भारतेन्दु, नेपालीक मोतीराम भट्ट आ मैथिलीक पं. जीवन झा एक्कहि कालखण्डक स्त्रष्टासभ छथि।

मैथिलीयोमे गजल आब एतबा लिखल जा चुकल अछि जे एकर संरचनाक मादे किछु कहनाइ दिनहिमे डिबिया बारबजकाँ लगैत अछि। एहनोमे यदाकदा गजलक नामपर किछु एहनो पाँतिसभ पत्रपत्रिकामे अभरि जाइत अछि, जकरा देखलापर मोन किछु झुझुआन भइए जाइत छैक। कतेकोगोटेक रचना देखलापर एहनो बुझाइत अछि, जेना ओलोकनि दू-दू पाँतिवला तुकबन्दीक एकटा समूहकेँ गजल बूझैत छथि। हमरा जनैत ओलोकनि गजलकेँ दूरेसँ देखिकऽ ओहिमे अपन पाण्डित्य छाँटब शुरू कऽ दैत छथि। जँ मैथिली साहित्यक गुणधर्मकेँ आत्मसात कऽ चलैत कोनो व्यक्ति एकबेर दू-चारिटा गजल ढङ्गसँ देखि लिअए, तँ हमरा जनैत ओकरामे गजलक संरचनाप्रति कोनो तरहक द्विविधा नहि रहि जएतैक।

तेँ सामान्यतः गजलक सम्बन्धमे नव जिज्ञासुक लेल जँ किछु कहल जाए तँ विना कोनो पारिभाषिक शब्दक प्रयोग कएने हम एहि तरहेँ अपन विचार राखऽ चाहैत छी- गजलक पहिल दू पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत छैक। अन्तिम एक, दू वा अधिक शब्द सभ पाँतिमे सझिया रहलहुपर साझी शब्दसँ पहिनुक शब्दमेअनुप्रास वा कही तुकबन्दी मिलल रहबाक चाही। अन्य दू-दू पाँतिमे पहिल पाँति अनुप्रासक दृष्टिएँ स्वच्छन्द रहैत अछि। मुदा दोसर पाँति वा कही जे पछिला पाँति स्थायीवला अनुप्रासकेँ पछुअबैत चलैत छैक।

ई तँ भेल गजलक मुह-कानक संरचनासम्बन्धी बात। मुदा खालि मुहे-कानपर ध्यान देल जाए आ ओकर कथ्य जँ गोङिआइत वा बौआइत रहि जाए तँ देखबामे गजल लगितो यथार्थमे ओ गीजल भऽ जाइत अछि। तेँ प्रस्तुतिकरणमे किछु रहस्य, किछु रोमाञ्चक सङ्ग समधानल चोटजकाँ गजलक शब्दसभ ताल-मात्राक प्रवाहमय साँचमे खचाखच बैसैत चलि जएबाक चाही। गजलक पाँतिकेँ अर्थवत्ताक हिसाबेँ जँ देखल जाए तँ कहि सकैत छी जे हऽरक सिराउरजकाँ ई चलैत चलि जाइत

छैक। हऽरक पहिल सिराउर जाहि तरहेँ धरतीक छाती चीरिकऽ ओहिमे कोनो चीज जनमाओल जा सकबाक आधार प्रदान करैत छैक, तहिना गजलक पहिल पाँति कल्पना वा विषयवस्तुक उठान करैत अछि, दोसर पाँति हऽरक दोसर सिराउरक कार्यशैलीक अनुकरण करैत पहिलमे खसाओल बीजकेँ आवश्यक मात्रमे तोपन दऽकऽ पुनः आगू बढ़बाक मार्ग प्रशस्त्र करैत अछि। गजलक प्रत्येक दू-पाँति अपनहुमे स्वतन्त्र रहैत अछि आ एक-दोसराक सङ्ग तादात्म्य स्थापित करैत समग्रमे सेहो एकटा विशिष्ट अर्थ दैत अछि। एकरा दोसर तरहेँ एहुना कहल जा सकैत अछि जे गजलक पहिल पाँति कनसारसँ निकालल लालोलाल लोह रहैत अछि, दोसर पाँति ओकरा निर्दिष्ट आकारदिस बढ़एबाक लेल पड़ऽ वला घनक समधानल चोट भेल करैत अछि।

गीतक सृजनमे सिद्धहस्त मैथिलसभ थोड़े बगय-बानि बुझितहिँ आसानीसँ गजलक सृजन करऽ लगैत छथि। सम्भवतः तेँ आरसीप्रसाद सिंह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ महेन्द्र, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. गङ्गेश गुञ्जन, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र आदि मूलतः गीत क्षेत्रक व्यक्तित्व रहितहु गजलमे सेहो कलम चलौलनि। ओहन सिद्धहस्त व्यक्तिसभक लेल हमर ई गजल लिखबाक तौर-तरिकाक मादे किछु कहब हास्यास्पद भऽ सकैत अछि, मुदा नवसिखुआसभकेँ भरिसक ई किछु सहज बुझाइक।

मैथिलीमेकलम चलौनिहारसभमध्य प्रायः सभ एक-आध हाथ गजलोमे अजमबैत पाओल गेलाह अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’ सेहो ‘‘भगवान हमर ई मिथिला’’ शीर्षक कविता पूर्णतः गजलक संरचनामे लिखने छथि। मुदा सियाराम झा ‘‘सरस’’, स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ.राजेन्द्र विमल सन किछु साहित्यकार खाँटी गजलकारक रूपमे चिन्हल जाइत छथि। ओना सोमदेव, डॉ.केदारनाथ लाभ, डॉ.तारानन्द वियोगी, डॉ.रामचैतन्य धीरज, बाबा वैद्यनाथ, डॉ. विभूति आनन्द, डा.धीरेन्द्र धीर, फजलुर्रहमान हाशमी, रमेश, बैकुण्ठ विदेह, डा.रामदेव झा, रोशन जनकपुरी, पं. नित्यानन्द मिश्र, देवशङ्कर नवीन, श्यामसुन्दर शशि, जनार्दन ललन, जियाउर्ररहमान जाफरी, अजितकुमार आजाद, अशोक दत्त आदिसमेत कतेको स्त्रष्टाक गजल मैथिली गजल-संसारकेँ विस्तृति दैत आएल अछि।

गजलमे महिला हस्ताक्षर बहुत कम देखल जाइत अछि। मैथिली विकास मञ्चद्वारा बहराइत पल्लवक पूर्णाङ्क 15, 2051 चैतक अङ्क गजल अङ्कक रूपमे बहराएल अछि। सम्भवतः 34 गोट अलग-अलग गजलकारक एकठाम भेल समायोजनक ई पहिल वानगी हएत। एहि अङ्कमे डा. शेफालिका वर्मा एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे गजलक सङ्ग प्रस्तुत भेलीह अछि। एही अङ्कक आधारपर नेपालीमे मैथिली गजल सम्बन्धी दूगोट समालोचनात्मक आलेख सेहो लिखाएल अछि। पहिल मनु ब्राजाकीद्वारा कान्तिपुर 2052 जेठ 27 गतेक अङ्कमे आ दोसर डा. रामदयाल राकेशद्वारा गोरखापत्र 2052 फागुन 26 गतेक अङ्कमे। छिटफुट आनहु गजल सङ्कलन बहराएल होएत, मुदा तकर जानकारी एहि लेखककेँ नहि छैक। हँ, सियाराम झा ‘‘सरस’’क सम्पादनमे बहराएल ‘‘लोकवेद आ लालकिला’’ मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप दऽ बहुत किछु फरिछाकऽ कहैत पाओल गेल अछि। एहिमे सरससहित तारानन्द वियोगी आ देवशङ्कर नवीनद्वारा प्रस्तुत गजलसम्बन्धी आलेख सेहो मैथिली गजलक तत्कालीन अवस्थाधरिक साङ्गोपाङ्ग चित्र प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि।

समग्रमे मैथिली गजलक विषयमे ई कहि सकैत छी जे मैथिली गीतक खेतसँ प्राप्त हलगर माटिमे गुणवत्ताक दृष्टिएँ मैथिली गजल निरन्तर बढ़िरहल अछि, बढ़िएरहल अछि।

आशीष अनचिन्हार

1

पहरा-अधपहरा

आइ हम पढ़लहुँ बाबा बैद्यनाथ कृत " पहरा इमानपर " जे की 1989मे प्रकाशित भेल आ ऐमे कुल मिला तीस टा गजल अछि। धेआन देबै विभक्ति शब्दमे सटल अछि आ ई गजलकारे द्वारा कएल गेल अछि आ हमरा लोकनि सेहो ऐ परम्पराक अनुयायी छी। तीसटा गजलकेँ छोड़ि ऐ संग्रहमे आरसी प्रसाद सिंह, गोपाल जी झा गोपेश, सोमदेव, मार्कण्डेय प्रवासी, जीवकान्त, रमानंद झा रमण, छात्रानंद सिंह झा ओ विभूति आनंद जीक संक्षिप्त टिप्पणी सेहो अछि। ई गजल संग्रह मात्र 32 पन्नाक अछि। आश्चर्य ऐ गप्पक जे 1989मे प्रकाशित भेलाक बाबजूदो ओहि समयक आन गजलकार (जे की एखनो जीवित आ रचनारत छथि) ऐ गजल संग्रह कोनो चर्चा नै केने छथि। जँ गौरसँ अहाँ 1989-2008 बला कालखण्ड देखब तँ बहुत कम्मे ठाम हिनक वा हिनकर पोथीक चर्च भेटत आ ओहूमे अधिकांश चर्च अ-गजलकार (मुदा अपना विधामे प्रतिष्ठित) रचनाकार द्वारा भेल अछि।

की कारण छै जे एकटा गजलकार दोसर गजलकारक चर्चा नै करए चाहैत अछि। खराप वा नीक बादक विषय भेल मुदा चर्चा तँ हेबाक चाही। हमर गजल एहन, हमर गजल ओहन ऐ तरहँक चर्चा बहुत भेटत मुदा एकटा गजलकार दोसर गजलकारक चर्चा नै करत। आखिर किए ? वा एना कहू जे गजलकारक चर्चा के करत कथाकार की नाटककार आ की आन। जँ ई सभ करबो करता तँ ओहन समयमे जखन की गजल पूर्णरूपेण विकसित भ' क' देखार भ' जाएत तखन। मुदा प्रारम्भिक कालमे तँ स्वयं एक गजलकारकेँ दोसर गजलकारक चर्चा कर' पड़तन्हि, आलोचना आ समीक्षा कर' पड़तन्हि तखने आनो आलोचक सभ गजलपर लिखबाक प्रयास करता। जँ प्रारम्भिके कालमे अहाँ सोचि लेबै मात्र हमरे गजल चर्चा योग्य दोसरक नै तखन अहाँ गजल लीखू की आन कोनो विधा ओकर विकास नै हएत। मात्र पुरने गजलकार सभमे एहन बेमारी छै से नै नव गजलकार सभ सेहो ऐ बेमारीकेँ पोसने छथि। नवमे देखी तँ चंदन झा, राजीव रंजन मिश्र, पंकज चौधरी नवल श्री,जगदानंद झा मनु, अमित मिश्र आदिमे आलोचना-समालोचना-समीक्षा लिखबाक प्रतिभा छनि मुदा ओकरा उपयोग नै करै छथि। आब हमरा लग ई प्रश्न अछि जे जँ ई सभ केकरो चर्च नै करथिन्ह तँ हिनका लोकनिक चर्च के करत। आब ई सभ जरूर कहता जे हम सभ स्वानतः सुखाय रचना करै छी तँए हमर समीक्षाक कोनो जरूरति नै मुदा हमरो बूझल अछि, हुनको बूझल छन्हि आ सभकेँ बूझल छै जे साहित्यकार केखनो स्वानतः सुखाय रचना नै करै छै। केकरो ने केकरो लेल ओ रचना जरूर रचै छै.....खास क' एहन समयमे जखन की हरेक रचनाकार अपना आपकेँ प्रगतिशील आ जनवादी घोषित करै अछि। हमरा बुझने कथित स्वानतः सुखाय बला रचना जनवादी आ प्रगतिशील भैए नै सकैए। कारण प्रगतिशील आ जनवादी रचना जनता लेल लिखल जाइ छै स्वानतः सुखाय लेल नै। हमरा बुझने आने विधाकार जकाँ प्रारम्भिक दौरमे गजलकारकेँ गजलक दिशा बनाब' पडतै। हँ बादमे बहुत सम्भव जे आनो विधाकार सभ गजल आलोचनापर हाथ चलाबथि

मुदा शुरू तँ गजलकारेकेँ कर' पड़तै। सभ नव-पुरान गजलकारकेँ ऐ दिशामे सोचबाक चाही। हरेक पोथीमे नीक वा खराप रहै छै मुदा जँ चर्चे नै करबै तँ ओ सोंझा कोना आएत। हमरा जनैत एक गजलकार द्वारा दोसर गजलकारक आलोचना नै करबाक परंपरा जे सियाराम झा सरस जी द्वारा शुरू कएल गेल तकरा चंदन झा, राजीव रंजन मिश्र, पंकज चौधरी नवल श्री, अमित मिश्र आदि नीक जकाँ बढ़ा रहल छथि। आ अंततः ई भविष्य लेल खतरनाक साबित हएत। मुदा ओमप्रकाश जी हमर कथनक अपवाद छथि। ओ जतबा मनोयोगसँ अपन गजल लीखै छथि ततबा मनोयोगसँ ओ दोसरक गजल पढ़ि ओकर आलोचना समीक्षा करै छथि। हमरा जनैत ओमप्रकाश जी मैथिली गजलक पहिल आलोचक-समालोचक-समीक्षक छथि (बहरयुक्त कालखण्ड बला)। चंदन झा, राजीव रंजन मिश्र, पंकज चौधरी नवल श्री,जगदानंद झा मनु, अमित मिश्र आदि ओमप्रकाश जीसँ प्रेरणा ल' क' कमसँ कम बर्खमे एकटा गजल पोथीक आलोचना लिखथि तँ मैथिली गजल नीक दिशामे आबि जाएत। नव गजलकारकेँ बहुत बेसी दायित्व लेब' पड़तन्हि तखने गजलक दिशा सही हेतै। आ जँ गजलक दिशा सही भेलै तँ बूझू जे गजलकारक दिशा सेहो सही भ' गेलै। ओना हम ई जरूर कह' चाहब जे हमरा लोकनि ऐ बहसमे समय नै बरबाद करी जे के आलोचना केलाह आ के नै केला। जे भेलै से भेलै मुदा आबसँ शुरू भ' जेबाक चाही।

आब हमरा लोकनि आबी बाबा बैद्यनाथ जीक कृतिपर। कृति थिक गजल आ तँए हम एकरा तीन भागमे बाँटब--

1) व्याकरण पक्ष 2) भाषा पक्ष, आ 3) भाव पक्ष

तँ पहिले देखी व्याकरण पक्ष। ऐ संग्रहक कोनो गजलमे वर्णवृत नै अछि। मने पूरा-पूरी ई संग्रह बेबहर गजल संग्रह थिक। किछु उदहारण देखू। पहिने ऐ संग्रहक पहिल गजलक मतला आ तकर बाद ओकर दोसर शेर देखू----

एक बेर फेरु नजरि शरण हम आयल छी

212-122-12-122222

वा 212-12-2212-122222

सौंसे संसारसँ हम सदति सताएल छी

222222-12-1222

वा 222211-221-1222

ई छल मतला आ एकर दूनू तरहें होमए बला मात्रा क्रम अहाँ सभहँक सामनेमे अछि। कहबाक मतलब जे मतलामे वर्णवृत नै अछि। आब कने एही गजलक दोसर शेर देखी---

सभ दिन हम मोह निशामे सूतल रहलौं

22211-2222222

व्यर्थ-जंजालमे हम जन्म गमायल छी

2122-1222-11222

वा 21-2212212-1222

तँ हरा लोकनि ई देखि रहल छी जे गजलमे वर्णवृत नै अछि मने गजल बहर युक्त नै अछि।

आ ई हालति प्रायः तीसो गजलमे अछि। कोनो गजलक कोनो शेरक दुन्नू पाँतिमे तँ वर्णवृत आबि जाइए मुदा ओकर आगू-पाछू बलामे नै। जेना एकटा उदाहरण देखू। ई उनतीसम गजलक मतला थिक--

भोर भागल जेना दूपहर देखि कऽ

2122-222-122-11

गाम गामो ने रहलै शहर देखि कऽ

2122-222-122-11

तँ हमरा लोकनि ई देखलहुँ जे ऐ मतलामे तँ वर्णवृत अछि। मुदा एही गजलक आगूक शेर देखू---

आयत गरमी जखन नहि पानियें पड़त

2222-1222-12-12

हेतै खेती ने छुच्छे नहर देखि कऽ

2222222-122-12

आब अहाँ सभ अपने बूझि सकै छिऐ जे गड़बड़ी कत' छै। संग्रहक तीसो गजलमे ई बेमारी छै। किछु लोक कहि सकै छथि जे भ' सकैए जे शाइर ओहि समयमे हिन्दी गजलमे प्रचलित मात्रिक छन्दमे लिखने हेता। तँ हमर कहब जे मात्रिक छन्द गजलक छन्द होइते नै छै आ दोसर गप्प जे ओ उदाहरणमे देल शेरक मात्राकेँ जोड़ि ईहो देखि लेथु जे मात्रिक छै की नै।

व्याकरणमे मात्र बहरे (वर्णवृते) नै होइ छै काफिया आ रदीफ सेहो होइत छै। ऐ संग्रहक रदीफ ठीक अछि (कारण रदीफ अपरिवर्तित होइ छै तँए --) । ऐ संग्रहक अधिकांश काफिया ठीक अछि मात्र किछुए काफिया गलत अछि। आ हमरा बुझैत ओइ समय (1989क) केर हिसाबसँ ई बहुत बड़का उपल्बधि अछि। जखन की आइ 2013मे एहन स्थिति अछि जे गजलपर एतेक चर्चाक बादों महान गजलकार सभ काफिया एहन सरल वस्तुमे गलती करै छथि। हमरा हिसाबें बाबा बैद्यनाथ जी ऐ लेल बधाइ केर पात्र छथि। आब देखी किछु गलत काफियाक सूची जे ऐ संग्रहमे अछि---

दोसर गजलक मतला---

झगड़ा कियै बझल छै गामक सिमानपर

पहरा कोना लगयबै लोकक इमानपर

ऐ मतलामे काफिया शास्त्रक हिसाबें काफिया भेल--- " इ " स्वरक संग "मानपर"। मुदा एकर बाद आन-आन शेर सभमे क्रमशः " गुमानपर ", " जानपर", "पुरानपर " ," दलानपर " , " कुरानपर ", " नादान पर", " तूफानपर" आ "कृपाणपर" अछि। (जँ ऐ गजलमे पर विभक्ति नै रहतै तँ काफिया ऐ मतलामे काफिया शास्त्रक हिसाबें काफिया होइतै--- " इ " स्वरक संग "मान" संगे-संग जँ मतलामे "सिमानपर" केर बाद जँ " जानपर" आबि जइतै तखन ऐ गजलक सभ काफिया एकदम्म सही भ' जइतै। आब हमरा विश्वास अछि जे गजलक जानकारक संग पाठक सभ सेहो बुझि गेल हेता जे गड़बड़ी कत' छै)| ठीक इएह गड़बड़ी ऐ संग्रहक गजल संख्या 16,13,19 आ 27मे सेहो अछि। तहिना गजल संख्या दसकेँ देखू। ई गजल बिना रदीफक अछि (बिना रदीफकेँ तँ गजल भ' सकैए मुदा बिना काफियाक नै)---

पहिल शेर अछि--

क्यो एकरा दयौक नहि टोक

ई अछि बहिरा ओ अछि बौक

आन शेरक काफिया अछि--झोंक, थोक, नोक, आलोक आदि। काफिया शास्त्रक हिसाबें टोक केर काफिया, थोक, नोक, आलोक , आदि। मुदा ऐ शेरमे टोक केर काफिया अछि बौक जे की गलत अछि।

आब आबी कने ऐ संग्रहक भाषा पक्षपर। भाषा तँ ऐ संग्रहक मैथिली थिक मुदा गजल संख्या 6मे काफिया बैसाब' के चक्करमे एहनो काफिया ल' लेलथि जे की हिन्दीक क्रिया अछि आ मैथिलीमे मान्य नै अछि। गजल संख्या 6 केर मतला देखू---

बन्धुवर कोन बाट दुनियाँ जा रहल छै

सत्य कानय झूठ कीर्तन गा रहल छै

ऐ गजलक आन शेरक काफिया सभ अछि-- पा, खा, छा, बा (मूँह बा), आ ....

आब ई देखू जे एतेक हिन्दी क्रियामेसँ मात्र टूइएटा क्रिया मैथिलीमे मान्य छै-- जा एवं खा। बाद बाँकी एखन धरि मान्य नै छै। हमरा हिसाबें अग्राह्य हिन्दी क्रियाकेँ प्रयोग करब भाषाकेँ दूषित करबाक चेष्टा अछि। तथाकथित प्रगतिशील गजलकार नरेन्द्र एही प्रकारक भाषाक प्रयोग करै छथि आ ऐ लेल हम ने बाबा बैद्यनाथ जीक समर्थन करै छी आ ने नरेन्द्र जीक। हँ, एतबा कहबामे हमरा कोनो संकोच नै जे नरेन्द्र जी अपन 100मेसँ 95टा गजलमे एहन भाषा प्रयोग करै छथि तँ बाबा बैद्यनाथ 100मेसँ 1टामे। ओना ऐ ठाम ई जानब रोचक हएत जे एहन काफियाक प्रयोग करब अनुचित नै छै बशर्ते की भाषा बदलि जेबाक चाही। जँ नरेन्द्र जी वा बाबा बैद्यनाथ जी ऐ काफिया सभहँक प्रयोग अपन गामक वा पड़ोसी गामक मैथिलीक जोलहा रूपमे गजल लीखि करथि तँ ई काफिया सभ बिल्कुल सही होइत। हम बाबा बैद्यनाथ जीक उपरमे लेल गेल गजल संख्या 6क मतलाकेँ ऐ रूपमे देखा रहल छी---

भाइ केन्ने दुनियाँ जा रहलइय'

साँच कानै झुट्ठा गा रहलइय'

(आन शेर पाठकक कल्पनापर छोड़ल जाइए)

आब अहाँ अपने अनुभव क' सकै छिऐ जे काफिया तँ वएह हिन्दीक छै मुदा फिट एवं प्रवाहपूर्ण भ' गेल छै। शाइरकेँ मात्र बस एतबा देखबाक छै। नै तँ भाषाकेँ दूषित होइत देरी नै लागत। जँ ऐ काफिया सभहँक प्रयोग मैथिली क जोलहा रूपमे वा चंपारण, मुज्जफरपुर, सीतामढ़ी, बेगूसराय, वैशाली एँ झारखंड बाल मिथिला क्षेत्रक भाषाक संग करबै तँ गजलक कल्याण सेहो हेतै आ मैथिलीक सेहो। भाषाक सम्बन्धमे एकटा आर गप्प ऐ संग्रहक अधिकांश गजलमे मैथिलीक चलंत रूप (मने गाम-घरमे बाज' बला रूप) प्रयोग भेल अछि जे की मैथिली गजल लेल शुभ अछि। हँ, एतेक अपेक्षा हम बाबा बैद्यनाथ जीसँ जरूर केने छलहुँ जे ओ पूर्णियाक छथि तँ हुनक रचनामे पूर्णियामे बाजल जाइत मैथिलीक स्वरूप रहत । जँ ऐ अधारपर देखी ई संग्रह कने हमरा निराश केलक (ई हमर व्यतिगत आलोचना अछि, गजलक व्याकरणसँ फराक देखल जाए एकरा)। जेना की उपरे इंगित क' चुकल छी जे गजलकार स्वयं शब्दमे विभक्ति सटेबाक पक्षमे छथि आ हमरा हिसाबें ई मैथिलीक लेल नीक। आ अन्तमे आउ ऐ संग्रहक भाव पक्षपर। मैथिली साहित्यमे " भाव " सभसँ सस्ता छै। जकरा देखू से भाव केर नाङरि पकड़ि साहित्यिक वैतरणी पार करै छथि। तँए ऐ संग्रहक सभ गजलक भाव पक्ष उन्नत अछि। आ ऐ पक्षपर हमर कोनो कथन नै रहत। कारण जखन सभ पक्ष हमहीं कहि देब तखन तँ पाठकक रूचि खत्म भ' जेबाक डर रहत तँए पाठक संग

आन सभ गोटासँ अनुरोध जे बाबा बैद्यनाथ कृत " पहरा इमानपर " नामक गजल संग्रह पठथि आ अपन-अपन विचार देथि।

कने रुकू, जे गोटा भाव लेल तरसैत हेता तिनका लेल मात्र किछु शेर हम देखाबए चाहब (उनतीसम गजलक आठम शेर)

राति-दिन बउआ खाली कमेन्ट्री सुनए

कियैक पढ़तै क्रिकेटक लहर देखि कऽ

ऐ शेरकेँ पढू आ तखनुक संग एखुनका समयकेँ देखू। कोनो फर्क नै भेलैए। पहिने रेडियोमे बैट्री नै देल जाइ छलै क्रिकेटक समयमे आब केबल लाइन कटबा देल जाइ छै। पढ़ाइपर क्रिकेटक की असर छै से एकै शेरमे देखा गेल छथि शाइर। पढ़ाइए किए ई क्रिकेट तँ आन छोट-छोट खेलकेँ सेहो नाश क' देलक। शाइर ऐ शेरक माध्यमे सेहो धेआन दिअबैत छथि। एही प्रकारक ज्वलंत मुद्दा सभकेँ बाबा बैद्यनाथ अपन गजलमे लेने छथि जे की आन शाइरक गजलमे दुलर्भ अछि। भाव केर ऐ चर्चामे 11म गजलक अंतिम शेर कहने बिना पूरा नै हएत---

कहियो जँ मोन पड़य अप्पन अतीत जीवन

बस आँखि मूनि दूनू कनियें लजा लिय

ऐ शेरकेँ पढू आ एकर मतलब निकालू। झटहा फेकेलै कहीं आ लगलै कहीं। इएह भेलै गजलत्व जकरा बारेमे कहल जाइ छै जे गजलक शेर सीधा करेजमे लगै छै। जँ एकैसम गजलकेँ देखी तँ निश्चित रूपसँ ई बाल गजल अछि (बाल गजल रहितों व्यस्क लेल ओतेबे प्रासंगिक अछि) आ ओजपूर्ण सेहो अछि-

छोडू अपन कपटकेँ आ उदार बनू भैया

गाँधी सुभाष नेहरुक अवतार बनू भैया

अइ संग्रहमे श्रृंगार रसक गजल सेहो अछि जे की पाठकक लेल छोड़ल जाइए। तँ आसा अछि जे आब अहाँ सभ जरूर एकरा पढ़बै।

2

प्रिंट पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील

पहिने गजलकार सभसँ----

कोनो पत्रिकाकेँ अपन गजल पठएबासँ पहिने ई देखू जे अहाँक गजल कोन बहरमे अछि। आ से देखि लेलापर तकर नाम लीखू आ संगे-संग ओहि बहरक मात्रा क्रम लिखबे टा करु। कारण अलग-अलग पत्रिकाक अलग-अलग वर्तनी आ ओहि हिसाबें प्रकाशित केने अहाँक गजलक बहर टूटि जाएत। एकरा हम एकटा उदाहरणसँ देखाएब। मानू जे अहाँ कोनो बहरक हिसाबसँ " कए " शब्दक प्रयोग केलहुँ जकर मात्रा क्रम छै UI "ह्रस्व-दीर्घ" मुदा कतेको पत्रिका एकरा " कय" बना देताह जकर मात्रा क्रम छै UU "ह्रस्व-ह्रस्व" वा I "दीर्घ" (दूटा लघु मिला एकटा दीर्घ)। तँ कतेको पत्रिका एकरा खाली " क' " वा " क " लीखि देताह जकर मात्रा क्रम छै U "ह्रस्व"। आब अहाँ अपने बुझि सकैत छी जे वर्तनी बदलने मत्रा क्रम टूटि जाएत। मने बहर टूटि जाएत आ गजल बेबहर भए जाएत। ऐठाम हम खाली एकटा शब्दक उदाहरण देलहुँ अछि मुदा अनेको शब्दपर ई लागू हएत। तँए गजलक संगे-संग बहरक नाम आ ओकर मात्रा क्रम जरूर लीखी। संगहि-संग गजल वा शेरो-शाइरीक अन्य विधा कोनो पत्रिकाकेँ पठबैत काल संपादक जीसँ ई आग्रह करू जे जँ हुनका अपन वर्तनीक हिसाबें गजल नै बुझान्हि तँ गजल नै छापथि। कारण जखन बहर टूटिए जेतै तँ ओ गजल बेकार।छपियो जाएत तँ कोनो कर्मक नै। जँ गजल सरल वार्णिक बहरमे अछि तैओ ई समस्या आएत। उदाहरण लेल मानू जे अहाँ " नहि " शब्दकेँ प्रयोग करैत एकटा गजल सरल वार्णिक बहरमे लीखि संपादक जीकेँ देलिअन्हि मुदा ओ संपादक जी अपन वर्तनीक हिसाबें ओकरा " नै " लीखि देलखिन्हि। मतलब जे सरल वार्णिक बहर सेहो टूटि गेल। तँए गजलकार सभसँ विशेष आग्रह जे ओ प्रिंट पत्रिकाक संपादककेँ अनिवार्य रूपें लिखथि जे जाहि स्वरूपमे गजल छै ताही स्वरुपमे गजल प्रकाशित हेबाक चाही नै तँ प्रकाशित नै करु।

आब प्रिंट पत्रिकाक संपादक सभसँ-------

जँ संपादक महोदयमे कनियों बुझबाक शक्ति हेतन्हि तँ उपरका विवरणसँ हुनका गजलक संबंधमे व्यवहारिक समस्या बुझा जेतन्हि। तँए संपादक जी लेल हम विशेष नै लिखब।बस हमहूँ एतबे आग्रह करबन्हि जे अपन वर्तनीक पक्ष लए ओ गजलक संग बलात्कार नै करथि। जँ हुनका अपन वर्तनीकेँ रखबाक छन्हि तँ ओ गजलकेँ नै छापथि। या एकटा उपाय इहो भए सकैत छै जे ओ गजलकेँ छापथि आ संगे-संग ई नोट दए देथि जे " ई वर्तनी गजलकार विशेषक वर्तनी थिक, पत्रिकाक नहि"। अंतिकाक संपादक अनलकान्त जी अपन पत्रिकामे एहन नोट छापि लेखक विशेष आ अपन पत्रिका दूनूक वर्तनीक रक्षा केने छथि।एकटा आर गप्प कविता जकाँ पाँतिकेँ सटा कए छापब गजल परंपराक विरुद्ध अछि। सङ्गे-सङ्ग एक पन्नाक दू भाग वा दू पन्नाक दू भागमे गजलकेँ छापब सेहो

गजल परंपराक विरुद्द अछि। एकटा गजल दए रहल छी राजीव रञ्जन मिश्र जीक जाहिसँ ई पता लागत जे एकटा गजलक विभिन्न शेरक बीचमे कतेक जगह रहबाक चाही---------

गजल

कखनो किछु बात बुझल करू मोनक

धरकन दिन राति बनल करू मोनक

ई जे सिसकल त' लता पता सुनलक

आहाँ फरियाद सुनल करू मोनक

छोहक मारल त' घड़ी घड़ी तड़पल

मरहम बनि घाव भरल करू मोनक

कहबो ककरो जँ करब त' के बूझत

संगे बस मीत रहल करू मोनक

गाबी राजीव सदति गजल नेहक

ततबा धरि चाह सुफल करू मोनक

2222 112 1222

शीर्षक द' क' गजल छापब बेकार कारण गजलक शीर्षक नै होइ छै। चूँकि एकटा गजलमे जतेक शेर होइ छै ओतेक विषय रहैत छै गजलमे तँए शीर्षक देबाक परंपरा नै छै। हम अपन एकटा गजल दए रहल छी जाहिसँ ई स्पष्ट हएत जे ऐ तरीकासँ गजल नै प्रकाशित हेबाक चाही-------

गजल

ओकर हाथसँ छूल अछि देह

सदिखन गम गम फूल अछि देह

प्रेमक उच्चासन मिलन छैक

दू टा घाटक पूल अछि देह

कोना चलि सकतै गुजर आब

देहक तँ प्रतिकूल अछि देह

गेन्दा सिंगरहार छै मोन

चम्पा ओ अड़हूल अछि देह

ऐठाँ अनचिन्हार चिन्हार

सभ देहक समतूल अछि देह

मात्रा क्रम-222-2212-21 हरेक पाँतिमे

ऐ तरीकासँ छापब गलत थिक। एहन रूपसँ गजल प्रकाशित करब परम्परा विरुद्ध अछि।गजलमे सदिखन दूटा शेरक बीचमे जगह हेबाक चाही। ओना हिन्दीमे सेहो कविता जकाँ पाँति सटा क' गजल प्रकाशित कएल जाइत छै मुदा एकर मतलब नै जे दोसर इनारमे खसत तँ हमहूँ सभ खसि पड़ब।

3

अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल

किछु मास पहिने हम प्रिंट पत्रिकाक संपादक आ गजलकार सभसँ एकटा अपील केने रही। ई अपील मैथिलीक वर्तनी आ आ बहरक संबंधमे छल। ऐ अपीलक डिस्कशनमे गुंजन श्री नामक व्यक्ति कहलाह जे ठीके कहै छी, एना कए क' बहुत संपादक गजलक प्राण घीचि लै छथि। ताहि पर हम कहलिऐ जे " विदेह"क संपादककेँ छोड़ि किनको बहरक ज्ञान नै छन्हि । ताहि पर कुंदनक कुमार मल्लिक नामक एकटा पाठक कहलाह जे बुझायत अछि जे ..."" ."....Ashish Anchinhar जी सभ मैथिली पत्रिकाक सम्पादक लोकनिक ज्ञान केँ परीक्षा लय चुकल छथि. मैथिली गजल मे अपनेक योगदान अतुलनीय आ मीलक पाथर जेकां अछि. जहिया कहियो वा जतय कतओ मैथिली गजलक चर्चा हेतय ओतय अपनेक नाम निसंदेह सभ सँ पहिने आ आदरक संग लेल जायत। मुदा एना निन्दा केनाय कतेक उचित? आलोचन करी संगे संग निन्दा स' सेहो बची.मुदा फेर वैह गप कहब जे गजलक बारे मे हमरा ओतबे बुझल अछि जतेक कोनो गजल के बुझल हेतैक. किछु बेसी कहा गेल हुयै त' एहि टिप्पणी केँ मिटा देबैक'' .'' तकरा बाद हम कुंदन जीकेँ संबोधित करैत लिखलहुँ जे..." हमर नाम लेल जाए की नै लेल जाए से विषय नै छै। बहस एहि बातकेँ छै जे गजलक आ मैथिली वर्तनीक व्यवहारिक समस्याक फरिछौट। से उपर पढ़ि कए बुझा गेल हएत अहाँकेँ। जहाँ धरि निन्दाकेँ गप्प छै। ओ आदमी उपर निर्भर छै। हम गजलक निखरल आ स्थिर स्वरूप चाहै छी आ ओहि लेल हमरा जँ किनको प्रसंशा वा खिद्दांसो करए पड़त तँ हम करबै।'' ... आ तकरा बाद कुंदन जी लिखला जे..... " हमर टिप्पणी अहाँक आलेखक लेल नञि अपितु अपनेक टिप्पणीक संदर्भ मे छल।" ताहि पर हम फेरो लिखलहुँ जे...." हमहूँ ओही संदर्भमे कहलहुँ अछि आ फेर कहब जे...जहाँ धरि निन्दाकेँ गप्प छै। ओ आदमी उपर निर्भर छै। हम गजलक निखरल आ स्थिर स्वरूप चाहै छी आ ओहि लेल हमरा जँ किनको प्रसंशा वा खिद्दांसो करए पड़त तँ हम करबै।'' .....आ फेर हम कुंदन जीकेँ संबोधित करैत लिकलहुँ जे....--" आ जे सही गप्प छै तकरा कहबामे हर्जे की। जँ अहाँकेँ कोनो एहन संपादकक नाम बुझल हो जे विदेहक नै होथि आ ओ बहर बुझैत होथि तनिकर नाम प्रमाण सहित देल जाए।:'' ताहि पर कुंदन जी लिखला जे....." एहि बात के निर्णय करय बला हम के जे कोन सम्पादक के कतेक ज्ञान छन्हि जखन हम पहिने स्पष्ट कय देने छी जे एहि विषय मे हमरा कोनो ज्ञान नञि. हमरा जे बुझायल से कहलहुँ।"..... आब कने आबी पात्र सभ पर। गुंजन श्री कमलमोहन चुन्नू जीक बालक छथि आ एखन कमल मोहन चुन्नू... पटनासँ प्रकाशित " घर-बाहर" नाम पत्रिकाक संपादक मंडलमे छथि आ पत्रिकाक लेल सामग्री पर हिनके निर्णय मान्य होइत अछि। आ कुंदन जी पाठक मात्र छथि। आब आबी कने " घर-बाहर"क नव अंक पर मने अप्रैल-जून 2012 बला अंक पर। ऐ अंकमे जे संपादक

महदोय अपन जे कृत्य देखला से वर्णन करबा योग्य नै। सभसँ पहिने तँ देखू जे सुरेन्द्रनाथ आ अरविन्द ठाकुर जीक बिना बहर बला 6-6टा गजल प्रकाशित केला। ई बारहो गजल ईर घाट-बीर घाट बला बानगी अछि। सुरेन्द्र नाथ जीक गजलमे एखनो काफिया गड़बाड़ाएल अछि तँ अरविन्द जी बहरक नाम पर कुहरि रहल छथि। एही अंकमे योगानंद हीरा जीक " गीत " शीर्षकसँ दूटा रचना छपल अछि। ई आश्चर्य बला बात छै जे योगानंद हीरा जीक ई दूनू रचना गजल छै मुदा संपादक ओकरा गीत कहि रहल छथिन्ह। ई कोन प्रकारक संपादकीय दायित्व छै। हमरा बुझने घर-बाहरक संपादक अज्ञानी तँ छथिहे संगे-संग हीन भावनासँ सेहो भरल छथि। कारण योगानंद हीरा जीक ई उपरोक्त गजल पूरा-पूरा अरबी बहरक पालन करैत अछि। संगे संग संपादक अपन मूर्खताकेँ चलते दोसर गजलक मएकटा पाँति गाएब क' देने छथिन्ह। आ हमरा बुझने संपादक ई काज जानि-बूझि क' केने छथि। कारण हुनका ई बरदास्त नै छन्हि जे केओ बहर युक्त गजल लिखए। ई दूनू गजलक स्कैन दए रहल छी आ देखू जे संपादक कोना बदमाशी केने छथि। पहिल गजलक मतलाक पहिल पाँत अछि----

" किसलय पर घूमै अछि भमरा"

देखू जे ऐमे आठ टा दीर्घकेर प्रयोग अछि आ ई शेरक हरेक पाँतिमे निमाहल गेल छै। आब जखन अहाँ दोसर गजल पार आएब तँ माथ घुमि जाएत। संपादक महोदय एहीठाम बदमाशी केने छथिन्ह। कने गौरसँ स्कैन देखू----पता लागत जे " छी हुलसल" रदीफ छै आ " मोर", भोर, "कोर" आदि काफिया छै। संपादक महोदय ऐ गजलक एकटा पाँति छोड़ि देने छथिन्ह। जाहि कारण ई 11पाँतिक गजल बनि गेल अछि आ किछु नै पता लागि रहल छै। जँ संपादक महोदयकेँ गजलक संबंधमे ज्ञान रहितन्हि तँ एहन प्रकारक गलतीसँ बाँचल जा सकै छल। जँ अंतसँ ऐ गजलकेँ देखी तँ एकर बहर एना छै-दीर्घ-हर्स्व-दीर्घ-दीर्घ+दीर्घ-हर्स्व-दीर्घ-दीर्घ+दीर्घ आ हरेक पाँतिमे ई क्रम पालन कएल गेल छै। आ हमरा बुझने संपादक ऐ तरहँक अज्ञानतासँ मैथिली गजलक भविष्य गर्तमे जा रहल छै। आखिर जिनका मेहनति नै करबाक छन्हि से गजल लिखबाक लौल किएक करै छथि। साहित्य केर बहुत रास विधा छै मेहनति नै करए बला सभ दोसरे विधामे हाथ अजमाबथि तँ नीक।

मैथिली गजलमे लोथ गजलकारक भूमिका

चूँकि मैथिली विश्वक एकमात्र भाषा अछि जे की हिन्दीक नकल करैए। जँ हिन्दी मैथिली रचनाकार सभकेँ दिन रहितो राति कहतै तँ मैथिली रचनाकार सेहो दिनक बदला राति केहतै कारण मैथिलीक रचनाकार विशुद्ध रूपें मानसिक गुलाम छथि हिन्दीक। प. जीवन झा, आनन्द झा न्यायाचार्य, कविवर सीताराम झा, मधुप जी जाहि मैथिली गजल के नीक जकाँ विस्तृत केलथि तकरा मात्र हिन्दी नकलक कारणे 70के दशकमे स्व. मायानन्द मिश्र जी अप्रत्यक्ष रूपसँ कहि देला जे मैथिलीमे गजल लिखब सम्भव नै। ठीक ओहिसँ एक-दू बर्ख पहिने हिन्दीमे नीरज द्वारा ई कथन देल गेल छल जे हिन्दीमे गजल सम्भव नै अछि। नीरज जी हिन्दीमे गजलक नाम गीतिका देलखिन्ह आ गीतिका केर तर्जपर मैथिलीमे गीतल नाम भेल। ऐठाम हम कह' चाहब जे भ' सकैए हिन्दीमे नीरज जीसँ पहिने गजल नै छल हेतै तँए ओ एहन कथन प्रस्तुत केने हेता मुदा मैथिलीमे तँ 1905सँ गजल लिखल जाइ छल आ ओहो पूर्ण रूपेण व्याकरण सम्मत। तखन मायानन्द जीक ऐ कथन केर मतलब की ? आर किछु चर्च करबासँ पहिने मायानंद जीक पोथी " अवान्तर" भूमिकाक किछु अंश पढू (ई पोथी 1988मे मैथिली चेतना परिषद्, सहरसा द्वारा प्रकाशित भेल)। पृष्ठ 6 पर मायानंदजी लिखै छथि -- " अवान्तरक आरम्भ अछि गीतलसँ। 'गीतं लातीति गीतलम्' अर्थात गीत केँ आन' बला भेल गीतल। किन्तु गीतल परम्परागत गीत नहि थिक, एहिमे एकटा सुर गजल केर सेहो लगैत अछि। गीतल गजल केर सब बंधन (सर्त) केँ स्वीकार नहि करैत अछि। कइयो नहि सकैत अछि। भाषाक अपन-अपन विशेषता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपें निर्मित होइत अछि। हमर उद्येश्य अछि मिश्रणसँ एकटा नवीन प्रयोग। तैं गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक, गीतो थिक आ गजलो थिक। किन्तु गीतितत्वक प्रधानता अभीष्ट, तैं गीतल।"

उपरका उद्घोषणामे अहाँ सभ देखि सकै छिऐ जे कतेक दोखाह स्थापना अछि। प्रयोग हएब नीक गप्प मुदा अपन कमजोरीकेँ भाषाक कमजोरी बना देब कतहुँसँ उचित नै आ हमरा जनैत मायानंद जीक ई बड़का अपराध छनि। जँ ओ अपन कमजोरीकेँ आँकैत गीतल केर आरम्भ करतथि तँ कोनो बेजाए गप्प नै मुदा हुनका अपन कमजोरी नै मैथिलीक कमजोरी सुझा गेलन्हि। एकरे कहै छै आँखि रहैत आन्हर। ई मोन राखब बेसी जरूरी जे 2011मे प्रकाशित कथित गजल संग्रह " बहुरुपिया प्रदेश मे " जे की अरविन्द ठाकुर द्वारा लिखित अछि ताहूमे ठीक इएह गप्पकेँ दोहराओल गेलैए।

मायानंद जी अपन कमजोरीकेँ झाँपैत जै गीतल केर आरम्भ केला तै पाँछा हमरा बुझने तीन टा कारण भ' सकैए---

1) स्व.मायानन्द मिश्र जी हिन्दीक अन्ध भक्त छलाह।

2) स्व. मायानन्द जी मैथिली गजलक सम्बन्धमे अज्ञानी छलाह।

3) स्व. मायानन्द चतुराइसँ अपना-आप के मैथिली गजलमे स्थापित करबाक योजना बनेलाह।

कह' बला कहै छै आ प्रभाव छोड़ै छै। कथनक विरोध भेनाइ शुरू भेल ऐ आ विरोधक सङ्ग शुरू भेल बड़का मजाक। मजाक ई जे विरोध कर' बला सभ सेहो व्याकरणहीन गजल लिखै छलाह वा एखनो लिखै छथि। ओहि समयक बिना व्याकरणमे गजल लिख' बला सभ (मुदा अपना-आपकेँ गजलकार मान' बला सभ) दू भागमे बँटि गेल। गीतल भागमे, मायानन्द, तारानन्द झा तरुण, विलट पासवान विहंगम, आदि एला वा छथि (ऐ सूचीमे आर नाम सभ छथि मुदा अगुआ इएह सभ छलाह छथि) तँ कथित गजल बला भागमे सियाराम झा सरस, रमेश, तारानन्द वियोगी, विभूति आनन्द, कलानन्द भट्ट, डा. महेन्द्र, सोमदेव, राम भरोस कापड़ि भ्रमर, देवशंकर नवीन, राम चैतन्य धीरज, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, अरविन्द टाकुर आदि-आदि सभ रहला वा छथि ।ऐ सूचीमे आर नाम सभ छथि मुदा अगुआ इएह सभ छलाह छथि। मुदा ऐठाँ हम ई स्पष्ट कर' चाहब जे नाम भने जे होइ मायानन्द जी बला गुट वा सरस जी बला गुट दूनू गुटमेसँ कोनो गोटा गजल नै लिखै छलाह कारण ओ व्याकरण हीन छल। आ व्याकरण हीन कथित गजलकेँ गजल नै गीतले टा कहल जा सकैए। सरस जी मायानन्द जीक सभसँ बेसी विरोध केलखिन्ह हुनकर कथनक कारणे मुदा सरस जी स्वंय व्याकरणहीन गजल लिखला आ लिखै छथि तखन मात्र कथनीपर केकरो विरोध करबाक की मतलब जखन की करनी दूनू गोटाक एकै छन्हि।

सरस जीक सङ्ग बहुत कथित गजलकार सभ होहकारी दैत एलाह मुदा ओहो सभ व्याकरणहीन गजल लिखला आ लिखैत छथि। आब हमर प्रश्न जे जखन व्याकरण छैहे नै तखन गीतल आ ओइ कथित गजलमे अन्तर की ? हमरा बुझने कोनो अन्तर नै । हम मायानन्द जी गीतल आ सरस जीक कथित गजल दूनूकेँ एकै समान मानै छी। ऐ ठाम ई बेसी मोन राखब जरूरी जे सरस गुट केर महानायक धीरेन्द्र प्रेमर्षि जी गीत आ गजलकेँ सहोदर भाए माननै छथि। तखन सरस जीक नजरिमे मायानंद जी अपराधी भेला आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि जी महानायक। हमरा जनैत ई सरस जीक पक्षपात थिक आ ऐ पक्षपात केर विरोध हेबाक चाही।

सियाराम झा सरस जीक संपादनमे बर्ख 1990मे " लालकिला आ लोकवेद " नामक एकटा साझी गजल संग्रह आएल। एहि संग्रहमे गजलसँ पहिने तीनटा भाष्यकारक आमुख अछि। पहिल आमुख संपादक जीकेँ छन्हि आ ओ तकर शुरुआत एना करै छथि----" समालोचना आ साहित्यिक इतिहास लेखनक क्षेत्रमे तकरे कलम भँजबाक चाही जकरा ओहि साहित्यिक प्रत्येक सुक्ष्तम स्पंदनक अनुभूति होइ....."। अर्थात सरसजीकेँ हिसाबें कोनो साहित्यिक विधाक आलोचना, समीक्षा, वा ओकर इतिहास लेखन वएह कए सकैए जे की ओहि विधामे रचनारत छथि। जँ हम एकर व्याख्या करी तँ ई नतीजा निकलैए जे गजल विधाक आलोचना वा समीक्षा वा ओकर इतिहास वएह लीखि सकै छथि जे की गजलकार होथि। मुदा हमरा आश्चर्य लगैए जे ने 1990सँ पहिले सरस जी ई काज केलाह आ ने 1990सँ 2008 धरि ई काज कए सकलाह। 2008केँ एहि दुआरे हम मानक बर्ख लेलहुँ जे कारण 2008मे हिनकर मने सरस जीक एखन धरिक अंतिम कथित गजल संग्रह "थोड़े आगि-थोड़े

पानि" एलन्हि मुदा ओहूमे ओ एहन काज नै कए सकलाह। आ बर्ख 2008मे गजल विधा पर केन्द्रित ब्लाग " अनचिन्हार आखर " आएल जाहिमे गजलक व्याकरण आ आलोचना पर पर्याप्त काज भेल। आ गजल विधाकेँ सरस आ हुनक टीमसँ छुटकारा प्राप्त भेल। आ जे काज 100 साल मे नहि भेल से मात्र एक साल पाँच मासमे गजेन्द्र ठाकुर कए देखेलाह आ मैथिली गजलकेँ पहिल गजल शास्त्र देलाह।ई हमरा हिसाबें कोनो गजलकारक सीमा भए सकैत छलै मुदा सरस जीक दोहरा चरित्र ओही आमुख के तेसर आ चारिम पृष्ठमे भए जाइत अछि जतए सरस जी लिखै छथि-------" मैथिली साहित्यमे तँ बंगला जकाँ गीति-साहित्यिक एकटा सुदीर्घ परंपरा रहलैक अछि। गजल अही परंपराक नव्यतम विकास थिक, कोनो प्रतिबद्ध आलोचककेँ से बुझ' पड़तैक। हँ ई एकटा दीगर आ महत्वपूर्ण बात भए सकैछ जे मैथिलीक समकालीन आलोचकक पास एहि नव्यतम विधाक आलोचना हेतु कोनो मापदंडिके नहि छन्हि। नहि छन्हि तँ तकर जोगार करथु.........."आब ई देखल जाए जे एकै आलेखमे कोना दोहरापन देखा रहल छथि। आलेखक शुरुआतमे हुनक भावना छन्हि जे " जे आदमी गजल नै लीखै छथि से एकर समीक्षा वा इतिहास लेखन लेल अयोग्य छथि मुदा फेर ओही आलेखमे ओहन आलोचकसँ गजल लेल मापदंड चाहै छथि जे कहियो गजल नहि लिखला।भए सकैए जे सरस जी ई आरोप सरस जी अपन पूर्ववर्ती विवादास्पद गजलकार मायानंद मिश्र पर लगबथि होथि। जे की सरस जीक हरेक आलेखसँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा ऐठाम हमरा सरस जीसँ एकटा प्रश्न जे जँ कोनो कारणवश माया जी ओ काज नै कए सकलाह वा जँ मायानंद जी ई कहिए देलखिन्ह मैथिलीमे गजल नै लिखल जा सकैए तँ ओकरा गलत करबा लेल ओ अपने (सरस जी) की केलखिन्ह। 2008धरि मैथिलीमे 10-12टा कथित गजल संग्रह आबि चुकल छल। मुदा अपने सरस जी कहाँ एकौटा कथित गजल संग्रह समीक्षा वा आलोचना केलखिन्ह। गजलक व्याकरण वा इतिहास लेखन तँ बहुत दूरक बात भए गेल। ऐ आलेखसँ दोसर बात इहो स्पष्ट अछि जे सरस जी कोनो समकालीन आलोचककेँ गजलक समीक्षा लेल मापदंड देबा लेल तैयार नै छथि। जँ कदाचित् कनेकबो सरस जी आलोचक सभकेँ मापदंड दितथिन्ह तँ संभवतः 2008 धरि गजल क्षेत्रमे एहन अकाल नै रहितै।

आब हम आबी विदेहक अंक 96 पर जाहिमे श्री मुन्ना जी द्वारा गजल पर परिचर्चा करबाओल गेल छल। आन-आन प्रतिभागीक संग-संग प्रेमचंद पंकज नामक एकटा प्रतिभागी सेहो छथि। पंकज जी अपन आलेखमे आन बात संग इहो लिखैत छथि-----" कतिपय व्यक्ति एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितहु एकरा मान्यता नै भेटि रहल छैक। एहन बात प्रायः एहि कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकेँ कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानिक' एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बूझैत छथि। एहि सम्बन्धमे हमर व्यतिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जिनकामे गजलक सूक्ष्मताकेँ बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिकेँ बुझबाक लेल हुनका लोकनिकेँ स्वयं प्रयास कर' पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि क' भट्टा नहि धरओतनि। हँ, एतबा निश्चय जे गजल धुड़झाड़ लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थयक बल पर समीक्षक-

समालोचकलोकनिकेँ अपना दिस आकर्षित कइए क' छोड़त------ '' अर्थात प्रेमचंद जी सरसे जी जकाँ भट्ठा नै धरेबाक पक्षमे छथि। सरस जी 1990मे कहै छथि मुदा पंकज जी 2011केर अंतमे मतलब 22साल बाद। मतलब बर्ख बदलैत गेलै मुदा मानसिकता नै बदललै।ओना ऐठाम हम ई जरुर कहए चाहब जे भट्ठा धराबए लेल जे ज्ञान आ इच्छा शक्ति होइ छै से बजारमे नै बिकाइत छै। मुदा आब ऐठाम हम ई जरूर कहए चाहब जे मायानंद मिश्रजीक बयान आ अज्ञानतासँ मैथिली गजलकेँ जतेक अहित भेलै ताहिसँ बेसी अहित सरस जी वा पंकज जी सन अभट्ठाकारी लोकनिसँ भेलै।

लिखित रूपकेँ छोड़ि मैथिलीमे गयबाक लेल सेहो गायक सभ गजलक नामपर अत्याचार केलाह। किछु लीखि देबै आ गलामे सुर रहत तँ ओकरा गाबि सकै छी तँए की ओकरा गजल मानल जेतै ? गायनक ऐ धुरखेलमे बहुत रास गायक छलाह वा छथि जेना चंद्रमणि झा, रामसेवक ठाकुर, कुञ्ज बिहारी मिश्र आदि-आदि। जेना लिख' बला सभ मैथिली गजलकेँ भट्ठा बैसेलक तेनाहिते गायक सभ सेहो। गायक सभ गजलमे मात्रा क्रम सप्तक (सा,रे,गा,मा,पा,धा,नि,सा) केर हिसाबसँ बैसाबए लागै छथि जे की अवैज्ञानिक तँ अछिए सङ्गे-सङ्ग अनर्थकारी सेहो अछि। काव्यमे रागक हिसाबसँ छन्द नै बनै छै। तँए कोनो एकटा छन्दमे बनल रचनाकेँ बहुतों गायक बहुतों रागमे गाबै छथि गाबि सकै छथि। राग-रागिनीक मात्राक्रम सङ्गीत लेल छै साहित्य लेल नै। तेनाहिते छन्दक मात्राक्रम काव्य लेल छै सङ्गीत लेल नै।

सुधांशु शेखर चौधरी आ बाबा बैद्यनाथ जी गजलमे किछु तत्व तँ अछि। खास क' बाबा बैद्यनाथ जीक गजलमे सभ तत्व अछि मुदा वर्णवृत नै अछि। आ तँए हिनको लोकनिकेँ हम कथित गजलकारक श्रणीमे रखैत छी मुदा हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नै जे ई दूनू बाद-बाँकी कथित गजलकार सभसँ बेसी बोधगर छथि।

आब हम पाठकक उपर छोड़ै छी जे ओ अपने निर्णय लेथु जे मैथिली गजलक ऐ पोखरिमे के कते योगदान देला।

आब ऐठाम एकटा प्रश्न ठाढ़ होइत अछि जे एना अनधुन हिनका सभकेँ (माया गुट एवं सरस गुट) खारिज किएक कएल जा रहल अछि ? जँ हिनकर सभहँक रचना गजल नै अछि तँ की अछि? एना खारिज करब कतेक उचित? हिनका सभमे प्रतिभा छनि की नै ? आदि.....निश्चित रूपसँ हमरो नै नीक लागि रहल अछि हिनका सभकेँ खारिज करैत मुदा हिनकर सभहँक शैलिए तेहन छनि जे खारिज करहे पड़त। हमहीं मात्र गजलकार छी आ हमरे गजल मात्र गजल थिक ई शैली हिनकर सभहँक पहिचान अछि जखन की लोक आब बुझि रहल अछि जे हिनकर सभहँक गजल गजल नै छल आ ने अछि। ई लोकनि ने अपने गजलपर काज केलाह आ ने दोसरकेँ कर' देलखिन्ह। आ जकर परिणाम गजल भोगि रहल अछि। खास क' अहाँ सरस जीक गजल पोथीक भूमिका पढू ने गजलपर चर्चा भेटत आ ने गजलक व्याकरणपर मुदा ओइमे ई चर्चा जरूर भेटत जे सभकेँ साहित्य अकादेमी भेटि गेलै हमरा किएक नै भेटि रहल अछि। सरस जीक गजले नै हरेक पोथीक भूमिका ओ लेखमे ई भेटत। तारानंद वियोगी, देवशंकर नवीन,

गंगेश गुंजन, रमेश, आ ओइ समयक कथित गजलकार सभ एना एला जेना ओ गजलपर उपकार क' रहल होथिन्ह। आ ऐ हेंजमे योगानंद हीरा, विजयनाथ झा सभ दबि क' रहि गेला। हिनका सभमे प्रतिभा छनि कारण बिना प्रतिभा रहने केओ साहित्य दिस आबिए नै सकैए (बादमे अध्ययनक जरूरति पड़ै छै) तँए हम ई मानि रहल छी जे ई सभ प्रतिभाशाली छलाह। हँ, इहो मानि रहल छी जे केओ खुरपीक आगूसँ दूभि छीलैए आ ई कथित गजलकार सभ खुरपीक मूठसँ दूभि छिलबाक प्रयास केला। एकर परिणाम ई भेल जे हिनका सभकेँ मेहनति तँ कर' पड़लनि, पसेना सेहो बहलनि मुदा दूभि छीलि क' ई सभ गजल रूपी गाएकेँ भोजन नै द' सकलाह। आब ऐ प्रश्नपर आबी जे हिनक सभहँक रचना गजल नै अछि तँ की अछि? निश्चित रूपसँ हिनकर सभहँक रचनामे सरसता, पद-लालित्य ओ गेयता अछि मुदा व्याकरण नै अछि। तँए हम हिनकर सभहँक कथित गजलकेँ हम पद्यक रूपमे मानै छी। आब पद्यमे केहन पद्य से तँ आन आलोचक सभ फड़िछा क' कहता मुदा जहाँ धरि हमर अपन विचार अछि तँ ई सभ नीक पद्य अछि आ आन पद्ये जकाँ साहित्यमे समादृत अछि।

ऐ ठाम ई गप्प सार्वजनिक करब अनिवार्य अछि जे अनन्त बिहारी लाल दास " इन्दु " जीक जे टूटा गजल संग्रह छनि (सरसजी द्वारा देल गेल सूचना) तैमेसँ हम एकौटा पोथी नै पढ़ि सकलहुँ अछि। तँए इन्दुजीक गजलपर हम कोनो टिप्पणी नै करब। हँ एतेक हम जरूर कहब जे कर्णामृतक किछु अंकमे हमरा हुनक गजल पढ़बाक अवसर भेटल मुदा तैमे बहरक अभाव अछि। बहुत रास गजलकार लेल ई टिप्पणी हम सुरक्षित राखए चाहब। संगे-संग हम ईहो कह' चाहब जे ई एकेडमिक शोध नै थिक तँए बहुत रास गजलकारक पोथी भेटबामे हमरा दिक्कत भेल तथापि हमरा लग 100मेसँ 99टा मैथिली गजल संग्रह वा मैथिली गजलपरहँक लेख सभ अछि।

5

लघु-गुरू निर्णय

(हमर ऐ लेखमे मात्र पं. गोविन्द झा जीक चर्च अछि तकरा अन्यथा नै लेल जाए से हमर आग्रह। पं. गोविन्द झा जीकेँ हम मैथिली व्याकरणक धूरी मानैत ई लिखल अछि। निश्चित रुपें पं. जी अपन अग्रजसँ नियम ग्रहण केने छथि आ अपन अनुज सभकेँ बेसी प्रभावित केने छथि तँए हम मात्र पं. जीक उपर ई लेख केन्द्रित केलहुँ जाहिसँ हुनक अग्रज आ हुनक अनुज सभ ऐ लेखक माँझमे आबि सकथि।)

मात्रा गनबाक लेल मोन राखू जाहि अक्षरमे "अ", "इ", "उ", "ऋ" एवं "लृ" नुकाएल हो तकरा लघु मानू आ तकरा बाद सभकेँ दीर्घ। संगहि संग अनुस्वार तँ दीर्घ अछि मुदा चन्द्रबिन्दु लघु। चन्द्रबिन्दु जँ लघु अक्षरपर रहतै तँ लघु मानल जेतै आ जँ दीर्घ अक्षरपर रहतै तँ दीर्घ मानल जाएत। संगहि-संग जँ कोनो शब्दमे संयुक्ताक्षर हुअए तँ ताहिसँ पहिलेक अक्षर दीर्घ भए जाइत छैक चाहे ओ लघु किएक ने हुअए। उदाहरण लेल--प्रत्यक्ष शब्दमे दूटा संयुक्ताक्षर अछि पहिल त्य एवं क्ष। आब एहिमे देखू "त्य" सँ पहिने "प्र" अछि तँए ई दीर्घ भेल आ "क्ष" सँ पहिने "त्य" अछि तँए इहो दीर्घ भेल। ई नियम जँ दू टा अलग-अलग शब्द हो तैयो लागू हएत जेना उदाहरण लेल--- हमर प्रेम छी अहाँ... ऐमे "प्रे" संयुक्ताक्षर भेल आ ताहिसँ पहिने बला शब्द " र" दीर्घ भए जाएत। मतलब जे "हमर" शब्दक अंतिम अक्षर "र" दीर्घ भए जाएत । सङ्गे-सङ्ग मोन राखू "न्ह" आ "म्ह" संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला शब्दमे लघु दीर्घ सेहो हएत। जेना की "कुम्हार" मे "म्ह" सँ पहिने "कु" दीर्घ भेल तेनाहिते "कन्हाइ" शब्दमे सेहो "न्ह"सँ पहिने "क" वर्ण दीर्घ भेल। क्ष, त्र आ ज्ञ संयुक्ताक्षर अछि। तेनाहिते.... प्र, र्व, आदि सेहो संयुक्ताक्षर अछि। मुदा "मृत" शब्दमे "मृ" संयुक्ताक्षर नै अछि। विसर्ग युक्त लघु वर्ण सेहो दीर्घ होइत अछि। हलन्तसँ पहिने बला लघु दीर्घ होइत अछि आ हलन्तक मात्रा सुन्ना होइत अछि।

आब अहाँ सभ पूछि सकै छी जे "मृत"मे "मृ" संयुक्ताक्षर किएक नै भेल। तँ हम कहब जे संयुक्ताक्षर लेल ओहि वर्णकेँ आधा होमए पड़ैत छै जैमे कोनो दोसर वर्ण संयुक्त हेतै। जेना---

"प्रेम"= प्+र+ए+म=प्रेम

अर्थात "प" वर्ण आधा भेलै तँए ई संयुक्ताक्षर अछि। मुदा-

"मृत"= म-ऋ-त=मृत

तँए मृत शब्दमे मृ संयुक्ताक्षर नै भेल।

ऋ मात्रा भेल।

पुरान व्याकरणशास्त्री दू अलग-अलग शब्दक संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षरकेँ दीर्घ नै मानै छथि। तेनाहिते ओ सभ न्ह आ म्हसँ पहिने बला लघुकेँ दीर्घ नै मानै छथि। मुदा हम एकर खंडन क' चुकल छी जे आगू देल जा रहल अछि। संयुक्ताक्षर लेल एकै रंगक नियमक पालन करी। एहन नै जे किछु गजलमे एकै शब्दक संयुक्त बलाकेँ दीर्घ मानलहुँ आ किछु गजलमे बहर पुरेबाक लेल दूटा संयुक्त बलाकेँ दीर्घ।

गजलमे दूटा लघुकेँ एकटा दीर्घ सेहो मानल जाइत छै। बहुत गोटेंकेँ समस्या होइत छन्हि जे इ लघु-दीर्घ कोना होइत छै। प्रस्तुत अछि किछु उदाहरण---

बिगड़ि----------एहि शब्दकेँ ह्रस्व-दीर्घ मानू वा दीर्घ-ह्रस्व मानू। बहरक जेहन जरूरति हो। अरबी बहरमे तीन टा लघु सँ कोनो बहर नै छै तँए लघु-लघु-लघु मानबाक कोनो जरूरति नै।

हुनकर---------- एहि शब्दकेँ दीर्घ-दीर्घ मानू वा दीर्घ-लघु-लघु मानू वा लघु-लघु-दीर्घ दीर्घ मानू जेहन जरूरति हो। अरबी बहरमे चारिटा लघु सँ कोनो बहर नै छै तँए लघु-लघु-लघु-लघु मानबाक कोनो जरूरति नै।

घर------- एहि शब्दकेँ दीर्घ मानू वा लघु-लघु बहरक जेहन जरूरति हो।

चोर------ ई साफे तौर पर दीर्घ-लघु अछि।

जँ कोनो शेरमे एना पाँति छै--- बिगड़ि चलै ।

आब एहि दू शब्दकेँ बान्हू। या तँ अहाँ " बिग" मने एकटा दीर्घ मानू आ "ड़ि" मने एकटा लघु फेर "च" एकटा लघू भेल आ "लै" एकटा दीर्घ। एकर मतलब जे " बिगड़ि चलै" केर संभावित बहर भेल--दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ।

एहि शब्दकेँ एकटा आर रूप दए सकैत छी जेना की---- "बि" के लघु मानू "गड़ि"केँ दीर्घ मानू आ फेर "च" एकटा लघू भेल आ "लै" एकटा दीर्घ। एकर मतलब जे " बिगड़ि चलै" केर संभावित बहर भेल--- लघु-दीर्घ-लघु-दीर्घ।

आब एहि दू रूपकेँ अहाँ बहरक हिसाबें प्रयोग करू। कतेको आदमी " बिग" केँ दीर्घ मानताह फेर "ड़ि" "च" केँ मिला दीर्घ मानताह आ "लै" भेल दीर्घ मने दीर्घ-दीर्घ -दीर्घ मुदा इ रूप गलत भेल। मुदा ऐठाम एकटा गप्प मोन राखू जे किछु शब्दमे धेआन सेहो राखए पड़त जेना एकटा शब्द " कमल " लिअ। आब जँ अहाँ एकर उच्चारण क-मल (मने लघु-दीर्घ) करबै ताहिसँ एकटा फूलक अर्थ निकलत मुदा जखन अहाँ एही शब्दकेँ कम-ल (मने दीर्घ-लघु) करबै तखन एकर अर्थ घटनाइमे हेतै

जेना - पानि कम'ल की नै इत्यादि। तँए हमर आग्रह जे पहिने कोनो शब्दकेँ उच्चारणक हिसाबेँ अर्थ देखू जाहिसँ उच्चारण अनर्थ नै हुअए।

ओना जँ तत्वतः विचार करी तँ एखनुक मैथिली उच्चारण तीन टा अक्षर बला लेल स्पष्ट भेल जा रहल अछि। जेना--

बिगड़ि--- एकर उच्चारणमे "बि" पहिने अछि आ "गड़ि" एक संगे बाजल जाइए तँए एकरा 12 मानब बेसी उचित।

उतरि--- "उ" लेल 1, " तरि" लेल 2

तेनाहिते आन शब्द लेल सेहो देखू। मुदा गजल मात्र व्याकरणक वस्तु नै छै तँए जे केओ एकरा 21 मानै छथि तँ ओहो गलत नै छथि। तखन हँ आब शाइर ई अपने देखथि जे कोन मात्राक्रम लेलासँ बेसी प्रवाह आबि रहल छै।

तेनाहिते विभक्ति जुटलाक बाद मात्राक्रम सेहो बदल' लागै छै। जेना--

इज्जत-- ई 22 अछि।

इज्जतक--- आब एकरा 221 सेहो मानल जा सकैए मुदा 212 बेसी उचित कारण विभक्ति सटलाक बाद "इज्" लेल 2 फेर "ज" लेल 1 "तक" लेल 2 मने 212 बेसी उचित अछि। तखन हम फेर कहब जे शाइर ई अपने देखथि जे कोन मात्राक्रम लेलासँ बेसी प्रवाह आबि रहल छै।विभक्तिए जकाँ उपसर्ग वा प्रत्ययसँ सेहो मात्राक्रम बदलल सन लाग' लागै छै। जेना कुशल मूल शब्दमे स उपसर्ग लगलासँ सकुशल शब्द बनै छै। आब जँ सकुशल शब्दक उच्चारणपर धेआन देबै तँ स केर उच्चारण अलग आ कुशल केर उच्चारण अलग होइ छै। एहन स्थितिमे सकुशल लेल 112 मानब बेसी उचित। आन एहन शबद् सभ लेल इएह बुझू।

आशा अछि जे अहाँ सभ लघु-दीर्घ प्रकरण बुझि गेल हेबै। तँ आब ई देखी जे गजलक निर्माण कोना हो। ऐ प्रकरणकेँ फरिछेबाक लेल हम जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीसँ आग्रह केने रही तँ ओ एकटा लेखक माध्यमे एना देलाह। ऐ लेखमे ओ अपन एकटा गलत गजल लेलाह आ ओकरा पुनः संशोधित केलाह। गलतकेँ ठीक करबाक प्रकियासँ ई सहजे बुझा जाएत जे गजलकेँ बहरमे कोना आनी। तँ चलू "अनिल" जीक गजल रचना प्रकियापर---

" हम पहिने एकटा गजल अहाँ सभकेँ सामनेमे राखि रहल छी तकर बाद ओकरा विवेचित करब---

गजल

टूटल छी ते गजल कहै छी

भूखल छी तें गजल कहै छी

आफिस-आफिस गेलौ हमहूँ

लूटल छी तें गजल कहै छी

घरमे बैसल दुनियाँ देखू

गूगल छी तें गजल कहै छी

खूब जनै छी खापड़िकेँ हम

भूजल छी छी तें गजल कहै छी

उक्खरि और समाठ जनैत छी

कूटल छी तें गजल कहै छी

यात्रीजीकेँ अहाँ नवतुरिया

सूतल छी तें गजल कहै छी

हम खट्टर कक्काके तबला

फूटल छी तें गजल कहै छी

आब ऐ गजलक मतलाकेँ देखू---

टूटल छी तें गजल कहै छी

भूखल छी तें गजल कहै छी

ऐमे जँ पहिल पाँतिक मात्रा क्रम लेबै तँ हेतै-

टूटल=2

छी=2

तें=2

गजल=12 वा 21 मुदा उच्चारण हिसाबसँ 12 बेसी ठीक अछि तँए हम 12 लेलहुँ।

कहै=12

छी=2

मने पहिल पाँतिक मात्राक्रम भेल-- 2222-12-122

आब दोसर पाँतिपर आउ--

भूखल छी तें गजल कहै छी

एकर मात्राक्रम भेल=

भूखल=22

छी=2

तें=2

गजल=12 वा 21 मुदा उच्चारण हिसाबसँ 12 बेसी ठीक अछि तँए हम 12 लेलहुँ।

कहै=12

छी=2

मने दोसरो पाँतिक मात्राक्रम भेल-- 2222-12-122

मने पहिल दू पाँति अरबी हिसाबसँ बहरमे भेल। आब तेसर पाँति देखू---

आफिस-आफिस गेलौं हमहूँ

एकर मात्राक्रम हेतै--

आफिस=22

आफिस=22

गेलौं=22

हमहूँ=22

मने तेसर पाँतिक मात्राक्रम भेल--2222-22-22

मने मतलाक दूनू पाँतिक मात्राक्रमसँ ई मात्राक्रम अलग अछि। एकरे लोक कहै छै बहरक टुटनाइ वा जे अहाँक गजल बहरमे नै अछि। हम एकरा सुधारबाक लेल अपना हिसाबसँ एना केलहुँ---

टेबुल तर जोर छै कहब हम

एकर मात्राक्रम हेतै--

टेबुल=22

तर=2

जोर=21

छै=2

कहब=12

हम=2

मने ऐ पाँतिक मात्राक्रम छै 2222-12-122। आब देखू जे मतलाक दूनूक पाँतिक मात्राक्रम संगे तेसरो पाँतिक मात्राक्रम बैसि रहल छै। मोन राखू- मतलाक पहिल पाँतिमे जे मात्राक्रम छै ओइ गजलक सभ पाँतिमे ओएह मात्राक्रम रहबाक चाही। इएह भेल बहरक निर्वाहन।

चारिम पाँतिक मात्राक्रम ठीक अछि पाँचम पाँतिमे फेर गड़बड़ा गेल पाँचम पाँति अछि--

घरमे बैसल दुनियाँ देखू

मने 2222-22-22,मुदा ई गलत अछि। हम एकरा एना लेलहुँ--

बैसल बैसल तँ पाबि गेलहुँ

मने 2222-12-122

छठम पाँति ठीक अछि। मुदा सातम पाँति फेर गड़बड़ा गेल---

खूब जनै छी खापड़िकेँ हम

मने 2112-2222-2। हम एकरा सुधारि एना लिखलहुँ--

यारी छल बालु संग खुब्बे

मने 2222-12-122

आठम पाँति ठीक अछि मुदा फेर नवम पाँतिमे वएह दिक्कत---

उक्खरि और समाठ जनैत छी

एकर मात्राक्रम भेल--

उक्खरि=22

और=21

समाठ-121

जनैत=121

छी=2

मने 2221-121-121-2

हम एकरा सुधारि एना लिखलहुँ--

उक्खरि संगे समाठ एलै

मने--

उक्खरि=22

संगे=22

समाठ=121

एलै=22

मात्राक्रम भेल-2222-12-122

दसम पाँति ठीक अछि। एगारहम पाँति फेर गलत अछि-

यात्रीजीकेँ अहाँ नवतुरिया

यात्री=22

जी=2

केँ=2

अहाँ=12

नवतुरिया=222

एकर मात्राक्रम भेल-

2222-12-222

हम एकरा एना सुधारलहुँ---

जागल लोकक तँ गीत अद्भुत

जागल=22

लोकक=22

तँ=1

गीत=21

अद्भुत=22

मने 2222-12-122

बारहम पाँति ठीक अछि। तेरहम पाँति फेर गलत।

हम खट्टर कक्काकेँ तबला

2222-22-22

हम एकरा एना देलहुँ--

घैला छी हम सराध घाटक

मने 2222-12-122

चौदहम आ अंतिम पाँति ठीक अछि। आब हम ऐ गजलकेँ पूरा द' रहल छी जे की ठीक भेल अछि (ऐ सुधरल गजलमे तें केर बदालमे हम तँइ लेलहुँ अछि। ऐसँ मात्राक्रममे कोनो फर्क नै हेतै)--

गजल

टूटल छी तँइ गजल कहै छी

भूखल छी तँइ गजल कहै छी

टेबुल तर जोर छै कहब हम

लूटल छी तँइ गजल कहै छी

बैसल बैसल तँ पाबि गेलहुँ

गूगल छी तँइ गजल कहै छी

यारी छल बालु संग खुब्बे

भूजल छी तँइ गजल कहै छी

उक्खरि संगे समाठ एलै

कूटल छी तँइ गजल कहै छी

जागल लोकक तँ गीत अद्भुत

सूतल छी तँइ गजल कहै छी

घैला छी हम सराध घाटक

फूटल छी तँइ गजल कहै छी

सभ पाँतिमे 2222-12-122 मात्राक्रम अछि।

ई सुधार वा परिवर्तन मात्र बहरक निर्वहन देखेबाक लेल कएल गेल अछि। हमरा पूरा विश्वास अछि जे ऐसँ अहाँ सभ सेहो बुझि गेल हेबै जे बहरक निर्वाह कोना हो।"

ज.च.ठा."अनिल"

तँ देखलहुँ जे अनिल जी कोना अपने एकटा बेबहर गजलकेँ कोना संशोधित क' बहरमे आनि देलाह। आब हमरा पूरा विश्वास अछि जे अहाँ सभ कहियो बेबहर गजल नै लीखि सकै छी।..

तँ छल सूत्र रूपमे। कने एकरा फरिछा कए देखी------

1) पं. गोविन्द झा अपन पोथी " मैथिली छंद शास्त्र" (मिथिला पुस्तक केन्द्र दरभंगासँ प्रकाशित, द्वितीय संस्करण 1987)मे पृष्ठ 13 मे लिखैत छथि जे " सँ, जँ, तँ, हँ आदि गुरू अछि" मने चंद्रबिंदुकेँ पं. गोविन्द झा जी दीर्घ मनने छथि (प. दीनबन्धु झा रचित मिथिला भाषा विद्योतनमे एहने लिखल अछि।) मुदा फेर पं. गोविन्द झा जी शेखर प्रकाशनसँ 2006मे प्रकाशित अपन पोथी " मैथिली परिचायिका" केर पृष्ठ 20पर लिखै छथि जे " अनुस्वार भारी होइत अछि आ चंद्रबिंदु भारहीन" मने ऐ पोथीमे पं. जी चंद्रबिंदुकेँ लघु मनने छथि आ एहने सन विचार ओ मैथिली अकादेमीसँ 2007मे प्रकाशित अपन पोथी "मैथिली परिशीलन"क पृष्ट 35पर देने छथि। आब हमरा एहन पाठक लेल ई बड़का प्रश्न अछि जे चंद्रबिंदुकेँ लघु मानल जाए की दीर्घ, कारण एकै पं. गोविन्द झा जी अपन भिन्न-भिन्न पोथीमे भिन्न विचार देने छथि आ ई प्रचारित करबाक उपक्रम करै छथि जे जाहि पोथीमे हम जे लीखि देलहुँ से सही अछि। जँ पं. गोविन्द झा जी बाद बला पोथीमे लीखि देने रहितथिन्ह जे " मैथिली छंद शास्त्रमे चंद्रबिंदु केर सम्बन्धमे हम जे लिखने छी से गलत थिक आब आब हम ऐ पोथीमे एकरा सुधारि रहल छी" तखन हमरा जनैत भ्रम नै पसरितै आ ऐसँ हुनक महानता सेहो सिद्ध होइत। मुदा से नै भेल। कोनो भाषाक वैयाकरणक उपर ओहि भाषाक हरेक लोककेँ विश्वास होइत छै। मैथिल सेहो पं. जीपर विश्वास करैत छथि (हमरा सहित) आ तँए बहुत मैथिल लोकनि चंद्रबिंदुकेँ दीर्घ मानि बैसल छथि। एकर सभसँ बड़का उदाहरण श्री रमण झा सन अलंकार शास्त्री अपन पोथी " भिन्न-अभिन्न"क पृष्ठ 67-73 मे देने छथि जतए श्री रमण जी पं. गोविन्द झा जीक संदर्भ दैत चंद्रबिंदुकेँ दीर्घ मानि लेने छथि। अस्तु ई गप्प फरिछाएल अछि जे चंद्रबिंदु लघु होइत अछि आ अनुस्वार दीर्घ। एही क्रममे एकटा आर गप्प भए सकैए जे पं. गोविन्द झा जी कविवर सीताराम झा जीक कविताकेँ देखि चंद्रबिंदुकेँ दीर्घ मानि लेने होथि तँ से गप्प फराक, कारण कविवर सीताराम जी अपन अधिकांश कवितामे चंद्रबिंदु युक्त लघु शब्दकेँ दीर्घ जकाँ प्रयोग केने छथि। मुदा ऐठाम ई मोन राखए पड़त जे छंदमे जरूरति पड़लापर (मात्र आवश्यक स्थितिमे) लघुकेँ दीर्घक बराबर वा तेनाहिते दीर्घकेँ लघु बराबर उच्चारण कएल जाइत रहलै। तँए जँ कविवर सीता राम जी जँ आवश्यकता पड़लापर जँ चंद्रबिंदु युक्त लघुकेँ दीर्घ जकाँ प्रयोग केने छथि ताहिसँ ओ नियम नै बनि जेतै वस्तुतः नियम तँ इएह छै जे चंद्रबिंदु लघु अछि। एकटा गप्प आर संस्कृतमे लघुकेँ दीर्घक बराबर वा तेनाहिते दीर्घकेँ लघु बराबर उच्चारण मात्र पाँतिक अन्तमे मान्य छै। शब्दक अन्तमे दीर्घकेँ लघु मानबाक मैथिलीमे परम्परा प्राकृत एवं अप्रभंश भाषासँ भेल अछि।

2) मैथिली छन्द शास्त्रक पृष्ठ 14पर पं. गोविन्द झा जी लिखै छथि जे ----" न्ह आ म्ह संयुक्ताक्षरसँ पूर्व लघु वर्ण गुरू नै होइत अछि, कन्हाइ, कुम्हार, एहिठाम क ओ कु गुरू नहि

थिक।" मुदा जँ अहाँ मैथिली उच्चारणकेँ अकानब तँ साफ-साफ सुनबामे कन् + हाइ ध्वनि आएत तेनाहिते कुम् + हार ध्वनि सुनबामे आएत। मैथिलीमे क + न्हाइ वा कु + म्हार ध्वनि कदाचिते भेटत आ जेना की गजल उच्चारणपर आधारित अछि तँए गजलमे कन्हाइ लेल दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत आ कुम्हार सेहो दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत। ओना गजलेमे किएक हरेक छन्द, हरेक पद्य उच्चारणपर अछि तँए हरेक छंदमे कुम्हार दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत। आब कने आर विस्तारसँ चली। उर्दू भाषामे न्ह, म्ह आ ल्ह सँ पहिनुक अक्षर दीर्घ नै होइत छै मने जे जाहि सङ्गे ल्ह, म्ह वा न्ह रहैत अछि तकरे उपर ओ प्रभाव दै छै जेना " तुम्हारा " ऐ शब्दक उच्चारण उर्दूमे "तु + म्हारा" होइत छै तँए उर्दूमे " तुम्हारा लेल लघु + दीर्घ + दीर्घ प्रयोग होइत छै। ओना ऐठाम ई कहब बेजाए नै जे उर्दूमे न्ह, म्ह, ल्ह केर ध्वनि संस्कृतसँ आएल मुदा उर्दूक सचेष्ट विद्वान सभ उच्चारण अपने हिसाबसँ रखलथि। उर्दूक ई उच्चारण हिन्दीमे आएल (बजबा कालमे उर्दू आ हिन्दी एक समान होइत अछि)। मुदा जँ मैथिली उच्चारणकेँ देखबै तँ साफे-साफ अंतर बुझना जाएत। आ एही अन्तरक कारणें मैथिल हरेक आन राज्यमे जल्दिये पहिचानमे आबि जाइत छथि। मैथिलीमे आने संयुक्ताक्षर जकाँ म्ह,न्ह आ ल्ह केर प्रभाव होइत छै तँए कुम्हार आ कन्हाइ लेल दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत। संस्कृतमे सेहो ‘‘ म्ह, ल्ह आ न्ह ‘‘सँ पहिने केर लघु दीर्घ मानल जाइत छै। आब देखू तुलसी दास जी द्वारा लिखल ई स्त्रोत----------

नमामी शमीशान निर्वाण रूपं

विभू व्यापकम् ब्रम्ह वेदः स्वरूपं

पहिल पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि---- ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घदोसरो पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि-----ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ | आब ऐ श्लोकक दोसर पाँतिक ब्रम्ह शब्दपर धेआन देबै सभ बुझबामे आबि जाएत।

3) पं. गोविन्द झा जी मैथिली छंद शास्त्रक पृष्ठ 13मे संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर दीर्घ हएत की लघु तकर व्यवस्था देखेने छथि। हुनका मतें जँ एकैटा शब्दमे संयुक्ताक्षर हो तखने टा संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ हएत। सङ्गे-सङ्ग ईहो कहने छथि जे प्रचलित समासमे जँ अलगो-अलग अक्षर छै तखन संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ हएत। सङ्गे-सङ्ग ओ एकर सभहँक अपवाद सेहो देने छथि। लगभग इएह नियम मैथिलीक सभ लेखक अपनेने छथि। सङ्गे हम ईहो कहि दी जे हिन्दीयोमे एहने सन नियम छै (आन आधुनिक भारतीय भाषामे की छै से हमरा नै पता) मुदा ई नियम लौकिक संस्कृतमे नै छै। संस्कृतमे चाहे एकै शब्दमे संयुक्ताक्षर हो की अलग-अलग शब्दमे दूनू स्थितिमे संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ हएत। संस्कृत पद्यक किछु उदाहरण देखू------पहिने आदि शंकराचार्यक ई निर्वाण षट्कम देखू----------

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे

न च व्योम भूमिर् न तेजॊ न वायु: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

न च प्राण संज्ञो न वै पञ्चवायु: न वा सप्तधातुर् न वा पञ्चकोश:

न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ मदो नैव मे नैव मात्सर्य भाव:

न धर्मो न चार्थो न कामो ना मोक्ष: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खम् न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा: न यज्ञा:

अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

न मृत्युर् न शंका न मे जातिभेद: पिता नैव मे नैव माता न जन्म

न बन्धुर् न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

अहं निर्विकल्पॊ निराकार रूपॊ विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्

न चासंगतं नैव मुक्तिर् न मेय: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

पहिल पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि---- ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ -------- | दोसरो पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि-----ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-------- । जँ अहाँ नीकसँ पढ़बै तँ पता लागत जे संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर जे अलग शब्दमे छै ओहो दीर्घ भए रहल छै। आब शंकराचार्योसँ पहिनुक रचना देखी। तँ पढू रावण रचित ई शिवतांडव स्त्रोतम्। एहूमे संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ भेल अछि चाहे ओ एक शब्दमे अछि वा अलग शब्दमे। लघु-दीर्घक-लघु-दीर्घ-----ऐ रूपकेँ पालन 14 श्लोक धरि पालन कएल गेल अछि।

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले

गलेवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं

चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ 1 ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-

-विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।

धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके

किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ 2 ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर

स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।

कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि

क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ 3 ॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा

कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।

मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे

मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ 4 ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर

प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।

भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटक

श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥ 5 ॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-

-निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।

सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं

महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥ 6 ॥

करालफालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-

द्धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-

-प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥ 7 ॥

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्-

कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धुकन्धरः ।

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः

कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ 8 ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-

-विलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ 9 ॥

अगर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी

रसप्रवाहमाधुरी विजृम्भणामधुव्रतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं

गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ 10 ॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-

-द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालफालहव्यवाट् ।

धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल

ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ 11 ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्त्रजोर्-

-गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।

तृष्णारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः

समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ 12 ॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्

विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।

विमुक्तलोललोचनो ललाटफाललग्नकः

शिवेति मन्त्रमुच्चरन् सदा सुखी भवाम्यहम् ॥ 13 ॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं

पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसन्ततम् ।

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं

विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥ 14 ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः

शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।

तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां

लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शम्भुः ॥ 15 ॥

ऐ के अलावे पूरा संस्कृत पद्ये एकर उदाहरण अछि। मुदा से देब ने हमरा अभीष्ट अछि आ ने उचित।

मैथिलीमे ई नियम नै छै तकर कारण प्राकृत-अप्रभंश भाषाक प्रभाव छै। मैथिली सहित आन-आन आधुनिक उत्तर भारतीय भाषामे ई सेहो ई नियम नै मानल जाइत छै प्राकृत-अपभ्रंशक प्रभावें। आब ई देखू जे ई प्राकृत-अपभ्रंश कोन भाषा थिक। प्राकृतक सम्बन्धमे नाट्य शास्त्रक प्रणेता भरत मुनि कहै छथि जे------

एतदेव विपर्यस्तं संस्कार गुण वर्जितम्

विज्ञेयं प्राकृतं पाठ्यं नाना वस्थान्तरात्मकम्।

मने जे मूल शब्दक अक्षरकेँ आगू-पाछू कए वा सरलीकृत कए बाजब प्राकृत पाठ कहाइए। ऐठाम मूल शब्द मने संस्कृतक शब्द भेल, मुदा मूल शब्द कोनो भाषाक भए सकैए। तेनाहिते आचार्य भर्तृहरि जी प्राकृतक सम्बन्धमे कहै छथि जे --------

दैवीवाक् व्यवकीर्णेयम शकतैरभि धातृभिः

मने जे दैवीवाक् (संस्कृत) अशक्त लोकक मूँहमे आबि भिन्न-भिन्न रूपमे आबि जाइ छै। मुदा महाभाष्यकार पतञ्जलि प्राकृतकेँ अपशब्दक रूपमे देखैत छथि आ हुनका मतें ऐ तरहक अपशब्दक प्रयोग चाहे ओ बाजल जाइ की सूनल जाइ दूनू रूपमे अधर्म थिक।

प्रायः-प्रायः हरेक भाषाविज्ञानी प्राकृतक बाद बला रूपकेँ अपभ्रंशक नाम देने छथिन्ह। लगभग नवम आ दशम शताब्दी धरि प्राकृतक प्रयोग खत्म भए गेल छल आ अपभ्रंशक प्रयोग शुरू भए गेल छल। मुदा ऐ ठाम मोन राखू जे अधिकांश भाषाविज्ञानी अप्रभंशकेँ प्राकृतसँ अलग मनने छथि मुदा दूनूक प्रकृति एक समान हेबाक कारणें " प्राकृत-अपभ्रंश " नाम बेसी चलै छै। प्राकृतमे शब्दक निर्माण मुख्यतः लोक रूचिपर निर्धारित छै ने की व्याकरणपर। एकटा उदाहरण देखू-----चन्द्र शब्दसँ चन्दा प्राकृत शब्द भेल मुदा इन्द्र शब्दसँ इन्दा शब्द नै बनल ब्लकि इन्दर शब्द बनल। तेनाहिते वधू शब्दसँ

बहु बनि तँ गेल मुदा साधु शब्दसँ साहु नै बनल। साहु अलग शब्द अछि। आ लगभग एहने हालति अपभ्रंशक अछि। ई बात जननाइ महत्वपूर्ण अछि जे जेनाहिते प्राकृत लेल मूल शब्द संस्कृत छै तेनाहिते अपभ्रंश लेल मूल शब्द प्राकृत छै। आ बादमे एही अपभ्रंशसँ मैथिली आ आन आधुनिक भारतीय भाषा सभहँक जन्म भेल। ओना प्राकृतक बहुत रूप छै। तेनाहिते अपभ्रंशक सेहो अनेको रूप छै। मैथिलीमे अपभ्रंशकेँ अपभ्रष्ट वा अवहट्ट सेहो कहल जाइत छै। मुदा ई प्राकृत रूप हरेक समयमे होइत रहलैए। वेदक नाराशंसी एकर उदाहरण अछि | आ ऋगवेदमे ओहि समयक सामानान्तर भाषाक बहुत रास शब्द भेटत। तेनाहिते अशोक वाटिकामे हनुमान जीक ई चिन्ता जे हम सीता जीसँ देवभाषामे गप्प करी की मानुषी भाषामे सेहो ऐ गप्पक प्रमाण अछि जे ओहू समयमे संस्कृतक समानान्तर भाषा छलै आब ओकर नाम मानुषी होइ की वा अन्य कोनो। महत्वपूर्ण तँ ई छै जे वेदसँ लए कए एखन धरि संस्कृतक समानान्तर धारा बहैत रहल आब भले ही ओकर नाम जे रहल होइ।

संस्कृत शब्द जखन प्राकृत रूपमे आबए लगलै तखन संयुक्ताक्षर शब्दपर बहुत बेसी प्रभाव पड़लै। जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे प्राकृत बाजए बला सभ संयुक्ताक्षर शब्दकेँ अपन लक्ष्य बनेने छल ताहूमे एहन संयुक्ताक्षर बला शब्द जे शब्दक शुरूआतमे छल। एकर कारण छलै जे संयुक्ताक्षर बला शब्दकेँ बजबामे बहुत सावधानी आ शिक्षा चाही छल। संस्कृतक संयुक्ताक्षर बला शब्द प्राकृतमे दू रूपमे तोड़ल गेल---

1) जै संस्कृतक शब्दक शुरुआत संयुक्ताक्षरसँ भेल छै तकरा प्राकृतमे पूरा-पूरी लोप कए देल गेलै। केखनो-केखनो शुरूआतक संयुक्ताक्षरकेँ बादमे आनि देल गेलै जेना-----

‘‘ग्रह’’ संस्कृत छै मुदा एकर प्राकृत ‘‘गिरहो’’ छै। तेनाहिते स्कन्द लेल खन्दो, क्षमा लेल खमा वा छमा, स्तम्भ लेल खम्भ, स्खलितं लेल खलिअं, क्लेश लेल किलेसो इत्यादि।

2) जँ शब्दक शुरुआत छोड़ि कतौ संयुक्ताक्षर छै तँ केखनो ओकर लोप भए गेल छै वा नव रूपमे संयुक्ताक्षर छै जेना ----

चतुर्थी लेल चउत्थी, चैत्र लेल चइत्ता, चन्द्रिमा लेल चन्दिमा, क्षेत्रम् लेल छेतम् आदि-आदि। कुल मिला कए प्राकृत-अपभ्रंशमे एहन स्थिति बनल जे दूनू भाषामे सँ कोनो भाषामे एहन शब्द नै छलै जकर शुरूआत संयुक्ताक्षर शब्दसँ होइत हो।

एतेक विवेचनाक बाद हम अपन मूल उद्येश्य दिस चली। हमर मूल उद्येश्य छल जे मैथिलीमे संस्कृते जकाँ अलग-अलग शब्द रहितों संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर दीर्घ किएक नै होइए। आब जँ गौरसँ उपरका विवरण पढ़ने हएब आ जँ आर प्राकृत-अपभ्रंशक पोथी सभ पढ़ब तँ पता लागत जे प्राकृत-अप्रभंशमे तँ संयुक्ताक्षरसँ शुरूआत शब्द छैके नै। आ मैथिलीयो अपभ्रंशसँ निकलल अछि आ प्रारंभिक मैथिलीमे संयुक्ताक्षरसँ शुरूआत होइत कोनो शब्द नै अछि। आ तँए मैथिलीमे संस्कृतक ई नियम नै आएल। आ अहाँ अपने सोचियौ ने जे जै भाषामे संयुक्ताक्षरसँ शुरू होइत शब्द छैके नै से एहन तरहँक नियम किएक राखत। मुदा जँ नवीन मैथिली भाषाक किछु प्रतिष्ठित लेखकक रचनाकेँ

देखी तँ ओ मात्र क्रियापदकेँ छोड़ि सभ संस्कृतक शब्द (तत्सम शब्द)केँ प्रयोग केने छथि। आन-आन कम प्रतिष्ठित लेखक अपन रचनामे तत्सम शब्दकेँ फिल्मी मसल्ला मानि जोरगर प्रयोग करै छथि। एतबा नै पं. गोविन्द झा जी अपन पोथी "मैथिली परिशीलन"क पृष्ठ 29-30 पर गौरव पूर्वक नवीन भारतीय भाषा (जै मे मैथिली सेहो अछि)केँ तत्सम निष्ठ हेबाक बहुत रास फायदा गनौने छथि। आब हमरा सन जिज्ञासु लग ई प्रश्न अपने-आप आबि जाइए जे जँ संस्कृतक शब्द लेलासँ बहुत रास फायदा भेलै (वा भए सकैत छै) तखन तँ संस्कृतक सम्बन्धित नियम लेलासँ सेहो फायदा भेल रहितै (वा भए सकैत छै)। ओनाहुतो मैथिलीमे वा अन्य कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक पद्यमे संस्कृत शब्दक प्रयोग होइ छै तखन ओ नियम स्वतः पालन भए जाइत छै। अहाँ अपने मैथिली महँक एहन कोनो पद्य गाउ जाहिमे संयुक्ताक्षरसँ शुरू होइत कोनो संस्कृत शब्द हो स्वतः अहाँकेँ बुझा जाएत जे अलग शब्द रहितों संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर दीर्घ होमए लगैत छै। ऐठाँ फेर मोन राखू जे प्राकृत-अपभ्रंश भाषामे एहन शब्द छलैहे नै जकर शुरूआत संयुक्ताक्षरसँ होइ तँए ओहि भाषामे ई नियम नै पालित भेल। आब एतेक विवेचनक बाद अहाँ सभकेँ मामिला बुझबामे आएल हएत। तँए हमर आग्रह जे जँ ऐ नियमसँ बचबाक हो तँ संयुक्ताक्षरसँ शुरू होइत शब्दक तद्भव रूप प्रयोग करू जेना " प्रकाश " लेल परकाश, " प्रयोग " लेल परियोग इत्यादि। हमर कहबाक मतलब जे जेना पुरना कालमे प्राकृत संयुक्ताक्षरकेँ हटा देलकै वा आधुनिक कालमे बंगला भाषामे संयुक्ताक्षर हटि गेलै तेनाहिते मैथिलीमेसँ संयुक्ताक्षर सेहो हटा दिऔ। आ जँ अहाँ संस्कृते शब्द लेब तखन पूरा नियम सहित लिअ। आब अहाँ जँ सकांक्ष पाठक हएब तँ हमरासँ पूछब जे जँ केओ संस्कृत छोड़ि आन भाषाक शब्द लेत तखन की ओहि भाषाक नियमक पालन करत ? ऐ लेल हमर उत्तर रहत जे नै। कारण संस्कृत हमर मूल भाषा थिक तँए ओकरा दिस ताकब हमर मजबूरी नै बल्कि कर्तव्य सेहो अछि। मुदा ओकरा छोड़ि जँ आन भाषाक शब्द लै छै तखन ओकरा मैथिलीक नियम हिसाबें प्रयोग करू। जेना की अरबी-फारसी-उर्दू भाषामे " ग़ज़ल " लिखल जाइत छै मने ग आ ज केर निच्चा नुक्ता लगाएल जाइत छै मुदा मैथिलीमे नुक्ता नै छै तँए मैथिलीमे " गजल " लीखू। नुक्ता लगा कए लिखब बेकार । कोनो संस्कृतक शब्दकेँ वा अन्यदेशीय शब्दकेँ मैथिलीकरण कोना करी आ कोना नव शब्द बनाबी तकर विवेचना आगू हएत।

ई छल हमर पहिल तर्क। आब कने दोसर तर्क दिस चली---

संस्कृत पद्यमे एकटा पाँतिकेँ इकाइ मानल जाइत छै। आ जँ हम शब्दकेँ भिन्न-भिन्न करै छिऐ मने अलग-अलग शब्दक संयुक्ताक्षरसँ भेल दीर्घ नै मानै छिऐ तँ एकर मतलब जे हम पाँतिकेँ नै बल्कि शब्दकेँ इकाइ मानि रहल छिऐ आ हमरा जनैत पद्यमे शब्दकेँ इकाइ मानब उचित नै। पद्यमे इकाइ सदिखन पाँति होइ छै। एकटा विडंबना देखू जे मैथिलीक सभ व्याकरण शास्त्री आ कवि लोकनि शब्दकेँ इकाइ तँ मानै छथि मुदा जखन जगण-मगण केर गिनती करै छथि तखन पाँतिकेँ इकाइ मानि लै छथि। एकटा उदाहरण लिअ जे की वसन्त तिलका छन्दक अछि। ऐ छन्दक व्यवस्था एना अछि----

तगण+ मगण+जगण +जगण + गा + गा

मने की ----दीर्घ-दर्घ-लघु +दीर्घ-लघु-लघु +लघु-दीर्घ-लघु +लघु-दीर्घ-लघु +दीर्घ+ दीर्घ

आब एकर पद्य उदाहरण देखू----

" ई ने अहाँक सन वीरक काज थीकऽ"

(कविवर सीताराम झा, मैथिली छन्द शास्त्र, पृष्ठ-45)। ऐ एकटा पाँतिमे देखू जे " ई " आ "ने " दूटा अलग-अलग शब्द अछि सङ्गे-सङ्ग तेसर शब्द " अहाँक" केर पहिल अक्षर " अ " लए कए मात्र एकटा " तगण "बनल अछि। आब हमर कहब अछि जे जँ अहाँ पद्यमे शब्देकेँ इकाइ मानै छिऐ तखन दू-तीनटा अलग-अलग शब्दकेँ सानि एकटा जगण-मगण किएक बनबै छी। जँ केओ शब्देकेँ इकाइ मानै छथि तकर मतलब ई भेल जे ओ अपन पद्यमे एहन शब्दकेँ प्रयोग करथि जे हरेक जगण-मगण मने कोनो दशाक्षरी खण्ड लेल समान रूपसँ रहए। तँए हमर मानब जे संस्कृतक पद्ये जकाँ जँ अलग-अलग शब्द होइ तैयो संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक बला अक्षर दीर्घ हएत। ऐठाँ ई मोन राखू जे एकटा पाँति खत्म भेलै तँ ओ इकाइ खत्म भेलै। आब जँ दोसर पाँतिक शुरूआत संयुक्ताक्षरसँ भए रहल छै तकर प्रभाव पहिल पाँतिक अन्तिम शब्दक अन्तिम अक्षरपर नै पड़त।

पं. गोविन्द झा जी अपन पोथी " मैथिली छन्द शास्त्र "क पृष्ठ 14पर लिखै छथि जे ---- ए,ऐ,ओ,औ कतहु लघु होइत अछि आ कतहु दीर्घ आ तकर बाद ओ समान्य नियम देखेने छथि। मुदा उदाहरणमे देल गेल जे-जे शब्द सभ लेने छथि से प्रयाः-प्रायः आइसँ 150 बर्ख पहिनुक अछि सेहो सोति नामक ब्राम्हणमे बाजल जाइत छल ओहो मात्र पुरूष वर्गमे। हमर कहबाक मतलब जे स्त्री (चाहे कोनो जातिक किएक ने हो) एवं गैर-ब्राम्हण ओहि शब्दावलीक अभ्यस्त नै छल आ ने अछि। तँए हम ओइ नियम सभहँक विवेचन नै करब सोंझ स्वरे कहब जे ए,ऐ,ओ,औ जतए रहए ततए दीर्घ रहत। हँ, दूटा गप्प धेआन राखू पहिल जे बहुत काल ए,ऐ,ओ,औ आदिक उच्चारण कोमल भ' जाइत छै मुदा कोमल उच्चारणक कारणें ओ लघु नै मानल जाएत। आ दोसर गप्प जे प्राकृत-कालमे संस्कृतक विरोध स्वरूप लोक सभ अपना सुविधाक हिसाबसँ ए,ऐ,ओ,औ आदिकेँ कतौ लघु आ कतौ दीर्घ मानि लेला। शुरुआती प्राकृत कालमे उच्चारण मुख-सुखपर आधारित अछि मने एहन उच्चारण जकरा बाजएमे बेसी कठनाइ नै हो। मुदा जखन इएह प्राकृत संस्कारयुक्त बनि गेल तखन संस्कृते जकाँ एकरो विरोध भेलै आ अप्रभंश भाषा आएल। मुदा आइकेँ जुगमे जखन की मैथिली संस्कारयुक्त बनि गेल अछि तखन प्राकृत-अप्रभंश नियमक कोन काज (आब अहाँ सभ ई डर नै देखाएब जे संस्कारयुक्त भेलासँ मैथिली मरि जाएत। जँ एतबे डर अछि तखन मैथिलीकेँ 1000 बर्ख पाछू ल' जाउ आ तखन प्राकृत-अप्रभंश नियम लिअ। वस्तुतः भाषाकेँ मरब आ जन्मब प्रकिया मनुक्खे जकाँ छै जे की रोकल नै जा सकैए। हँ, किछु स्थान राखल जा सकैए जैसँ मूल भाषाक विशेषता नव भाषामे रहि जाए) तँए हमर ई स्पष्ट रूपें मानब अछि जे ए,ऐ,ओ, औ आदि

जतए रहै ओकरा दीर्घ मानू (ओना छन्दमे केखनो काल अपवाद स्वरूप काज चलेबा लेल ए,ऐ,ओ, औ आदिकेँ लघु मानल जाएत रहलैए मुदा ई छूट जकाँ भेल नियम जकाँ नै) |

पं. जी एही पोथीक पन्ना 14हेपर एकटा नियम देलाह जे --- तद्भव शब्दमे अन्तसँ तेसर ओ चारिम स्थानपर पड़निहार ए,ऐ,ओ,औ सभ लघु थिक जेना ---

तेल (21)------- तेलाह (121)

फैल (21)----फैलगर (1111)

मुदा पं. जी ई नै स्पष्ट केलाह जे अन्तसँ तेसर ओ चारिम स्थानपर पड़निहार ए,ऐ,ओ,औ सभ लघु किएक होइत अछि।

आब आउ चली प. गोविन्द झा जी द्वारा लिखित आ 1987मे प्रकाशित पोथी " मैथिली उद्गम ओ विकास " (पहिल संस्करण 1968मे मैथिली प्रकाशन समीतिसँ आ दोसर परिवर्धित संस्करण मैथिली अकादेमीसँ)क 19एम पन्नापर----

" 11 (1) वैदिक कालहिसँ ई नियम चल अबैत अछि जे एके पदमे एके स्वर उदात रहए, आन सभ अनुदात भए जाए। ई नियम शेष निघात कहबैत अछि। एहि प्राचीन नियमक परिणामस्वरूप मैथिलीमे एक बड़े महत्वपूर्ण नियम ई अछि जे अन्तसँ प्रथम ओ द्वितीय स्थानकेँ छोड़ि शेष जतेक ध्वनि अछि से लघु भए जाइत अछि। एहि नियमकेँ पण्डित ग्रिअर्सन साहेब Rule of short antepenultimate कहल अछि।मैथिलीमे एहि नियमक अनुसारें एक शब्दमे अधिकसँ अधिक दुइ गुरू रहि सकैत अछि, आ सेहो अन्तसँ प्रथम वा द्वितीय स्थानमे ,ताहिसँ पूर्व सकल स्वर नियमतः लघु रहत, तथा प्रत्यादि जोड़लासँ जखनहि कोनो गुरू ध्वनि तृतीय वा ताहिसँ पूर्व पड़ि जाएत तखनहि ओ लघु भए जाएत। एकर उदाहरण ग्रंथमे वारंवार भेटत, एतए दुइ-चारि उदाहरण देखबैत छी--- पानि,पनिगर,काँट,कटाँह, बात, बताह, बतहा, बतहबा।

टि0 एहि नियमकेँ कने आर परिष्कृत करब आवश्यक। ग्रिअर्सन साहेबक कथानुसार यदि तृतीय वर्ण नियमतः लघु होइत अछि तँ " पाओल ", " आबए " इत्यादिमे "आ "लघु किएक नहि भेल? एकर समाधान ग्रिअर्सन साहेब ई देल अछि जे अन्तिम लघु स्वर वा लघुत्तम स्वरक लेखा नहि होइत अछि। परन्तु छन्दमे शतशः उदाहरणसँ आ उच्चारण-पर्यवेक्षणसँ ई स्पष्ट अछि जे अन्तिम लघुत्तम स्वरो एक वर्ण एक syliable गनल जाइत छल। तें उक्त नियमक स्वरूपएहन राखब समुचितः मैथिलीमे गुरू ध्वनि अन्तसँ चारि मात्राक भित्तरे रहि सकैत अछि, ताहिसँ पूर्व नहि। फलतः मैथिली शब्दक अवसान 22,112,211,121 एही चारि प्रकारक भए सकैत अछि ओ ताहिसँ पूर्व सकल ध्वनि बिनु अपवादेँ लघु रहत यथा-स0 आकाश, मै0 अकास इत्यादि।‘‘

फेर पं. जी 1992मे प्रकाशित पोथी " उच्चतर मैथिली व्याकरण " द्वितीय संस्करणक पृष्ठ 19पर, 2006मे प्रकाशित पोथी " मैथिली परिचायिका " केर पृष्ठ 11पर आ 2007मे प्रकाशित पोथी " मैथिली परिशीलन " केर पृष्ठ 56-57पर इएह गप्प एकसामान रूपसँ कहने-लिखने छथि।

तँ पं. जीक करीब पाँचटा पोथीमे ऐ विषय-वस्तुकेँ पढ़लाक पछाति हम अपन किछु विचार राखए चाहब---

वैदिक कालमे छन्द निर्माण लेल लघु-गुरू प्रकिया नै छल। मात्र अक्षरकेँ गानि क' छन्द बनै छल जकरा गेबा लेल उदात, अनुदात एवं स्वरित रूपक सहायता लेल जाइत छलै। उदात मने कोनो अक्षरक स्वरकेँ उठा क' गाएब, अनुदात मने कोनो अक्षरक स्वरकेँ निच्चा खसा क' गाएब तथा स्वरित मने कोनो अक्षरक स्वरकेँ तुरंत उपर उठा क' तुरंत निच्चा खसा क' गाएब। वैदिक साहित्यमे जे अक्षर लघु अछि तकर उच्चारण उदात भ' सकैए तेनाहिते जे अक्षर दीर्घ अछि तकर उच्चारण अनुदात भ' सकै छल। सोंझ रूपसँ कही तँ उदात,अनुदात-स्वरित कोनो अक्षरक मात्रापर निर्भर नै छल।

2) वैदिक साहित्य केर बाद लौकिक संस्कृतसँ ल' क' प्राकृत-अप्रभंश भाषा रूपमे मैथिली साहित्यमे वैदिक छन्द नै रहल मने या तँ लौकिक संस्कृतक वर्णवृत रहल या मात्रिक छन्द।

3) पं. जी लघु-गुरू नियम आ उदात-अनुदात-स्वरित प्रकियाकेँ एकै मानि लेने छथि।

4) पं. जीक हिसाबें ग्रिअर्सन साहेब द्वारा देल गेल Rule of short antepenultimate बेसी ठीक नै अछि तँए पं. जी ओहिमे संशोधन केलाह। आब हमर प्रश्न ई अछि जे जँ उपरका नियम मैथिली लेल अनिवार्य अछि तखन ओहिमे संशोधन किएक ? संशोधित होमए बला नियम अनिवार्य भैए ने सकैए।

5) पं. जीक पोथी सभ पढ़ि हमरा बहुत बेर ई अनुभव होइए जे पं. जी व्याकरण शास्त्र, छन्द शास्त्र आ ध्वनि विज्ञान तीनूक नियम एकैमे सानि देने छथिन्ह। हरेक भाषामे लघुतर आ अति-लघुतर ध्वनि होइ छै मुदा ओकर विवेचन व्याकरण आ छन्द शास्त्रमे नै भ' ध्वनि शास्त्रमे होइत छै। जँ लेखककेँ एकै पोथीमे ध्वनि विज्ञान देबाक रहै छै तँ ओकर खण्ड अलग क' देल जाइत छै। ऐ ल' क' पं. जीक पोथीमे बहुत ठाम संदेहात्मक स्थिति बनि जाइत छै।

हम उपरमे जे विचार रखलहुँ ताहि अधारपर अपन निष्कर्श द' रहल छी----

ई नियम अनिवार्य नियम नै अछि कारण पं. जी स्वयं ऐ नियमक बहुत रास अपवाद देखेने छथि। कोनो अनिवार्य नियममे जँ एतेक अपवाद हो तँ निश्चित रूपसँ ओकर अनिवार्यतापर प्रश्नचिन्ह लागै छै।

ई नियम व्याकरणक ओ छन्दशास्त्रक नै ब्लकि शब्दकोषीय अछि। मने ऐ नियमक सहायतासँ अहाँ संस्कृत वा अन्य भाषाक शब्दकेँ मैथिलीकरण क' सकै छी। मोन पाड़ू प्राकृत भाषा संस्कृतक शब्द सभकेँ (मने शब्दक शुरूसँ पहिल,दोसर वा तेसर दीर्घक उच्चारण गाएब क' देलक। आब आगू ऐ गाएब कएल दीर्घ लेल हम मात्र कोमल शब्दक प्रयोग करब) कोमलीकृत केलक जेना--आकाश केर बदला अकास, आत्मा केर बदला अत्मा आदि। बादमे एही नियमक अधारपर अंग्रेजी शब्दक इएह हाल भेलै जेना ड्राइवर केर बदला डरेबर, स्टेशन केर बदला टीसन, आदि-आदि। मुदा ई नियम ओहने शब्दमे लागल जै शब्दमे विराम लेबाक सुविधा नै छलै। "परिशीलन" ई एकटा शब्द अछि मुदा एकर उच्चारण -- "परि-शी-लन" होइत अछि मने एकै शब्दमे दू ठाम विराम अछि तँए ऐ शब्दकेँ कोमल करबाक जरूरति नै भेल। अरबी-फारसीक हजारों शब्द मूल रूपसँ मैथिलीमे चलि रहल अछि (मने बिना कोमल केने) कारण ओ शब्द सभमे विराम छै वा रहल हेतै। जँ अहाँ " मैथिली " शब्दक उच्चारण करबै तँ " मै-थिली " उच्चारित हएत। मुदा विरामक ई सुविधा आकाश, आत्मा, ड्राइवर आदि शब्दमे नै छलै तँए ओकरा कोमल बना प्रयोगमे लेल गेलै। स्वयं पं. जी अपवाद स्वरूप जै शब्दक उदाहरण देने छथि तकरा देखू---बासन--केर उच्चारण बा-सन भेल। मानल--केर उच्चारण मा-नल भेल। अनलहुँ--केर उच्चारण अन-लहुँ भेल। मने एहू शब्द सभमे विराम छै तँए एहू शब्द सभकेँ कोमल करबाक जरूरति नै बुझाएल। जँ ऐ नियमक अधारपर देखी तँ आधुनिक मैथिली भाषाक कतेको शब्दकेँ ठीक करबाक जरूरति बुझाएत। हालेमे दरभंगासँ प्रकाशित मैथिली दैनिक " मिथिला आवाज " ऐ नियमक अधारपर गलत अछि। सही नाम हेतै " मिथिला अवाज " मुदा मैथिलीक जे राहु-शनि-केतु सभ छथि से ऐ नियमक पालन नै क' क' मैथिली भाषाक निजताकेँ तोड़बापर लागल छथि। तँ आब अहाँ सभ बूझि सकै छिऐ जे पं. जी जै नियमकेँ अनिवार्य मानै छथि से मात्र अन्य भाषाक शब्दकेँ मैथिलीकरण करबाक औजार थिक। उच्चारणक आग्रहसँ औजारक जरूरति भैयो सकैत छै आ नहियो भ' सकै छै। ई शब्दकोषीय नियम आजुक कालमे ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतेक की पहिने छल। लेखक सभसँ आग्रह जे ऐ नियमसँ अन्य भाषाक शब्दकेँ मैथिलीकरण करथि आ मैथिलीक निजताकेँ सुरक्षित राखथि।ऐ के विपरीत केखनो काल भाषाक निजता रखबाक लेल शब्दकेँ दीर्घ सेहो कएल जाइत छै जेना उर्दूमे उस्ताद मुदा मैथिलीमे ओस्ताद। वकील केर बदलामे ओकील आदि-आदि।

तँ एतेक धरि एलाक पछाति हम कहि सकै छी जे ए,ऐ,ओ,औ आदि जै ठाम रहत दीर्घे रूपमे रहत। अकारण रूपसँ वा अपना मोने लघु मानि लेबासँ नीक जे मैथिली भाषामेसँ लघु-गुरू हटा वैदिक छन्दक फेरसँ प्रचलन कएल जाए। ऐसँ अनावश्यक रूपसँ खर्च होइत उर्जा बच'त आ भाषाक विकास सुनिश्चित हएत।

मैथिलीमे बाल गजल

की थिक बाल गजलः किछु लोक "बाल गजल"क नामसँ तेनाहिते चौंकि उठल छथि जेना केओ हुनका अनचोकेमे हुड़पेटि देने हो। जँ एहन बात मात्र मैथिलिए टामे रहितै तँ कोनो बात नै, मुदा ई चौंकब हिन्दी आ उर्दूमे सेहो भए रहल छै। कारण ई अवधारणा मात्र मैथिलिए टामे छै आर कोनो भारतीय भाषामे नै। जँ हम कोनो हिन्दी-उर्दू भाषी गजलकार मित्रसँ"बाल गजल"क चर्च करैत छी तँ चोट्टे कहैत छथि जे उर्दूक बहुत गजलकार सभ बहुत शेरमे बाल मनोविज्ञानक वर्णन केने छथि खास कए ओ सुदर्शन फाकिर द्वारा कहल आ जगजीत सिंह द्वारा गाओल गजल----- "ये कागज की कश्ती वो बारिस का पानी" बला संदर्भ दै छथि आ ई बात ओना सत्य छै मुदा " बाल गजल"केँ फुटका कए ओकरा लेल अलग स्थान मात्र मैथिलिए टामे देल गेलैए। आ ई मैथिलीक सौभाग्य थिक जे ओ "बाल गजल"क अगुआ बनि गेल अछि भारतीय भाषा मध्य। जहाँ धरि बाल गजलक विषय चयन केर बात थिक तँ नामेसँ बुझा जाइत अछि ऐ गजलमे बाल मनोविज्ञान केर वर्णन रहैत छै। तथापि एकटा परिभाषा हमरा दिससँ ----" एकटा एहन गजल जाहि महँक हरेक शेर बाल मनोविज्ञानसँ बनल हो आ गजलक हरेक नियमकेँ पूर्ववत् पालन करैत हो ओ बाल गजल कहेबाक अधिकारी अछि"। जँ एकरा दोसर शब्दमे कही तँ ई कहि सकैत छी जे बाल गजल लेल नियम सभ वएह रहतै जे गजल लेल होइत छै बस खाली विषय बदलि जेतै।

आब आबी बाल गजलक अस्तित्व पर। किछु लोक कहता जे गजल दार्शानिकतासँ भरल रहै छै तँए बाल गजल भैए ने सकैए। मुदा ओहन-ओहन लोक विदेहक अंक-111जे बाल गजल विशेषांक अछि तकर हरेक बाल गजल पढ़थि हुनका उत्तर भेटि जेतन्हि। ओना दोसर बात ई जे कविता-कथा आदि सभ सेहो पहिने गंभीर होइत छल मुदा जखन ओहिमे बाल साहित्य भए सकैए तँ बाल गजल किएक नै ? ओनाहुतो मैथिलीमे गजल विधाकेँ बहुत दिन धरि सायास (खास कए गजलकारे सभ द्वारा) अवडेरि देल गेल छलै तँए बहुत लोककेँ बाल गजलसँ कष्ट भेनाइ स्वाभाविक छै।

की बाल गजल लेल नियम बदलि जेतैः

जेना की उपरमे कहल गेल अछि जे बाल गजल लेल सभ नियम गजले बला रहतै बस खाली एकटा नियमसँ समझौता करए पड़त। माने जे बहर-काफिया-रदीफ आ आर-आर नियम सभ तँ गजले जकाँ रहतै मुदा गजलमे जेना हरेक शेर अलग-अलग भावकेँ रहैत अछि तेना बाल गजलमे कठिन बुझाइए। तँए हमरा हिसाबेँ ऐठाम ई नियम टूटत मुदा तैओ कोनो दिक्कत नै कारण मुस्लसल गजल तँ होइते छै। अर्थात बाल गजल एक तरहेँ "मुस्लसल गजल " भेल।

बाल गजलक पूर्व भूमिकाः

तारीखक हिसाबें 24/3/2012कें बाल गजलक उत्पति मानल जाएत (एहि पाँतिक लेखक द्वारा 24/3/2012कें दिल्लीमे साहित्य अकादेमी आ मैलोरंग द्वारा आयोजित कथा गोष्ठीमे ऐ बाल गजल नामक विधाक प्रयोग कएल गेल) मुदा ओकर स्वरूप मैथिलीमे पहिनेहें फड़िच्छ भए चुकल छल। 09 Dec. 2011कें अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.com पर प्रकाशित श्रीमती शांति लक्ष्मी चौधरी जीक ई गजल देखल जाए (बादमे ई गजल मिथिला दर्शनक अंक मइ-जून 2012मे सेहो प्रकाशित भेलै) आ सोचल जाए जे बिना कोनो घोषणाकें एतेक नीक बाल गजल कोना लिखल गेलै----------

शिशु सिया उपमा उपमान छियै हमर आयुष्मति बेटी

मैत्रेयी गार्गीक कोमल प्राण छियै हमर आयुष्मति बेटी

टिमकैत कमलनयन, धव-धव माखन सन कपोल

पुर्णमासीक चमकैत चान छियै हमर आयुष्मति बेटी

बिहुसैत ठोर मे अमृतधारा बिलखैत ठोर सोमरस

शिशु स्वरुपक श्रीभगवान छियै हमर आयुष्मति बेटी

नौनिहाल किहकारी सरस मिश्रीघोरल मनोहर पोथी

दा-दा-ना-ना-माँ सारेगामा गान छियै हमर आयुष्मति बेटी

सकल पलिवारक अलखतारा जन्मपत्रीक सरस्वती

अपन मैया-पिताश्रीक जान छियै हमर आयुष्मति बेटी

ज्ञानपीठक बेटी छियै सुभविष्णु मिथिलाक दीप्त नक्षत्र

मातृ पितृ कुलक अरमान छियै हमर आयुष्मति बेटी

"शांतिलक्ष्मी" विदेहक घर-घर देखय इयह शिशुलक्ष्मी

बेटीजातिक भविष्णु गुमान छियै हमर आयुष्मति बेटी

.....वर्ण 22.....

तेनाहिते एकटा हमर बिना छंद बहरक गजल अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.com आ विदेहक फेसबुक वर्सन http://www.facebook.com/groups/videha/पर 6/6/2011कें आएल छल से देखू----------

होइत छैक बरखा आ रे बौआ

कागतक नाह बना रे बौआ

देखिहें घुसौ ने चोरबा घर मे

हाथमे ठेंगा उठा रे बौआ

तोरे पर सभटा मान-गुमान

माएक मान बढ़ा रे बौआ

छैक गड़ल काँट घृणाक करेजमे

प्रेमसँ ओकरा हटा रे बौआ

नहि झुकौ माथ तोहर दुशमन लग

देशक लेल माथ कटा रे बौआ

तेनाहिते 4 अक्टूबर 2010केँ अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.com पर प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुर जीक ऐ गजलकेँ देखल जाए----- जे शब्दावलीक आधार पर बाल गजल अछि मुदा अर्थ विस्तारक कारणें बाल आ बूढ़ दूनू लेल अछि-----

बानर पट लैले अछि तैयार

बिरनल सभ करू ने उद्धार

गाएक अर्र-बों सुनि अनठेने

दुहै समएँ जनताक कपार

पुल बनेबाक समचा छैक नै

अर्थशास्त्र-पोथीक छलै भण्डार

कोरो बाती उबही देबाक लेल

आउ बजाउ बुढ़ानुस - भजार

डरक घाट नहाएल छी हम

से सहब दहोदिश अत्याचार

ऐरावत अछि देखा - देखा कए

सभटा देखैत अछि ओ व्यापार

कविवर सीताराम झा जीक करीब 1940मे लिखल बाल गजल सेहो छनि।

ऐ तीनटा गजलक आधार पर ई कहब बेसी उचित जे बाल गजलक भूमिका बहुत पहिने बनि गेल छल मुदा विस्फोट 24/3/2012कैँ भेलै। आ ऐ विस्फोटमे जतेक हमर भूमिका अछि ततबए हिनका सभकैँ सेहो छन्हि। ऐठाम ई कहब कनो बेजाए नै जे विदेहक अंक बाल गजलक पहिल विशेषांक अछि। विदेहक अंक-111 जे की बाल गजल विशेषांक अछि जाहिमे कुल 16 टा गजलकारक कुल 93टा बाल गजल आएल। संक्षिप्त विवरण एना अछि----------

रूबी झा जीक 13टा बाल गजल, इरा मल्लिक जीक 2टा, मुन्ना जीक 3टा, प्रशांत मैथिल जीक 1टा, पंकज चौधरी (नवल श्री) जीक 8टा, जवाहर लाल काश्यप जीक 1टा, क्रांति कुमार सुदर्शन जीक 1टा, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक 1टा, अमित मिश्रा जीक 30टा, ओमप्रकाश जीक 1टा, शिव कुमार यादव जीक 1टा, चंदन झा जीक 14टा, जगदानंद झा मनु जीक 6टा, राजीव रंजन मिश्रा जीक 4टा, मिहिर झा जीक 4टा, गजेन्द्र ठाकुर जीक 1टा आ ताहि संगे आशीष अनचिन्हारक 2टा बाल गजल आएल। बाल गजलक आलावे 7टा बाल गजल पर आलेख आएल। आलेख कार सँ छथि---- मुन्ना जी, ओमप्रकाश, चंदन झा, जगदानंद झा मनु, अमित मिश्र आ आशीष अनचिन्हार आ मिहिर झा। आ तारीख 15 अक्टूबर 2012 धरि अनचिन्हार आखरपर कुल 133 टा बाल गजल आ 35टा बाल रुबाइ आबि चुकल अछि संगे संग करीब 10टा बाल गजलपर आलेख उपल्बध अछि। एखन धरिक मुख्य बाल-गजलकारमे श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी, जगदानंद झा मनु, अमित मिश्रा, चंदन झा, पंकज चौधरी (नवल श्री) , शिव कुमार यादव, श्रीमती इरा मल्लिक, ओमप्रकाश, मिहिर झा, राजीव रंजन मिश्रा, क्रांति कुमार सुदर्शन, जवाहर लाल कश्यप, श्री मती रूबी झा (ई सभ गोटें अनचिन्हार आखरक http://anchinharakharkolkata.blogspot.comखोज छथि गजलक मामलेमे),प्रशांत मैथिल, श्री जगदीश चंद्र ठाकुर " अनिल ", विनीत उत्पल, मुन्ना जी, गजेन्द्र ठाकुर आ हम स्वंय। आब हमरा ई पूर्ण विश्वास अछि जे बाल गजल मैथिलीमे पसरत आ नेना- भुटका केर जीहपर चढ़त।

जखन विदेह द्वारा बाल गजल विशेषांक निकलल रहए तखन केओ नै सोचने रहए जे एतेक जल्दिए गजलक नव प्रारूप " भक्ति गजल " विकिसित भए जाएत। मुदा से भेल आ ताहि लेल सभसँ बेसी धन्यवादक पात्र छथि ओ लोक सभ जे की गजलक निंदा करैत छथि। कारण जँ ओ सभ नै रहितथि तँ आइ गजले नै रहितै.. बाल आ भक्ति गजलक तँ बाते छोड़ू।

की थिक भक्ति गजल-- जहाँ धरि भक्ति गजलक विषय चयन केर बात थिक तँ नामेसँ बुझा जाइत अछि ऐ गजलमे भक्ति केर वर्णन रहैत छै। तथापि एकटा परिभाषा हमरा दिससँ ----" एकटा एहन गजल जाहि महँक हरेक शेर भक्ति मनोविज्ञानसँ बनल हो आ गजलक हरेक नियमकेँ पूर्ववत् पालन करैत हो ओ भक्ति गजल कहेबाक अधिकारी अछि"। जँ एकरा दोसर शब्दमे कही तँ ई कहि सकैत छी जे भक्ति गजल लेल नियम सभ वएह रहतै जे गजल लेल होइत छै बस खाली विषय बदलि जेतै। मे भक्ति गजल बाल गजले जकाँ छै।

की भक्ति गजल लेल नियम बदलि जेतैः जेना की उपरमे कहल गेल अछि जे भक्ति गजल लेल सभ नियम गजले बला रहतै बस खाली एकटा नियमसँ समझौता करए पड़त। माने जे बहर-काफिया-रदीफ आ आर-आर नियम सभ तँ गजले जकाँ रहतै मुदा गजलमे जेना हरेक शेर अलग-अलग भावकेँ रहैत अछि तेना भक्ति गजलमे कठिन बुझाइए। तँए हमरा हिसाबेँ ऐठाम ई नियम टूटत मुदा तैओ कोनो दिक्कत नै कारण मुस्लसल गजल तँ होइते छै। अर्थात भक्ति गजल एक तरहेँ " मुस्लसल गजल " भेल।

किछु लोक आपत्ति कए सकै छथि जे गजल तँ दार्शनिक रहिते छै तखन ई भक्ति गजल किएक ? उचित प्रश्न मुदा हम कहब जे दर्शन आ भक्ति दूनूमे बहुत अंतर छै जकर चर्चा विद्वान सभ करिते रहै छथि तँए ई भक्ति गजल दर्शन बलासँ अलग भेल।

तारीखक हिसाबें भक्ति गजलक उत्पति केँ मानल जाएत जनवरी 2012केँ मानल जाएत जाहिमे जगदानंद झा मनु जीक भक्ति गजल आएल। मुदा ओहूसँ पहिने मिहिर झा द्वारा एकटा आएल जे ताहि समयकेँ हिसाबसँ ठीक छल मुदा बढ़ैत ज्ञानक सङ्ग ओहिमे काफिया आदिक दोष बुझना गेल। मुदा भक्ति गजल स्वरूप मैथिलीमे पहिनेहें फड़िच्छ भए चुकल छल। मैथिलीक प्रारंभिके दौरमे भक्ति गजल शुरुआत भए चुल छल कविवर सीताराम झा आ मधुप जीक गजलसँ सेहो शुद्ध अरबी बहरमे। मने 1928 धरि भक्ति गजल पूर्ण रूपेण स्थापित भए गेल छल मैथिलीमे।

तँ एतेक देखलाक पछाति आउ देखी कविवर सीता राम झा आ ओहि समयक किछु भक्ति गजल--- तँ आउ देखी 1928मे प्रकाशित कविवर सीताराम झा जीक " सूक्ति सुधा (प्रथम बिंदु)मे संग्रहीत एकटा गजलकेँ जे की वस्तुतः " भक्ति गजल " अछि---

जगत मे थाकि जगदम्बे अहिंक पथ आबि बैसल छी

हमर क्यौ ने सुनैये हम सभक गुन गाबि बैसल छी

न कैलों धर्म सेवा वा न देवाराधने कौखन

कुटेबा में छलौं लागल तकर फल पाबि बैसल छी

दया स्वातीक घनमाला जकाँ अपनेक भूतल में

लगौने आस हम चातक जकां मुँह बाबि बैसल छी

कहू की अम्ब अपने सँ फुरैये बात ने किछुओ

अपन अपराध सँ चुपकी लगा जी दाबि बैसल छी

करै यदि दोष बालक तँ न हो मन रोख माता कैं

अहीं विश्वास कैँ केवल हृदय में लाबि बैसल छी

एकर बहर अछि-1222-1222-1222-122 मने बहरे हजज

नोट--1) कविक मूल वर्तनीकेँ राखल गेल गेल अछि। विभक्ति सभ अलग-अलग अछि जे की गलत अछि।

2) कवि द्वारा चंद्र बिंदु युक्त सेहो दीर्घ मानल गेल अछि जे की गलत अछि। प्रसंग वश ईहो कहब बेजाए नै जे कविवर अपन गजल समेत सभ कवितामे चंद्रबिंदुकेँ दीर्घ मानि लेने छथि। शायद तँए पं गोविन्द झा जी सेहो चंद्र बिंदुकेँ दीर्घ मानै छलाह आ जकर खंडन भए चुकल अछि।

ऐकेँ अलावे मधुप जीक भक्ति गजल अछि। विजय नाथ झा जीक भक्ति गजल अछि। कहबाक मतलब जे अनचिन्हार आखरक आगमनसँ पहिनेहे भक्ति गजल छल मुदा ओकर नामाकरण (पहिल रूपमे जगदानंद झा मनु) अनचिन्हार आखरक पछाति भेल।

वर्तमान समयमे हमरा छोड़ि लगभग सभ गजलकार भक्ति गजल लीखि रहल छथि जेना , जगदानंद झा मनु, चंदन झा, अमित मिश्र, पंकज चौधरी नवल श्री, बिंदेश्वर नेपाली, सुमित मिश्र, श्रीमती शांति लक्ष्मी चौधरी, श्रीमती इरा मल्लिक, ओम प्रकाश, बाल मुकुन्द पाठक, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल, मिहिर झा, प्रदीप पुष्प, अनिल मल्लिक, राजीव रंजन मिश्र इत्यादि-इत्यादि।

ऐ विषयमे आर अनुसंधानक जरूरति अछि ऐ छोट आलेख आ हमर छोट बुद्धिमे भक्ति गजल एहन विस्तृत वस्तु ओतेक नै आएल जतेक एबाक चाही। ओना हम फेर विदेहकेँ ऐ विशेषांक लेल धन्यवाद नै देबै कारण हमहूँ विदेह छी आ लोक अपना आपकेँ धन्यवाद कोना देत।

8

हारल युद्धक साक्ष्य

हमरा आगूमे पसरल अछि ‘‘अपन युद्धक साक्ष्य’’ तारानंद वियोगीक गजल संग्रह। चालीस गोट गजलकेँ समेटने। लोककेँ छगुन्ता लागि सकैत छैक जे मैथिलीमे गजलक आलोचना कहिआसँ शुरू भए गेलैक। ऐ छगुन्ताक कारण मुख्यत: हम दू रूपेँ देखैत छी पहिल तँ ई जे गजल कहिओ मैथिली साहित्यक मुख्यधारामे नै आएल दोसर-मैथिल-जन एखनो गजलक समान्य निअम आ ओकर बनोत्तरीसँ परिचित नै छथि। समान्ये किएक अपने-आपकेँ गजल बुझनिहारक सेहो हाल एहने छन्हि। बेसी दूर नै जाए पड़त। ‘‘घर-बाहर’’ जुलाइ-सितम्बर 2008ई.मे प्रकाशित अजित आजादक लेल ‘‘कलानंद भट्टक बहन्ने मैथिली गजलपर चर्च’’ पढ़ि लिअ मामिला बुझबामे आबि जाएत।

जँ विष्यान्तर नै बुझाए तँ थोड़ेक देरले तारानंद वियोगीक पोथीसँ हटि अजाद जीक लेखक चर्च करी। ऐ लेखक पहिले पाँति थिक- मैथिलीमे गजल लिखबाक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि.....। मुदा कतेक सुदीर्घ तकर कोनो ठेकाना अजादजी नै देने छथिन्ह। फेर एही लेखक दोसर पैरामे अजित जी दूमरजामे फँसल छथि। ओ मैथिल द्वारा समान्य गप-सप्पमे गजलक पाँति नै जोड़बाक प्रथम कारण मानैत छथि। जे मैथिलीमे शेर एकदम्मे नै लिखल गेल। आब पाठकगण कने धेआन देल जाए। लेखक पहिल पाँति तँ अपनेकेँ धेआन हेबोटा करत जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ....।’’ सभसँ पहिल गप्प जे गजल किछु शेरक संग्रह होइत छैक आ दोसर गप्प ई जे जँ अजाद जीक मोताबिक शेर लिखले नै गेलैक तँ फेर कोन प्रकारक सुदीर्घ परंपराकेँ मोन पाड़ि रहल छथि अजादजी। ऐठाम गलती अजाद जीक नै मैथिलीक ओहि गजलकार सभक छन्हि जे गजल तँ लिखैत छथि मुदा पाठककेँ ओकर परिचए, गठन, निअम आदि देबासँ परहेज करैत छथि। ओना प्रसंगवश ई कहबामे कोनो संकोच नै जे गजल कखनो लिखल नै जाइत छैक। मुदा मैथिलीक धुरंधर सभ गजल लिखैत छथि। मूल रूपसँ अरबी-फारसी-उर्दूमे गजल कहल जाइत छैक लिखल नै। पाठकगण गजलक ई निअम भेल। आब फेरो अजित जीक लेखकेँ आगू पठू आ अपन कपार पीट अपनाकेँ खुने-खूनामे कए लिअ। अजित जी अपन संपूर्ण लेखमे जै शेर सभ मक्ता कहलखिन्ह अछि वस्तुत: ओ मक्ता छैके नै। पाठकगण मोन राखू, मक्ता गजलक ओहि अंतिम शेरकेँ कहल जाइत छैक जैमे गजलकार (एकरा बाद हम शाइर शब्द प्रयुक्त करब, अहूठाम मोन राखू शायर गलत उच्चारण थिक।) अपन नाम वा उपनामक प्रयोग करैत छथि। (अहूठाम मोन राखू हरेक गजलमे नाम वा उपनामक समान प्रयोग होएबाक चाही ई नै जे एकरा गजलक मक्ता तारानंदसँ होअए आ दोसर गजलक मक्ता वियोगीक नामसँ नामसँ।) मुदा आश्चर्य रूपेण अजादजी जै शेर सभकेँ मक्ता कहलखिन्ह अछि ओइमे कोनो शाइरक नाम- उपनाम नै भेटत। ओना अजितजी हिन्दीक सुप्रसिद्ध शाइर छथि तकर प्रमाण ओ लेखक प्रारंभेमे दए देने छथि।

हँ तँ ऐ लेखक संक्षिप्त अवलोकनक पछाति फेरसँ वियोगी जीक गजल संग्रहपर चली। तँ शुरूआत करी स्पष्टीकरणसँ, हमर नै वियोगी जीक। सभसँ पहिने ई जे अन्य मैथिली शाइर जकाँ वियोगीओ जी मानैत छथि जे गजल लिखल जाइत छैक। दोसर गप्प जे वियोगीजी द्वारा देल अपन भाषा संबंधी विचारसँ लगैत अछि जे भनहि वियोगीजी उर्दू सीख उर्दूक पोथी पढ़ैत हेताह मुदा गजल तँ किन्नहुँ नै लिखैत हेताह,कारण, पाठकगण धेआन देल जाए। अरबी-फारसी-उर्दू तीनू भाषाक छंद शास्त्र एकमतसँ कहैए जे दोसर भाषाकेँ तँ छोडू अपनो भाषाक कठिन शब्दक प्रयोग गजलमे नै हेबाक चाही। ठीक उपरोक्त भाषाक निअम जकाँ मैथिलीओ मे निअम छैक। तँए महाकवि विद्यापति अपन कोनहुँ गीतमे कृष्ण, विष्णु आदिक प्रयोग नै केने छथि। मुदा वियोगी जी अपन पोथीक नाम रखने छथि ‘‘अपन युद्धक साक्ष्य’’। जनसमान्य युद्ध तँ कहुना बुझि जेतैक मुदा साक्ष्य....। ऐठाम प्रसंगवश ई कहब बेजाए नै जे वियोगीजी अपनाकेँ अनअभिजात शब्दक प्रयोग मानैत छथि।

आब हमरा लोकनि ऐ पोथीमे प्रस्तुत चालीसो गजलक चर्च करी। पहिले भाषाकेँ देखी। ओना वियोगीजी भाषा संबंधी गलती जानि बूझि कए लौल-वश ततेक ने कएल गेल छैक जकरा अनठा कए आँगा बढ़ब संभब नै। एकर किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि- दोसर गजलक मतलाक दोसर पाँतिमे दुखक बदला यातना। अही गजलक दोसर शेरक पहिल पाँतिमे नाराक बदला जुमला। तेसर गजलक दोसर गजलक दोसर शेरक दोसर पाँति धधराक बदला ज्वलन। अही गजलक अंतिम शेरमे प्रयुक्त तन्वंग, आब एकर अर्थ जनताकेँ बुझबिऔ। फेर आगू गजलक दोसर शेरमे नजरि केर बदला दृष्टि, दसम गजलक दोसर शेरमे उन्यक जगह विपरीत। एगारहम गजलक मतलामे दुबिधाक जगह द्वैध। तेरहम गजलक तेसर शेरमे नेकदिली आ बदीक प्रयोग। तइसम गजलक अंतिम शेरमे भटरंगक बदला बदरंग। पचीसम गजलक तेसर शेरमे इजोरिआक बदला ज्योतसना। चौतीसम गजलक मतलामे दुख केर बदलामे पीड़-इत्यादि। ओना ऐ उदाहरणक अतिरिक्त हरेक गजलमे हिन्दी, उर्दू, संस्कृत आदि भाषाक तत्सम बहुल शब्दक ततेक ने प्रयोग भेल छैक जे गजलक मूल स्वर, भाव-भंगिमा, रसकेँ भरिगर बना देने छैक। तैपर वियोगीजी गर्व पूर्वक घोषणा केने छथि जे ओ ओइ परिवारक नै छथि जिनका संस्कारमे अभिजात शब्द भेटल हो। बिडंबना छोड़ि एकरा किछु नै कहल जा सकैए। जँ चालीसो गजलक भाषाकेँ धेआनसँ देखल जाए तँ हमरा हिसाबें वियोगीजी ऐ गजल सबहक मैथिली अनुवाद कए देथिन्ह तँ बेसी नीक हेतैक।

भाषासँ उतरि आब गजलक विचारपर आएल जाए। बेसी दूर नै जाए पड़त-तेसर गजलक अंतिम शेरसँ मामिला बुझबामे आबि जाएत। सोझे-सोझ ई शेर कहैए जे- लोककेँ अपन जयघोष करबामे देरी नै करबाक चाही आ काज केहनो करी चान-सुरूजक पाँतिमे अएबाक जोगाड़ बैसाबी। ओना हम एतए अवश्य कहब जे ई कोनो राजनीतिक विचार नै छैक जकर स्पष्टीकरण दए-वियोगीजी अपन पतिआ छोड़ा लेताह। ई विशुद्ध रूपे समाजिक विचार छैक आ ऐ विचारसँ समाजपर की नकारात्मक प्रभाव पड़लैक वा पड़तैक तकर अध्ययन अवश्य कएल जेबाक चाही। मुदा एहन नकारत्मक विचार ऐ संग्रहमे कम्मे अछि। संग्रहक किछु सकारात्मक विचार प्रस्तुत अछि। दसम गजल केर अवलोकन कएल जाउ। निश्चित रूपसँ वियोगीजी एकरा परिर्वतनीय विचार रखलाह अछि ई कहि जे-

देस हमर जागत अचक्र एना चलि ने सकत

हारि लिखब झण्डा के आदमीक जीत लिखब।

पाठकगण आजुक समएमे झण्डाक विपरीत गेनाइ सहज गप्प नै। तहिना चारिम गजलक तेसर शेरक पहिल पाँति- राम राज्यक स्थापना लेल भरत-लक्ष्मण झगड़ि रहला। कतेक सटीक व्यंग अछि से सभ गोटे बुझैत हेबैक। ओतै आजुक भ्रमोत्पादक सरकारपर तै दिनमे लिखल अड़तीसम गजलक मतलाक पहिल पाँति देखू-

राजनीति भटकल तँ डूबल मझधार जकाँ।

विचार संबंधी प्रस्तुत उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे सकारात्मक विचार बेसी अछि। मुदा कहबी तँ सुननहि हेबैक अपने जे एकैटा सड़ल माछ.....।

अस्तु आब ऐ गजल संग्रहक व्याकरण पक्षकेँ देखल जाए। ऐठाम ई स्पष्ट करब आवश्यक जे मैथिली गजल अखनो फरिच्छ भए कए नै आएल अछि जैसँ हम बहर (छंद) आदिपर विचार करब। तँए ऐठाम हम मात्र रदीफ आ काफियाक प्रयोगपर विचार करब। पाठकगण गजलमे रदीफ ओइ शब्द अथवा शब्द समूहकेँ कहल जाइ छैक जे गजलक मतलाक (गजलक पहिल शेरकेँ मतला कहल जाइत छैक।) दुनू पाँतिमे समान रूपसँ आबए आ तकरा बाद हरेक शेरक अंतिम पाँतिमे सेहो समान यपे रहए। तहिना काफिया ओइ वर्ण अथवा मात्राकेँ कहल जाइत जे रदीफसँ तुरंत पहिने आबैत हो जेना एकटा उदाहरण देखू- दूटा शब्द लिअ, पहिल भेल अनचिन्हार ओ दोसरमे अन्हार। आब मानि लिअ जे ई दुनू शब्द कोनो गजलक मतलामे रदीफक तुरंत बादमे अछि। आब जँ गौरसँ देखबै तँ भेटत जे दुनू शब्दक तुकान्त ‘‘र’’ छैक। तँ एकर मतलब जे ‘‘र’’ भेल काफिया (काफिया मतलब तुकान्त बूझू) तेनाहिते मात्राक काफिया सेहो होइतैक जेनाकि- राधा आ बाधा दुनू शब्द आ’क मात्रासँ खत्म होइत अछि तँए ऐमे आ’क मात्रा काफिया अछि। ‘‘एहि’’ आ ‘‘रहि’’ दुनूमे इ’क मात्राक काफिया अछि। अन्य मात्राक हाल एहने सन बूझू। तँ फेर चली ऐ संग्रहक व्याकरण पक्षपर- ऐ संग्रहक किछु गजलमे काफियाक गलत प्रयोग भेल छैक- उदाहरण लेल सातम गजलकेँ देखू। मतलाक शेरमे काफिया अछि ‘‘न’’ (भगवान आ सन्तान)। मुदा वियोगीजी आगू दोसर शेरमे काफिया ‘‘म’’ (गुमनाम) केँ लेलखिन्ह अछि जे सर्वथा अनुचित। तेनाहिते सताइसम गजलक उपरोक्त ‘‘म’’ काफिया बदलामे ‘‘न’’ काफियाक प्रयोग।

कुल मिला कए ई गजल संग्रह ओतेक प्रभावी नै अछि जतेक की शाइर कहैत छथि। हँ एतेक स्वीकार करबामे हमरा कोनो संकोच नै जे ई गजल संग्रह ओइ समएमे आएल जै समएमे गजलक मात्रा कम्मे छल। आ शाइर आ गजल संग्रह सेहो कम्मे जकाँ छल।

(ई आलोचना पहिने " गजलक साक्ष्य " केर नामें प्रकाशित छल)।

9

सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त

"सूर्यास्तसँ पहिने" ई नाम छन्हि राजेन्द्र विमल जीक गजल संग्रहक। ऐ संग्रहक भूमिका केर अंतिम भागमे विमल जी लिखै छथि जे ई मैथिलीक पहिल संग्रह अछि जाहिमे 100 (एक सए) गजल प्रस्तुत कएल गेल अछि। मुदा हमरा जनैत 1985मे प्रकाशित गजल संग्रह " लेखनी एक रंग अनेक " जे की रवीन्द्र नाथ ठाकुरकेँ छन्हि ताहिमे कुल 109टा गजल देल गेल छै आ संगे-संग कता सेहो छै। तखन विमल जीक ऐ पहिल सन घोषणाकेँ की मतलब ?

ई भए सकैए जे विमल जी एकरा नेपालीय मैथिलीकेँ संदर्भमे लिखने होथि मुदा तखन तँ आर गड़बड़ ..... कारण विमल जीक ऐ संग्रहमे कुल 4 (चारि) टा गजल एहन अछि जे की दोहराएक गेल छै। मतलब जे जँ शुद्ध रूपसँ देखी तँ ऐ संग्रहमे कुल 96टा गजल अछि। हमरा विमल जी एहन लोकसँ ई उम्मेद नै छल जे ओ " पहिल "केँ फेरमे पड़ि एहन काज करताह। इतिहासकेँ अपना फायदा लेल गलत करताह। आब नेपालक सुधि समीक्षक सभ कहताह जे की बात छै। हमर ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल छै। गजल संख्या 19 आ 20 एकै गजल अछि। 29 आ 30 एकै गजल अछि। 31 आ 33 एकै गजल अछि। तेनाहिते 56 आ 61 एकै गजल अछि।...

जँ गंभीरता पूर्वक पढ़ल जाए तँ राजेन्द्र विमल जीक कथित गजल संग्रह " सूर्यास्तसँ पहिने " मे बहुत रास एहन रचना भेटत जे की मात्र गीत अछि गजल नै। पता नहि चलि रहल अछि जे गीतकेँ गजल संग्रहमे कोन काज छै।.....

राजेन्द्र विमल जीक कथित गजल संग्रहमे बहुत रास गीत सभ सेहो अछि। तँ देखल जाए कोन-कोन गीत अछि---पृष्ठ संख्या--1,2,3,14,19,20,23,27,34,42,आ 47क दोसर कथित गजल गीत अछि। तेनाहिते पृष्ठ संख्या--4,7,8,9,10,11,16,18,29,31,32,36,39 पर कथित रचना बिना बहरक गजल भए सकैत छल मुदा लेखक ओकरा कविता बला ढ़ाँचामे देने छथि। आन कथित गजल सभ गजलक ढ़ाँचामे अछि तँए हम ई मानबा लेल बाध्य भए जाइत छी जे कविताक ढ़ाँचा बला सभ कविता अछि। कारण विमल जीकेँ कविताक ढ़ाँचा आ गजलक ढ़ाँचामे नीक जकाँ अंतर बूझल छन्हि। आ एकर प्रमाण ओ अपन कथित संग्रहमे सेहो देने छथि।

चूँकि ऐ आलोचनाक प्रारम्भिक भाग 2012क मध्यमे फेसबुकपर देने रही आ तइ क्रममे एहमर एही आलोचनापर किछु टिप्पणी आएल। ऐ टिप्पणीमे प्रेमर्षि जी एकरा प्रेसक गड़बड़ी कहलन्हि। चलू ओतए धरि ई बात मानल जा सकै छै.....मुदा गीत आ कविताकेँ गजल कहि पाठककेँ बेकूफ बनेबाक आ रेकार्ड बनेबाक सेहन्ता किनका रहल हेतन्हि। आचार्य राजेन्द्र विमल जीकेँ वा प्रेस

बलाकेँ..... तँए जँ कदाचित संख्या बला गड़बड़ी प्रेससँ भेल छै तैयो गीत आ कविता बला गड़बड़ी तँ विमले जीक छन्हि। दोसर गप्प जे मानि लिअ ई प्रेसक गड़बड़ी छै आ ऐ संग्रहक सभ रचना गजल अछि तैयो संदेहक घेरामे विमल जी छथि मात्र विमल जी नै मैथिली गजल (कथिते बला) संबंधी ज्ञान सेहो संदेहक घेरामे अछि कारण जखन 1985एमे 109 बला गजल संग्रह प्रकाशित भेलै... तखन विमल जीक घोषणा मात्र पहिल बला बेमारीक लक्षण अछि। तँ आब चलू कने फेसबुक परहँक ओइ बहस दिस जे की ऐ आलोचनापर जे की हमरा आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक भेल छल---(हलाँकि ई बहस ऐ ठाम हम ऐ द्वारे दए रहल छी जैसँ पाठक ई बुझथि जे मैथिलीमे आलोचना नै सहबाक जड़ि कते गँहीरमे गेल अछि)----------

Dhirendra Premarshi

अइ बातपर एम्हर बहस भऽ चुकल छै। प्रकाशकक गलतीक कारणे किछु गजलक पुनरावृत्ति भेल छै। मैथिलीमे ई बड भारी समस्या छै जे लेखनमे जतेक ध्यान देल जाइ छै तते प्रकाशनक क्रममे होबऽ वला काजमे नइ। जहाँतक इतिहासक जे बात अछि ताहि सन्दर्भमे शायद अहाँ जनैत हएब जे रवीन्द्रनाथ ठाकुरजीक पोथीमे गजल कत आ शायरी सेहो सम्मिलित छनि। नेपालक सन्दर्भमे पहिल सम्पूर्ण मैथिली गजल सङ्ग्रह अवश्य कहल जा सकैए। ओना मिश्रित संग्रहक रूपमे रामभरोस कापडि आ राजविराजक एक कोनो माझी सेहो गजलक पोथी बाहर कऽ चुकल छथि।

about an hour ago · Unlike · 1

Ashish Anchinhar कता आ शायरी छोड़ि कुल 109टा गजल देने छथिन्ह रवीन्द्रनाथ ठाकुर। प्रकाशक केर गलती भए सकै छै मुदा भूमिका तँ विमले जीक छन्हि।...

about an hour ago · Like

Ashish Anchinhar शायद अहाँ ईहो जनैत हएबै जे कता, रुबाइ आ अन्य शायरी विधा (खाली नज्म छोड़ि) गजलक अंतर्गत अबै छै।...

about an hour ago · Like

Dhirendra Premarshi

आशिषजी, अहाँ ओइ माध्यमसँ काज कऽ रहल छी जकर सम्पूर्ण नाथ, पगहा अहाँक हाथमे रहैए। मुदा छापा माध्यम एहन होइ छै जइमे अहाँक सभ कएल धएल पानि भऽ सकैत अछि जँ प्रेसमे काज कएनिहार किछु गडबड कऽ देलक तँ। भूमिका बाँकी सभ चीज छपि गेलाक बाद नइ भऽ सामान्यतया आरम्भेमे लिखल जाइ छै। विमल सर सएटा गजल आ तदनुरूप भूमिका लीखिकऽ छापऽ लेल देने रहखिन। प्रकाशनमे संलग्न व्यक्तिसभ मेहीँ आँखिएँ नहि देखि सकल हेथिन आ किछु गजलक पुनरावृत्ति भऽ गेल हेतै। अहाँक जानकारीक लेल कहि दी जे ई गलती सभसँ पहिने हमरा विमले सर देखौलनि। आब अहाँक कहब ई जे जखन अइ तरहेँ गलती भऽकऽ आबि गेलै तँ की विमल सर सभ किताबके जरा दितथिन? क्यो व्यक्ति जँ तकनिकी आ शारीरिक रूपेँ सभ कार्य स्वयं करबामे सक्षम नहि अछि तँ एकर मतलब ई नइ होइ छै जे ओकर कोनो एक बातकेँ लऽकऽ ओकरा लुलुआ देल जाए। अहाँक जानकारीक लेल इहो कहि दी जे विमल सरक दू सयसँ बेसी गजल जहिँतहिँ छिडिआएल पडल हेतनि। हँ, जँ अहाँके किछु कहबाके छल तँ ओइ पोथीक भूमिकाक सन्दर्भमे कहि सकैत छलियैक जे बहुत विद्वतापूर्णसन देखल जाइतहुँ पोथीमहक गजलसभसँ तादात्म्य स्थापित नहि कऽ पबैत अछि।

51 minutes ago · Unlike · 1

Ashish Anchinhar अहाँ एकरा गलत संदर्भमे लए रहल छिऐ। ई मात्र इतिहास शुद्धता लेल छै। व्यतिगत रूपसँ ऐमे हम किछु नै कहि सकैत छी।..

41 minutes ago · Like · 1

Dhirendra Premarshi अहाँके पल्लवक गजल अंक भेटल?

37 minutes ago · Unlike · 1

Dhirendra Premarshi जखन अहाँ 'प्रकाशक केर गलती भए सकै छै मुदा भूमिका तँ विमले जीक छन्हि।' लिखबै तँ ओकर आशय गलते लगै छै। अभियानीसभकेँ बहुतो बातक अन्तर्वस्तुकेँ सेहो बूझैत इतिहासक शुद्धिकरण करैत चलबाक चाही।

37 minutes ago · Unlike · 1

ऐ वार्तालापसँ एकटा गप्प ईहो निकलैए जे प्रेमर्षिजीकेँ गजल परम्पराक कोनो जानकारी नै छन्हि। अरबी-फारसी-उर्दूमे " दीवान " शब्दक प्रयोग कएल जाइत छै जैमे गजल, कता, रुबाइ, नज्म आदि

सभ रहै छै। जेना दिवाने गालिब (मने गालिब केर एहन संग्रह जैमे गजल, कता, रुबाइ, नज्म आदि संग्रहीत छै, तेनाहिते दीवाने मीर, दीवाने नासिख, आदि भेल। हँ, आधुनिक युगमे किछु उर्दूक गजलकार सभहँक एहनो दीवान अछि जैमे खाली गजल छै। मुदा तँए अहाँ ई कहि देबै जे नै खाली पोथीमे गजले रहबाक चाही तँ से कतौसँ उचित नै..... एकटा गप्प आर प्रेमर्षिजी विमलजीक समर्थनमे एते धरि कहै छथि जे.." क्यो व्यक्ति जँ तकनिकी आ शारीरिक रूपेँ सभ कार्य स्वयं करबामे सक्षम नहि अछि तँ एकर मतलब ई नइ होइ छै जे ओकर कोनो एक बातकेँ लऽकऽ ओकरा लुलुआ देल जाए। " आब ई देखू जे जँ ऐ अधारपर हम विमलजीकेँ जँ लुलुआ (आलोचनाकेँ हम लुलुएनाइ नै बूझै छी ई प्रेमर्षिजीक विचार छन्हि) नै सकै छी तँ फेर मात्र एकटा अधारपर प्रेमर्षिजी रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ इतिहाससँ बाहर किएक क' देलखिन्ह? ऐ प्रश्नक उत्तर हम मात्र भविष्यसँ चाहै छी।

ऐ वार्तालापकेँ कात करैत हमरा लोकनि फेर चली विमल जी पोथीपर।

विमलजी अपन पोथीमे गजलक परिभाषा, तत्व, बहर आदिक वर्णन केने छथि (मुदा अपूर्ण रूपसँ खास क' बहरक लेल)। ओना ई विवरण अनचिन्हार आखरपर 2009सँ प्रकाशित छै आ विमल जीक ई पोथी 2011मे आएल छन्हि। विमलजी स्वयं इंटरनेट ओ फेसबुकपर छथि। मुदा विमलजी द्वारा देल गेल विवरण पढ़लापर ई प्रश्न अबैत अछि जे पोथीक भित्तर देल गेल गजल सभमे ई बहर, तत्व आदि किएक नै अछि ? एकर बहुत रास कारण भ' सकैए मुदा हमरा बुझने सभसँ प्रमुख कारण छै जे मात्र विद्वता देखब' लेल ई विवरण कतौसँ सायास लेल गेल छै (मने ईंटा किनको, सीमेन्ट किनको आ घर बनल विधायक जीक)। तँए भूमिकामे देल गेल विवरण आ भित्तरक गजल सभमे दूर-दूर धरि ताल-मेल नै बैसैए।

ऐ पाँति धरि अबैत-अबैत अहाँ सभ बूझि गेल हेबै जे ऐ गजल संग्रहमे बहुत झोल-झाल छै। मात्र व्याकरणक दृष्टिएँ नै नैतिक दृष्टिकोणसँ सेहो। ओना जँ भावना आ व्याकरण ठीक रहैत तँ ऐ संग्रहक किछु गजल नीक बनि पड़ैत जेना की 53म गजल, 83म गजल आदि। किछु गजल नीक जकाँ नेपालक राजनीतिकेँ घेरने अछि तँ किछु गजल पूरा मैथिली समाजकेँ । भाव आ बिंब तँ प्रायः मैथिलीक हरेक लेखकक नीक रहैत छनि तँ हिनकर किए खराप हेतन्हि। हिनको भाव पक्ष नीक छन्हि।

कलंकित चान

(आलोचना)

"जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान" द्वारा बर्ख 2013 (दिस.मे) श्री राम भरोस कापड़ि "भ्रमर"जीक कथितजल संग्रह- "अन्हरियाक चान" प्रकाशित भेल अछि। पोथीक भूमिकामे भ्रमरजी स्वीकार करै छथि जे गजलक व्याकरणपर ओ गजल नै लिखने छथि संगे-संग ओ समीक्षककेँ सेहो हिदायत देने छथिन्ह जे ओ व्याकरणक तराजूपर ऐ गजल सभकेँ नै तौलतथि। एकर मने ई भेल जे भ्रमरजी अपने मानै छथि जे हुनक गजल "अजाद गजल " आ समीक्षक तँ अजाद गजलक समीक्षा करबाक लेल स्वतंत्र छथि। संगे-संग भ्रमरजी भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल कोनो प्रतिबंध नै लगेने छथि तँए समीक्षक भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल सेहो स्वतंत्र छथि।ओना भ्रमरजी गजलमे व्याकरणक मजूगत स्थितिसँ परिचित छथि आ तँए ओ अपन सीमाकेँ देखार केलाह जे की स्वागत योग्य गप्प अछि। तँ चलू शुरू करी भ्रमरजीक अजाद गजलक समीक्षा आ तकर बाद हिनकर भूमिकापर।

अजाद गजलक कान्सेप्ट---

जखन कोनो भाषामे कोनो खास विधाकेँ करीब 500-600 बर्ख भ' जाइत छै तखन ओइमे परिवर्तन जरूरी भ' जाइत छै। उर्दू गजलकेँ (जँ भारतीय फारसी गजलकेँ जोड़ि देखी तँ) करीब 500-600 बर्ख भेल छै तँए 1960-70केँ दशकमे उर्दूमे अजाद गजल आएल। एकर मतलब कहल गेलै जे गजलमे बहर कोनो जरूरी नै हँ काफिया भेनाइ आवश्यक अछि (बिना रदीफकेँ सेहो गजल होइ छै से देआन राखब जरूरी)। ओनाहुतो बिना काफियाकेँ गजल नै होइत छै से सभ जनै छथि। जँ ऐ अधारपर देखी तँ भ्रमरजी बहुत रास कथित गजल फेल भ' जाइत अछि मने भ्रमरजीक कथित अजाद गजल सेहो अजाद गजल कहबा योग्य नै अछि। ओना उर्दूमे आजाद गजल केर कानसेप्ट मात्र ५ सालमे खत्म भ' गेलै। किछु उदाहरण देखू--

पोथीक पहिल कथित अजाद गजलक पहिल दू पाँति एना अछि---

ई जनक केर नगरी अपन गाम थिक

ई मिथिला बैदेहीक अपन गाम थिक

मने काफिया गायब। जँ काफिया गाएब तँ तँ गजल नाम्ना विधे गाएब। खएर एहन-एहन दोष ऐ पोथीक गजल संख्या -4,5,6,9,12,14,20,22,23,24,28,29,32,33,34,35,36,39,41 मे भेटत। ओना आन गजलमे किछु ढ़ग तँ छै जकरा काफिया नै बल्कि तुकांत कहब बेसी समीचीन। ईहो मोन राखब जरूरी जे ऐ पोथीमे कुल 44टा गजल अछि।

जँ हम नेपालीय परिसरक हिसाबसँ ऐ पोथीकेँ देखी तँ हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नै जे राजेन्द्र विमल जीक गजलकेँ अजाद गजलक श्रेणीमे तँ राखल जा सकैए मुदा भ्रमरजीक गजल तँ अजादो गजलमे स्थान पेबाक योग्य नै अछि। सोंझ तरहें कही तँ भ्रमरजीक ऐ पोथीमे संकलित सभ रचना आन विधा तँ भ' सकैए मुदा गजल, कथित गजल वा अजाद गजल केखनो नै भ' सकैए।

मुदा जत' भ्रमरजी अपन गजल महँक दोष स्वीकार करबाक हिम्मति राखै छथि ओतए विमलजी अपन गलतीकेँ स्वीकार करबासँ हिचकै छथि।ई चारित्रिक अंतर दूनू गोटमे छनि से जिनगी भरि रहतनि तकर कोनो गारंटी हमरा लग नै अछि।

तँ आउ आब पोथीक भूमिकापर–

चूँकि व्याकरणपर हमरा नै जेबाक अछि तँ देखू भ्रमरजीक किछु बिंदु--

1) भ्रमरजी अपन भूमिकामे लिखै छथि जे " हमरा एखनो धरि पना नै अछि, हम कतेक गजल लिखने छी। साढ़े चारि दशकक साहित्यिक यात्रामे कतेको गजल लिखाएल हएत...."

यौजी सरकार, जखन अहाँहाँकेँ अपने गजलक संख्याक बारेमे नै बूझल अछि तखन घर-आँगन, स'र-समाज, देश-विदेशक आँकड़ाक संबंधमे अहाँकेँ की बूझल हएत। भ्रमरजीक उपरोक्त कथन मात्र दंभ भरबाक लेल अछि। मनुख मात्र सभ चीजक हिसाब-किताब रखैए। भ्रमरजी सेहो रखने हेता मुदा हिनका तँ अपना-आपकेँ सुपरमैन कहेबाक छनि तँ लगा देलखिन अज्ञात संख्याकेँ जोर जे हमरा अपन गजल संख्या तँ पते नै अछि मने एते लिखलहुँ जे.....

मोन पाड़ू आइसँ 30 बर्ख पहिने धरि जड़ल जुन्ना सन ऐंठल दू-चारि बिग्घा खेत बला सभ सेहो कहै छलै जे हमरा तँ अपन खेतो ठीकसँ नै देखल अछि। मिला लिअ भ्रमरजीक विचार।

२) ऐ पोथीमे सभसँ आपत्तिजनक बात ई अछि जे प्रस्तुत पोथीमे "बाल-गजल" तँ संकलित अछि मुदा बाल गजलक संदर्भमे कोनो चर्चा नै बेटैत अछि। ज्ञात हो कि मात्र 2012सँ मैथिली बाल गजल शब्दावली प्रचलित अछि। अनचिन्हार आखर ओ विदेहक संयुक्त प्रयासक प्रतिफलन अछि ई बाल गजल मुदा भ्रमर जी बाल गजलक संबंधमे कोनो चरचा नै केने छथि। जेना चरचा केलासँ छोट भ' जेता तेना। ओनाहुतो हम ऐ प्रसंगकेँ अनचिन्हार आखर ओ विदेहक लोकप्रियतासँ जोड़ि क' देखैत छी। ओना भ्रमरजी प्रस्तुत पोथीक बाल गजलकेँ तेना सेट केने छथि भूमिकाक संदर्भमे जेना बुझाइत हो जे ओ मिथिला-मिहिरेक जमानासँ बाल गजल लिखैत होथि।

इतिहासकेँ भ्रमित करैत ई पोथी केक सफल हएत से कहब मोश्किल। हँ एतेक कहब कोनो मोश्किल नै जे ई पोथी मात्र राजेन्द्र विमलजीक प्रतिद्वंदितामे निकलल अछि। आ मात्र ऐ दुआरे जे नेपालमे विमल जीक बाद हमरे नाम हुअए। ओना हमरा ई कहबामे कोनो दिक्कत नै जे विमलजीक पोथी नीक छनि भ्रमरजीक अपेक्षामे।

जे पाठककेँ ई पोथी पढ़बाक इच्छा हो से ऐ लिंकपर आबि क' पढ़ि सकैत छथि--
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/Bhramar_Gajal.pdf?attredirects=0&d=1

तकरा बाद भ्रमरजीकेँ साहसकेँ धन्यवाद दिऔन कारण ओ स्वयं ऐ पोथीक पी.डी.एफ उपल्बध करेने छथि।

11

मैथिली गजलक वर्तमान

अनचिन्हार आखरक जन्मसँ पहिने (इंटरनेट पर) किछु गजलकार, समालोचक सभपर आरोप लगबैत छथि जे ओ गजलकेँ बुझि नै सकलाह। मुदा हमरा बुझने आलोचक सही छथि आ गजलकार गलत। कारण मैथिलीक किछु तथाकथित गजलकार सभ अपने गजलकेँ नै बूझि सकलाह। जकर परिणति अबूझ शेर सबहक रूपमे भेल। आ स्वाभाविक छै जे एहन-एहन गजलकेँ आलोचक नकारबे करतथि।

वर्तमान गजल-- अ.आ. (अनचिन्हार आखर) क बाद गजल अबूझ नै रहल। से हम किछु शेरक उदाहरणसँ देब–

1)

कोनो राजनीतिक पार्टी हो सभहँक स्थितिकेँ परखैत मिहिर झा कहैत छथि---

छोड़ि दिऔ हाथ देखिऔ केम्हर जाइ छै

जेतै तँ ओ उम्हरे सब जेम्हर खाइ छै

कुन्दन कुमार कर्णजी कहै छथि--

नेताक भेषमें सभ कामचोर छैक

तामससँ लोक देशक तेँ अघोर छैक

मुदा एकर परिणाम की भेलै सेहो कहै छथि कुन्दन जी--

चुल्हा गरीबके दिन राति छैक बन्द

जे छैक भ्रष्ट घर ओकर इजोर छैक

ककरा करत भरोसा आम लोक आब

निच्चा अकान उप्पर घूसखोर छैक

आ जखन सभ मसिऔते छै तइकेँ कुन्दन जी एना कहै छथि--

आलोचना करत 'कुन्दन' कतेक आर

जे चोर ओकरे मुँह एत जोर छैक

ओमप्रकाश जी राजनीतिकेँ एना देखै छथि--

टाल लागल लहासक खरिहानमे

गाम ककरो उजडलै फेरसँ किए

बहुत मेहीं रूपसँ ओमप्रकाश जी आजुक राजनीति केर वास्तिविकता आ परिणामकेँ एकै शेरमे देखा गेल छथि। खेल भ' रहल छै मुदा सभ अकान बनल अछि आ ओमप्रकाश जी टाहि द' रहल छथि--

-

निर्जीव भेल बस्ती सगर सूतल

सुतनाइ यैह सबहक जान लेतै

आ टाहिए देब असल गजलकारक धर्म थिक। मुदा जँ टाहिए देबए बला चोर हो त?

त एहन परिस्थिति बेसी दिन बरदास्त नै कएल जा सकैए आ तँए ओम प्रकाश जी कहैत छथि---

मान-अपमान दुनू भेटै छै, ई मायाक थीक लीला,

अन्याय कँ सदिखन दी मोचाड़ि, यैह थीक जिनगी।

श्रीमती इरा मल्लिक जी अइ स्थितिकँ एना क' देखै छथि--

बाट जाम होय कि मगज विकास रुकबे करत

बेइमान हो नेता ते, देश के नैया डूबबे करत

एही स्थितिपर स्वाती लाल जीक विचार देखू--

समाज केना सहि रहल छै तालिबानी पाएर पसारैत देखलौं

निर्दोष सब के खून स ओकरा अपन पियास बुझाबैत देखलौं

आन'क घर के "भगत" शहीद होय देश राग हम गाबैत देखलौं

शहीद सब के लास पर चढि क' ओकरा कुर्सी पाबैत देखलौं

फेर स्वाती जी ऐ स्वरकँ अकानै छथि--

सीता के गुण गान करै छि केलहुँ हुनके कात किनार

चिर हरण देखैत रहलौं बैसल रहलौं भऽ लाचार

बाट चौबटिया जत्तै देखू आदर्श के छि प्रतिरुप अहां

स्त्री जाती सँ धर्म अपेक्षित कर्म करै त होय प्रहार

2)

विस्थापित भ' क' जीब कठिन। विस्थापित लोकक दुख जगदानंद झा मनु जीक स्थायी दुख छनि–

सोन सनक घर-आँगन, स्वर्ग सन हमर परिवार

छोड़ि एलहुँ देस अपन दू-चारि टकाक बेपार पर

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

कोना अहाँकेँ घुरि कहब आबै लेल

बड़ दूर गेलहुँ टाका कमाबै लेल

3) एही समाजक एकटा आर पहलू पर उमेश मंडल कहैत छथि---

कियो ककरो नहि देखैए ऐ समाजमे

मोने मन झगड़ाइए चलू घुरि चली

4) आधुनिक मीडिआपर क्रूरतम प्रहार करैत मैथिलीक दोसर मुदा सक्षम महिला गजलकार श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी कहैत छथि---

पापक पराकाष्ठामे जन्मै श्रीकृष्ण

मीडिआ छथि जागल कंसक भेषमे

आ एतबहि पर नै रुकैत छथि। आ फेरो कहैत छथि---

सोसल साइट पर करैत छै सेंसर के दाबी रे भाय

अभिव्यक्तिक स्वच्छंद साँढ़ मुँह बन्हबै की जाबी रे भाय

5) प्रेम आ प्रेम जनित वेदना गजलक प्रमुख अंग थिक। बिना एकरा गजल झुझुआन लागत। वर्तमान गजलमे इहो भेटत। राजीव रंजन मिश्रजी कहै छथि–

चान राति सन सजल मुस्कान हुनक मारुक

जान प्राण हति रहल मुस्कान हुनक मारुक

आ इएह प्रेम जँ परिपक्व भऽ जाए तखन त्रिपुरारी कुमार शर्मा जीक शेर जन्मैए---

आँखि मिला कऽ हमरा सँ राह पकड़ लेलि अहाँS

कोना कटै अछि दिन आब रचना गवाह अछि

हमर मिहिर झा जीकेँ बूझल छन्हि जे ई वेदना किएक छै तँए ओ कहैत छथि--

हमरा अहाँ तोड़लहुँ सपना बुझि कऽ

हमरा अहाँ छोडलहुँ अपना बुझि कऽ

मुदा एतबो भेलाक बादो मैथिली ओ भाषा थिक जाहिमे विद्यापति सन कवि भेलाह। विद्यापति आशावादक सभसँ बड़का कवि छथि। आ हमर ओम प्रकाश जी एही आशाकेँ पकड़ि कहैत छथि---

झाँपै लेल भसियैल जिनगीक टूटल धरातल,

सपनाक नबका टाट भरि दिन बुनैत रहै छी।

अमित मिश्रा जी कहै छथि--

तरेगण लाख छै तैयौ नगर अन्हार रहिते छै

बरू छै भीड़ दुनियाँमे मनुख एसगर चलिते छै

आशा आ संघर्ष एक दोसराक पूरक छै--- तँए कुन्दन कुमार कर्ण कहै छथि--

बुझि संघर्ष जियबै जखन

जिनगी शान अभिमान छी

दार्शनिकता गजल स्थायी भाव छै--- हम ऐ पक्षकेँ राजीव रंजन मिश्र जीक शेरसँ देखाएब--

ऐ उदास मोनक हाल के बुझत

ओलि सभकेँ सभ सभतरि सधा रहल

चंदन झा बिल्कुल नव भावमे ऐ दार्शनिकताकेँ अकानै छथि--

नैनक काजर पर मोहित छै सगरो जगत

जड़ैत डिबियाकेर मोनक मरम के बुझत ?

जँ अहाँ मैथिल छी ताहूमे साहित्यकार आ जँ बाढ़िक दर्द नै भेल तँ अहाँक मोजर सुन्ना। मुदा गजल ऐ दर्द के नीक जकाव देखर केलक आ राजीव रंजन मिश्रजीक अवाजमे बाजि उठल---

पूजल देवी सरिस मानि लोक धरि कपार

कहियो कोशी त' कहियो बलान मारि गेल

साम्प्रदायिकता लेल राजीव रंजन मिश्र जीक बयान छनि--

नै राम रहीमक झोक रहय

नै वेद कुरानक टोक चलय

जँ गप्प मिथिला आंदोलन हुअए तँ गजल ओहूमे पाछू नै हटल। आगू बढ़ि पंकज चौधरी नवल श्री कहै छथि--

मैथिली भाषा अपन अछि

मैथिलक बड़ पैघ तागत

एकता मैथिल जँ राखब

सुतल मिथिला फेर जागत

Xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

पकडू रेल चलू दिल्ली

भरबै जेल चलू दिल्ली

धरना देब करब अनशन

मिथिला लेल चलू दिल्ली

क्रांतिक धार "नवल" बहलै

लड़बा लेल चलू दिल्ली

गजल सदिखन अजगुत गप्पकेँ पकड़ैत छै जकरा गजलक भाषामे उक्ति-वैचित्रय कहल जाइत छै तँ देखू किछु उक्ति-वैचित्रय--

जीवनके आशा बदलल

प्रेमक परिभाषा बदलल

बदलल समदाउन सोहर

अछि बारहमासा बदलल

(जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल)

आब एही तेवरकेँ विजयनाथजीक भाषामे देखू---

अमरता विषय वस्तु पुरषार्थपूरक

क्रिया प्रकिया पथ सुपथ भेल कण कण

बहल जा रहल नद न भेटल कहाँ हद

हृदय भेल अछि तूर मद मोह तूरल

मुदा जगदीश प्रसाद मंडलजीमे ई उक्ति-वैचित्रय नै अछि। मंडलजी भारतीय ग्रामीणक यथार्थकेँ नीक जकाँ भोगने छथि आ तकर अर्थव्यवस्थाकेँ देखैत कहै छथि--

अहाँ किच्छो करब किछु नै चलत ऐठाँ

बहुत कठिनाह छै पेटक भरन सजनी

केखनो काल क' मंडलजीक सरल भाषा तेहन कमाल देखबैए जे लोक सोचबापर विवश भ' जाइत अछि--

पानि सन हम बहि गेल छी

दूध सन उधिआएल अछि

कुल मिला मैथिली गजल पूरा-पूरी विकसित भ' गेल अछि आ ई कोनो भावकेँ व्यक्त करबामे समर्थ अछि (ऐ लेखमे मात्र हम गजलक उदाहरण देलहुँ अछि। बाल गजल आ भक्ति गजल बाँकिए अछि।)। जकर बानगी उपरक उदाहरण सभमे देखल जा सकैए। मैथिली गजलक भविष्य पर हमर कोनो टिप्पणी नै रहत कारण हम कोनो ज्योतिषी नै छी। आ अतीतो पर नै कहब कारण ई सभकेँ बूझल छैक। ओना मंजर सुलेमानक आलेखक बाद मैथिली गजल निश्चित रूपे पाछाँ गेल (जीवन झासँ पाछाँ) जे स्वागत योग्य अछि।